६९४८ - 202

अथ मदना भक्त चरितं । दोहा । अतिविचित्र मा
नस हरन दलन सकल भ्रमभीन । भक्तिमहा
नम करहुं अब कथन भक्तिजनअधीन । चौपाई
भयो मलेछ वेस उनपेमा । मदना नाम भक्त ज
गमन्ना । पूर्वजनम उजकुल उपजाया । वरजि
न धरम करम गतदाया । पेमजन इक शालिग्रा
मा । अनजन करहिं भक्त अभिरामा । धनहूडी
करलोभ विचारी । मंहा मलेछ काहू अतिहारी

ए० भ० १

रह्यासदेव ग्रमक विकेई । दीन्योविप्र विविधधन
नेई । विपुल वरष ग्रसतनाह विहायो । तहितेंवि
न नविप्रवरपायो । करत सुमर्ण अंत धनतेह
सतवसभयो विप्रतजिदेहू । होतकरम वंधन
वसनाई । तांकर सदन यमन देहपाई । सोग्र
सयनी ग्रसघ विकेई । मंजुल रूप वंत सुतले
ई । दिन दिन करत नेह नवलालन । लागपोषी
ति रीति जुतपालन । धरयोनाम सदना सुभत

वहीं । भयो बरष द्वादस करजवहीं । पूर्बजनम
कर सुजन सेवा । भयो उदय नहिं भगवनदेवा
शालिग्रामसिला मनभाई । अकस्मात पथ का
ननपाई । शटक प्रमाण ललित जियजानी ।
लावा मदन हरष सुखमानी । तुलाधरत इ
क ओर उमंगा । विक्रय करत अमुष नहिं संगा
अधिक न्यून सन एक समाना । तासु प्रभाव
विदन प्रसज्जाना । आपुकरमहिं सादिविता

१०
भ०
२

सा।भक्तन श्रीवदीनो धरिपासा।जननिजनक वो
घवसमुदाई।सतवसभये कालगतिपाई।नवस
नेत्र सवकरवितलीना।वारुणिमत्त मनहूमद
कीना।तहिपुर जगननाथ दरसाये।समघप
क वैस्नवजनआये।दोहा।मिलाहिनहित एक
नव भ्रमत सदन नहिआव।अमघनला धनशि
लाकल देविहगन पकनाव।।१।टीका।नाभा
दासकहतेहैं किहेसंतो अव और वडाअदभुत

२

मनके हरनेवाला और संपूर्ण भयभ्रमके नासक
रनेवाला भक्तीका सुंदर महात्मजोहै सोभक्ती
प्रीतीसे आपके आगे कुछ गायनकरताहूं एकस
दना नामकरके जगतमें उजागर भक्त मलेछ
वंसविषैं उतपन्नहोताभया सोपहलाजनम ब्रा
ह्मणकीकुलविषैं पायकर अपने धर्म और क
र्मसे भूलाहूआथा परंतू भक्तीभावसे व्रतथारक
र केवल एकशालियाम भगवानका भजनक

१०
भ.
३

रताथा और धनकी अधिकताके लिये एक कोई
महां मलेक्ककसाई देखकर कि जो सदैव मांसहीं
बेचता रहताथा तिसको ब्याजके लोभसे बहुतसा
धनदेदेताभया इसप्रकार तिसको कितनेहीं व
र्षवतीत होयगये तिसमलेक्कसें कुक्क धन प्राप्त
नहीं करसका तबवे ब्राह्मण अपनेधनको स्मर
रता स्मरताही अंतशरीरको त्यागकर कालके
वशहोयगया और कर्मबंधनके अनुसारतिसी

३

मलेछके घरमै आयकर जन्मधारन करलेनाम
या लववैमांसके वेचनेवाला मलेछकसाईजोथा
सो ऐसे रूपवंत पुत्रको पायकर दिनदिन वडेहि
तप्यारसे तिसकी पालना करनेलगा औरनाम
तिसका सदना रावता भया जबवे वारावरषका
होयगया तब पूर्वजन्मकी तिसकीभक्ती और
भगवानका भजन सेवनजोथा सो आय करके
उदय होजाता भया अकस्मातनहीं वणसे एकशा

१० लिग्रामभगवानकी मनोहरशिलाजोथी सोति
भ० सको मिलजातीभई सो पांचसेरी जो वहीहोतीहै
४ तिसके वरोवर जानकरवडे आनंद सखसे घरमें
लेआया तव तला अर्थात तराजूमे एकपासे धर
कर और दूसरेपासे मांसडालकर तिसकेसाथ
तोल तोलकर वेचनेलगा और वेशिला अधिक
सन अर्थात चार वाथकेसाथ एकसमान वो
वरहीं रहतीथी इह तिसका गुण और प्रभावस

करथा आपमदनाने हिंसादि जीव घातका कर्म
नोहै सो त्यागदिया हूआथा इस पापकी फासी
अपने नोकर चाकरोंके गलेमें पायदावोधीज
व तिसके मातापिता और बांधवजन सब का
लके वशहोयगाये तब तिन सबका धनलेकर
जैसे कोई मदपान करनेसे मस्तहोयजाताहै
तैसे धनके मदमें उनमत्तहोयगया और अ
पनी इछाके अनुसार रहनेलगा किसीह

१० मरेका सिरपर कुछभयनहींथा तब एक स
भ० मयजगननाथ स्वामीके यात्रू संतजोथे सो तिस
५ नगरमै आयप्राप्तभये तिनमैसे एकसंत भि
ताटिन करता करता दैवयोगसे सदनाकेघर
परचलाआया तबतहां मांसकेतोलनेवाले नरा
न्मै वैषालिग्राम भगवान की मनोहरशि
ला देखकर हृदयमै मनमे पछतावनेलगा
औरवडे अचरनको प्राप्तहोय गया ।। १ ।।

५

चौपाई । बिकलइ बिन चिन संत उचारा । इहनउ
चिन कछु करम नमारा । कवहूं कि कृपा सहि
त इहदेहौ । शिलामोहि ग्रासिष हमलेहौ । जव
ग्रस संत कथन मखु कीनयो । शिलानरतन स
हनानहिदीन्या । मानहुं सकल भवनविनपाई ।
निजसमान लावाहरखाई । पचगाव्यादि सनानक
ह्रावा । देनकीन भोजन मनभावा । हविनैवेद
भक्तिजनलाई । वहुरिग्राप भोजन सवपाई ।

ए॰ भ॰ ६ भयेनिरवननिद्रा समुदाई। तवभगवान भक्तहितसु
खदाई। धरिसरूप वैस्नव निसिमाहीं। दीन्होस्व
पन संत जनकाहीं। तिसकि कठिन मुख वचन
अलावा। अरे मूढ नहितें मोहिलावा। नहोदेहुत
फ वेग उठाई। देखहु नतर प्रातसमुदाई। होहिं
विदत गति कवन तमारी। तवसमाज सबदेहु
संहारी। असप्रकार जवभगवनभाखा। स्वपन
जानि कछु हृदय नराखा। दीननाथ तव वहुरि ६

वखाना। उभौ संत मानस अकुलाना। सिष कहं
बोलि वदन समुझावा। वहा श्रमकजे सदन सु
हावा। तहां जाय संजत सनमाना। इहनव शिला
देहु भगवाना। सिष सासन गुरुवर इनपाई। च
लेलेलेन प्रभु सिला सुहाई। तिनमन जाय कथन
सव कीना। गुरु कहं जथा स्वपन निसि दीना। इ
हहमार पूजन सुईकारा। करन न देव हरन म
हिभारा। इनकहं श्रमउव नला नवजोई। लागी

१० भ॰ ८

ललित सुखद प्रियसोई। फूलनतास देवमनमा
ना। इनकर पद्द सनातनबाना। जवजव रामकृस
भैछैया। नवनवरही जलावतिमैया। सोऊदेवसु
खमानिसहाये। ईहांआयघनव नलाफुलाये। अस
प्रकारसिषवदन उचारी। दीनीसिला सुभगामन
हारी। जवअस सन्यो कथनसिषवदना। उठ्यो
व जागसोवतनँ सदना। ज्ञानभान जनहृदयप्रका
स्यो। मतसरकुमति उलक तम नास्यो॥ ८

भूषण वसन सदन वित्तमेहू। लगेपे विभक्तकर नसबनेहू। दोहा। दीनजननकहं देन सव प्राण दीनवनहोय। तिन संतन मन लागि भ्रम चलेपा सदन सब खोय। १। टीका। तव श्रमसे व्याकुल और चित्तसे दुखी होयकर संत कहनेलगा कि हो भाई तुमको इह करमयोग्य नहीं है कदाचि त दयाकरके इह हमारे नगरमैं शिलाजोहै सो मेरेको देदेवो तो मैं तुमको प्रसन्न होयकर

१०
भ॰
८

आसीरवाददेताहूं इसप्रकार जब संतने कहा न
व सदना ततकाल वे शिला तिसको देदेताभया
संतमानो संपूर्ण भवनोंकी संपती पायकर आ
नंदमै मगण भयाहूआ आपने संत समाजमे च
लाआया तबतिस शिलाकोदेखकर सबसंत प्र
सन्नभये और तरत पंचगव्यादि सनानजोहै सो
करायकर पूजन किया फिर भोजन बनायक
र और शालिग्राम भगवानको भक्ती प्रीतीसे नैवे ८

8

दलगायकर पीछे आपभी भोजन पावतेभये तिस
तें उपरांत अपने आसन परसुखपूर्वक सवसोय
गये तब आधीरातके समय भगवान कृपानिधा
न वैसवरूप धारकर और आयकर बडेकोपके
क्रूरवचनोंसे तिस संतको स्वपनेमें कहनेलगे
कि अरे मूरख तुम जहांसे मेरेकोल्याये हो तहां हीं
अब शीघ्र पहुंचायदेवो नहींतो आनाकालहो
ने कलकोदेखना किनमारी कैसी दशाहोवेगी

१ भ ८

मैनमोवेसंघ्रणी समाजका नाश करदेउंगा इसप्र
कार यद्यपि भगवानने कहा तथापि स्वपनजान
कर तिससंतने कुछ हृदयमे नहीं राखा हीन वं
धूने फिर भलीप्रकार विनायकरकहा तबतोभ
यसें व्याकुलभयाहूआ वेसंत प्रातहोतेही उठवै
ठाहूआ ओर अपने शिष्यको बुलायकर समझाय
श्र देताभया किँमुक अस्थानपर वे मांसवेचनेवाले
मलेछका घरजोहै तुम इस भगवानकी शिलाको

तहांलेजावो ओर भलीप्रकार दिखाय समझाय
कर संनमान पूर्वक तिसको देदेवो तबवे शिष्य
गुरुकी आज्ञा पायकर ओर शालिग्राम भगवान
की शिला लेकर ततकालही चलपडे तहांजा
यकर तिसकेसाथ जिसप्रकार गुरुजीको स्व
प्न भयाथा सो सब वृतांत सुनायदेता भया औ
र फिर कहनेलगा कि इहभूमीका भारहरने
वाले भगवान हमारा रजन सेवन सईकार

नहींकरनेहैं इनकोतो तमारी इह तला अर्थात
नराग जोहै सो मनकोभावना और पारालग
नाहै जिसविषे फूलनेका आनंदजोहै दीनवंध
ने सोई सुखदायकमानलियाहै क्योंकि इनको
सनातनकी इहवाण चली आईहै कि जबजब
मनुष्यवालरूप अवतार होतेरहेहैं तबतब प्रे
मधीनोसे मातोजोहै सो भंगऊपर फूलावनीरही
है जिसतें दीनानाथ सोई सुखमानकर ईहांन

मारीनलामे फूलनेका आनंद लेतेहैं इसप्रकार
साधुने कथन करकरके मनोहर भगवानकी
शिला जोथी सोतिसको देदेई ऐसे जबतिसके
मुखसें प्रसंगसुना तब सदना जो अज्ञाननिद्रामें
सोया हुआथा ततकालही जागउठा मानो ज्ञानका
सूरज हृदयमें प्रकाशमान होयगया और जड़ता
कुमतीरूपी उल्लू और अंधेराजोथा सो सब ना
सको प्राप्त होजाताभया तिसी समय घरके म

१०॥ षण वस्त्रधन इत्यादि सब अतिथी साथ ब्राह्मण औ
भ० र दीन जनों कोदे दिलाकर आप तिरथनों के स्ना
॥ न दीन होयकर तिन संतों के साथ हीं संपूर्ण हाव
को त्यागकरके चलपड़ता भया । ५ । चौपाई । अस प्र
कार संतनवत भययो । मारग चलत काहू थल ग
ययो । तहां भक्त भिला तिन हेतू । गयो ग्राम इक धनी
न केतू । तथा कुल सनन असवानी । जवनी एक
मान रतिनहानी । तासु विलोकि रूप अनुरागी । व ॥

दनवचन मरड भाषनलागी। अहोसंतनमुझा नवनी
की। लगीमोहि मंजल पियजीकी। अवनजाहु तजि
मोर अगारा। इहांकवि रहिन होहिंनमारा। भूरिह्
य नव भोगन जोगू। होहु प्रसन्न विगन उरसे
ग। करमवचन मन मे नियतोरी। नवइह कहु
काम फुरमोरी। सदनाहुनत वचन अससासा।
देनविदत जन नरक निवासा। बोल्योइह अन
थ कसवानी। मानप्रकट नव वदनबखानी

१०
भ०
१२

सखिसमहु संपति धनधामा। हृदयमोर कछु
नाहिनकामा। तबतिन पति संजुत अनुरागी।
वसहु सदन अस उरमतित्यागी। हिनजन वच
न सुनत असनेहा। भईविराम नहिन अगगेहा
नव सदना सखि कुसल उवारी। चलो सदन तहि
वहिर सियारी। नवकोमौ विनत उरभामा। रा
खेहुं कवन यतन इहिधामा। पतिभय प्रवलस
कुचउरपही। तोते हनन उविन अवनेही ॥

अस बिचारि पापनि हतभागी। बिलपवन पतनि
यरम सबत्यागी। खडगलेन करसो बनजाई। ति
समति काटि सीस पतिल्याई। ताहि सेखाय बद
न अस बरनी। देखहु रासि कमोर कलकरनी। मे
नमार हित मानसमानी। डासोकाटि सीसपति
साक्षि पानी। निरभय बसहु सदन डरखोई। अ
बनमार मन बांछित होई। सदना सुनत उरखि
न अकुलाई। हाहाकरि माख चल्यापराई। दोहा

१० जो प्रथमति अपराधविन हमो प्राणपतिपहू ।
भ० सो निश्चय मम वचन कर पापनि कवन संदेहु ॥ १
१३ टीका। इसप्रकार सदना जो है सो संतों के समान
ही संत होयकर जाता जाता किसी नगर मैं जा
य प्रापत भया तहां भगवान को स्मरना हूआ
मिला दिन के लिये नगर मै किसी धनी के घर
पर जाय स्थित भया तब तिस के मुख मे राधा
कृष्ण नाम को श्रवण कर कर और तिस की
१३

मनोहरमुद्राको देखकर रतीजो कामदेवकी स्त्रीहै
तिसके रूपको लजादेनेवाली एकस्त्री वाहरआय
करके बडे प्रीती प्रेमकी भरीहुई कोमलवाणीसे
कहनेलगी किहे संत तेरी सुंदर मूरतीजोहै सोमेरे
चित्तको प्रसन्न करके प्यारी लगीहै तांते तुम दया
करके अब ईहांमेरे घरमेंही वासकरो तुमारा सर्व
प्रकार करके हितही होवेगा मेरे घरमे तुमारे भो
गनेकेलिये बहुत द्रव्यहै तू आनंदमे मगण हो

भै. १८ और हृदयकी चिंता शोककोत्याग हे संत मै मन
वचन काया करके तेरी सीहूं तेइसमेरे मनोरथको
सफलकर इस प्रकारतिस भामनीका कथन
किजो मतदन नरकके निवास देनेवालाथा सुनक
रके मदनाकहनेलगा किहेमाई तैने इह कैसा
अनर्थ वचन मुखसे प्रकट उचारन कियाहे मेरे
कोतो धनधाम सुखसंपती इत्यादिकी हृदयमै
कुछइछानहीं हे तं आनंदपूर्वक अपने पतीके १८

सहित घरमै निवास कर ग्रौर इसउदरबुद्धीको हृ
दयसे त्यागा ग्रेसे हितकेभरेहूये वचनोसे यद्यपि
सदना भक्तने वारंवार कथनकिया तद्यपि सोपा
पकी खानी ग्रपने हठको नही त्यागती भई तब
हसत हसत रटनाहूग्रा सदनाजोहै सो तिसकेघ
रसे वाहर निकलग्राया तिसग्रधमनीने हृदय
मे विचारकिया कि ग्रब इसको कौन यतनसे
घरमैराखूं ग्रंतको इहाविचारकिया कि इसके

१०
भै.
१५

हृदयमै मेरेपतीका अंतसे करके भय संकोचहै
नोते अब पतीका मारदेना उचितहै ऐसेविचारक
र अभागन पापकीनिधी अपने स्त्री धर्मको त्रिए
वत तोडकर और हाथमे तलवार धारकर कोप
मे मग्नभई हुई जाय करके तरनपतीका सीसका
टलियाई और मदनाको दिखाकर कहनेलगी
किहे रसिक सुंदर इहदेखो मेरीकैसी करनीहै
जोतुमारे हत प्रीतीकेलिये मैनेखड्गासे अपने १५

पतीका सीसकाट डालाहै अवतनमहे प्यारे निरभ
य होयकरके ईहां मेरे घरमें वासकरो नमारीमन
वांछित कामना सफल होयगईहै इसप्रकार ति
स पापपनीके मरवेसे उरवचन सुन करके सदना
जोहै सो व्याकुल होयकर हाहाशबद करता हुआ
भागचला और कहनेलगा किदेखो नो इसदुष्टनी
ने अपराधके विनाही हथा अपने प्राणपतीको
मारडालाहै तो कहोकि इहपापनी मेरेसाथ क्या

१" भं. १६

भलाईकरेगी अर्थात मेरेमार देने मैंभी इसकाकौ
न संदेहहै ।१। चौपाई । असकहि चल्यो भीतवस
भागी । देखि प्रथम नहिं पाछिललागी । ऊंचेस्वररो
वति रिसकाई । सामाजिक जनलीन बुलाई । सव
कर भनन पाप घट चरनी । देखहु विदत दुष्ट क
र करनी । सोवत मदन चोर पतिमारा । असप्रका
र जवनाम उचारा । एकहि भक्त लोगन तिसकासो
पटकर वांधि विविध विधि मारो । तपपे लायक १६

रमउरबासा। धनक बधन सब बदन प्रकासा। ह
न्यो नभूप साधु नियजानी। दीननदेश छिदन प
टपानी। नव चोअल युगल करनासा। कै दिनब
नगर बहिर निकासा। पूर्वकरम फल हृदय विचा
री। तिन संतन मन चल्योसिधारी। यद्यपि करहिं
संत विसकारा। तदपि रहहिं मौन उरधारा। छि
न्न हसत भिदा टिन करमा। करत करत प्रसम
कैसधरमा। सुमरत कुसल जनन सुखदाया॥

१ भ॰ १८ जगननाथ मंजल पुरि आया। नव ग्रम स्वपन पु
जारिनकांही जगननाथ दीनो तिसि मांही। कि
नहसन इकसंत सुहावा। संतन संगमोर पुरस्रा
17 वा। तांकर दोलाहफ्फ कराई। नवल्पावहु मम स
नमखेजाई। देखिस्वपन सुजिक हरखाये। खोज
तछिन्न हसन फिगआये। प्रभसासन सवदीन
सुनाई। दोलाहफ्फ होहु नवभाई। विनय वदन
सदना नवकीना। मैन योग्य इहि वाहनदीना। १८

दरसन हित भगवान सुखदाई। पटचर चलहुं सी
सबल भाई। नवप्रजिक हठ कीन अपारा। भनत
अंत सदना जनहारा। जोरि जुगल निज दंड सहा
ये। बार बार चरनन सिर नाये। मोहि अनवित न
महो बड भागी। इह लघुता निमस कहूं न त्यागी।
दोहा। अस प्रकार जब देउ जग जोरि विनय नहि
18 कीन। तब उपजे हरि कृपा तें कर वर जुगल न
4. 6.. वीन। भक्ति प्रभाव विलोकि अस लोक सकल वि

१० समाय। नव सदना रतिजत भवन जगननाथ प्रभ
भं० आय। बार बार करि देखत कछुक दिवस बसि
१८ ताहिं। पनि आवा हृजमे रटत कृस कृस मनमा
हिं। बिनु आजास न जिकाय तहे भक्ति प्रमाद प्र
वीन। मनिस्वर दुरलभ ललित गति कृस कृपा
नैलीन।५। टीका। ऐसे कथन कर कर भयके
वशभयाहुआ तहांसे भागचला तब वेश्याधमनी
देखकर तिसके पीछेही लागचली जब देखा

कि इह नहीं रुकता तव ऊंचीस्वरसे हाहाकर कर
रोवने लगपड़ी तिसकारुदन सुनकर पड़ोसी
लोग धावते चलेआये पापकीखानी तिनको कै
सा अनर्थ सुनावतीभई कि भैयादेखो इसडुष्ट
ने वडाघोर अपराध कियाहै धनके लालचसेचो
र घातीने घरमें सोयाहुया मेरापतीमोरया सो मा
रडालाहै अबक्याकरूं किसकी शरणकोजाऊं
जब तिस मंदने ऐसा अनर्थ सुनाया तवलोगों

१० नेधायकर मदनाकोपकड़लिया और हाथपाउं
भ बांधकर भलीप्रकार मारा बहुत दुरदशा करके
१५ फिर राजाके पासले आये और धनीके मारडेने
का प्रसंग भी सब सुनायदिया तब राजाने सुन
कर परम कोपकिया फिर साधु जानकर जान
से नहीं मारा परंतु हाथपाउं काटनेकी आज्ञा
देदेई ऐसे राजाकी आज्ञाअनुसार चांडालने ले
जायकर तुरतही दोनो हाथ काटडाले और न १५

गरसे बाहर निकाल दिया तब अपने सर्व कर्म
का फल विचारकर हस्त हस्त समरता हुआ ति
न संतोंके पीछे पीछे हीं लागकर चलपड़ा यद्य
पि तिनोंनेभी बहुत तिरस्कार किया तद्यपि स
मय जानकर मौन होयरहा कुछ बोलता नहीं भ
या तैसेहीं करते हुये हाथों करके भिक्षाटन धर्म
करता करता और दीन सुखदायक भगवनको
समरता हुआ सुंदर जगन्नाथपुरी जो है ति

१० भ० २

सविवें आयआपतभया नवरात्रीके समयभग
वान कृपानिधान जगन्नाथ स्वामीने अपने
पुजारियोंको स्वपनेमें कहा कि एक छिन्नहस्त
अर्थात कटेहूये हाथ संतजोहै सो और संतोंके
साथमिलकर मेरे नगरमें आयाहै तिसको स
नमानसे पालकीपर बिठायकर ईहांमेरेसनमु
खलेआवो इसप्रकार स्वपन देखकर हरषके
वशभयेहूये पुजिक साथ करके तिसछिन्नहस्त २

साधूको खोजनेलगे नवननहांवे वैठाहूआया त
हां आयकर तिसकोभगवानकी आज्ञा सुनाय
कर कहनेलगे किहेसंत अवतुम इसपालकी
पर वैठकर आनंदसे भगवानदीन सुखदानके
सनमुख चलो ऐसे तिनका कथन सुनकर स
दनाहाथ जोडकरके नंम्रवाणीसें विनतीक
रनेलगा किहेभक्तजनो मै दीनभाग्यहीन
इसपालकीपर वैठनेके योग्यनहींहूं दीन

१॥ ह्लावादायक भगवान कृपानिधानके दरसनके
भ॰ रनेको मैसीसकेवलपाउं पयादाहीं चलताहूं तब
२१ श्रीजिकोंने वहुनहीं हठकिया औरईहो सदना
भी कहता कहता हारगया अंतको अपने कटे
हुये दोनो दंडके समान हाथजोथे सो जोड करके
वार वार चरनोपर सीसनायकर कहनेलगाकि
भक्तदयाकरके तुम इह अनुचित मेरेको छमा
करो मै अपनी दीनता और लघुताको कदाचि २१

नत्यागनहीं सहूंगा इसप्रकार नव सदनाने दीन
भावसे अपने दोनोकटेहूये दंड जोडकर विनती
करी नवधर्मका प्रभावजो उदयहो नाथा नरतहीं
जगतनाथ भगवानकी कृपानें जिसके दोनोहा
थ नवीन उत्पन्न होजातेभये इस अदभुतकोदे
खकर सब लोग अचरजको प्रापतहोयगये त
व सदना आनंदमे मगनभयाहूआ प्रीतीभक्ती
सें भगवानके भवनमे आयकर कृपासिंधुके

।.. आगे वार वार दंडप्रणाम कर्त्ता भया ऐसे कछुक
भ. दिन तहां निवास करके फिर क्रमक्रम से भ्रमता
२२ हुआ ब्रजभूमीमे चला आया तहां भगवानके गु
णगणगावता हुआ यत्नके विना सहजेही श
रीरको त्यागकर भक्तीके प्रसादसे सबीदेवता
ओंको दुर्लभगती जो है तिसको प्रापत होजाता
भया ॥४॥ इति श्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवद्भक्तिम
हात्मे मीरासिंहकृत भाषाटीकायां सदनाचरित्रवर्णनं नाम सरगः
२२

अथ लडू भक्त चरितं । दोहा । लडू भक्त प्रसिद्ध इक भ
क्त सिरोमणि गाय । तिनकर अति पावन कथा सु
नहु श्रवण सुखदाय ॥ चौपाई । भ्रमत भ्रमत
तीरथ थल वाहू । आवा एक नगर मनहारू । त
हि पुर कर जे नृप अवलंबा । तांकर इष्टदेव जगदंबा
तहां न देस पाय नर राई । प्रतिदिन देहिं मनुज ब
लि आई । जहि गृह बसे भक्त ब्रतधारी । तहि दि
न रहि नास बलि बारी । ते सठ साधु सरल चित

१२ जानी। पकरत भक्त स्वहकर पानी। गयो लेत सन
भ॰ मुखन नरराई। भाष्यो महाराज बलि आई। तव नरेस
१ मान स अभिलाषा। बलि कहं देखि बदन अस भा
षा। बेग जाय अब करहु नयारी। चले सु लेन नर
त अधिकारी। दैस नान पावन तन कीना। बाधिक
बहुरि सु उकक रलीना। सन मुख भवन हरषि म
न माहीं। लागे बचन भक्त हरि काहीं। कुस भक्त
तव हृदय विचारी। जो इक मोर बचन नें सारी। आन

जीवकरहोहींभलाई। जोग्रव वधन विलमक
नलाई। ग्रसकहिभक्त मौन ग्रनुरागा। क्रुस
हुमग्गेकरनउरलागा। नवभगवति म्रवतिम
धाना। उपजिपरी श्रकम्रवनीग्राना। गहित न
रंतवधिक ग्रसिपानी। ग्रहणनयन दारुणवि
सवानी। वोलिवदन धरि खड्गप्रहारो। काट
नवधिकसीसमहिडारो। भूपसमेत लोगस
मुदाई। विकलत्रासवस चलेपलाई। भक्तस्व

१०२ मानस थिर होई। देवी अग्र जक्क कर देई। बदन व
भ॰ नीत मधुर सुर बागा। लग्यो करन अस्तुति अनु
२ रागा। तव प्रसन्न मन मात भवानी। बोली जनन सु
खद सुर बानी। दोहा। मांग मांग अब भक्तवर
नहिं अदेव कछु तोहि। तव बोल्यो मोदिक भक्त
तव प्रसाद सब मोहि। पै इक करहुं विनंति अब
कृपा निकेतन मात। इह नर खलित जिले हु नित
पाय मादि स खेदात। एव मन्न मन खमान भति पु
२

निभाखोकछुआन। मांगाहुवरनवभक्तमहिय
निप्रसन्नजियजान।जोप्रसन्नप्रसजननिनवता
हसरवरएहु।उपजहिंअवविलभक्तिजनकल
कमलपदनेहु।सत्यसत्यप्रमवदनभनिभग
वनिभक्तउवारि।होतलपनडुतजननिजगतिज
वरभवनसिधारि।।१।।टीका।एकभक्तोंमे प्रथा
न श्रोर सरव गुणनिधान लछभक्त नामकर
के जगतमे उजागर होतेभये अव निनकीव

१०२ भ. ३

रीपवित्र और सुखदायकगाथाजोहै सोकुछकसं
क्षेपकरके कथनकरताहूं हेसंतो ध्यानदेकर
श्रवणकरिये सोभक्त उत्तम तीर्थयात्राकरते
करते और भ्रमते भ्रमते दैवयोगसे एकसुंदर
नगरमे आयप्राप्तभये तिसनगरकास्वामीरा
जाजोथा सोभगवतीका उपाशिकथा औरवे ज
गदंबेही तिसकाइष्टदेवथी तहांराजाकी आज्ञा
अनुसार जगज्जननीभवानीको नित्यदिन मात

३

3

षकीवलीहीं लागतीथी नवनगरमै लहुभक्त
जी जिसके घरविखैं उतरेहूयेथे निसदिनति
सीपुरषकी वलीहोनेकी वारीथीनिसङ्कटने
कैसाकपटकिया किभक्तसहसको सुधेसरल
स्वभाववाले जानकर ओर भजासेपकटक
र राजाके सनमुखलेगया तहांजायकरकह
नेलगा किमहाराज वली आईहुईहै नवरा
जावलीका देखिकर प्रसन्नभयाहुआ कह

१२ नेलगा विनाउ, इसकी सेनाको और शीघ्रगामी
भ करो ऐसे राजाकी आज्ञा पायकर अधिकारीजो
४ थे सो भक्त प्रधानको लेनलेआये और भलीप्र
4 कार स्नानकरवायकर पवित्र किया तिसते
उपरांत वधिक सो मारने वालाहै सो हाथमें नं
गी तलवार धायकर भक्तश्रेष्ठको ल्यायकरके
तहां भगवतीके भवनमैं वधकरनेलगा अर्थ्या
त मारनेलगा तब भगवानके भक्त लहुदासजी ४

तिसको देखकर हृदयमै विचारकरनेलगे कि
अबजो एकमेरे मरणेतैं और सबजीवेंकाभला
होजावे अर्थात तिनकेमरणेतैं और छूटजावें
तोमेरे मरणेमै विलंब नहींहोनी चाहिये ऐ
से विचारकर भक्तप्रधान हरष और प्रेममै म
गनभयेहुये सोनधारकर कमलभगवानका
सुमरण करनेलगजातेभये तवतहां भगवती
की मूरतीकेबीचसे एक और बडे प्रचंडमेजवा

१२ भ० ५ ली नवीन मूरती उतपन्न होयकर तिस वधिक
घाती के हाथसे तरत तलवार छीनकर कोपसे ला
ल किये हुये नेत्र और मुखसे कोपके ही वचन उ
चारण करकर ऐसा वार प्रहार किया कि तिस
वधिक का सीस काटकर ततकाल पृथवी पर गि
राय दिया तब देखकर के राजा के सहित सब लो
ग जो थे सो व्याकुल होयकर भयसे थरथर कांप
ते हुये भाग चले तिस समय श्री रजके धाम लडु ५

भक्तजी स्वस्थ चित्त होयकर जगज्जननीके सन्मु
ख स्थित भये हुये हाथ जोड़कर बड़ी कोमल म
धुरवाणीसे अनेक प्रकारकी अस्तुती जो है सो
गायन करने लगे तब तैसे ही प्रसन्न होयकर के
भक्त सुखदायक भवानी भी मधुरवाणीसे कह
ने लगी कि हे भक्त अब जो तेरे मनकी इच्छा है सो
वर मांगो मैं देनेका सामर्थ्य हूं मेरे ऐसी वस्तु को
ई नहीं है जो मैं आजतेरेको न दे सकूं इस प्रकार भ

१०२ भै. ६

गवतीका वचनसुनकर लडूभक्त बडेहर्षसे वि
नतीकरनेलगे किहेमैया तेरीकृपाके प्रसादतें
अबमेरेको कुछभी मांगनेकी इच्छानहींरहीहै मै
संसारमे सुफलहोयगयाहू परंतुहेजननी जो
कदाचितनतू मेरेपर अनुकूलहै क्या प्रसन्नहै
तो इसकृपाकर कि अबतेंआगे मानुष्योंकी ब
ली त्यागकर नित्यखीर आदिसुंदर सुखदायक
बलीहै सोलिया कर इसप्रकार भक्तकी विनती ६

जो

6

सुनकर जगदंबे एवमस्तु कहिदेती भई कि ऐसे
ही होगा फिर प्रसन्न भई हुई कहने लगी कि भक्त
कुछ और भी मांगलेवो तब भक्त कहने लगे
हे कि कृपाकरनी हे दीनदुखहरनी जो तुं मेरे पर
प्रसन्न हैं तो अनुगृह करके हमारा इह वर दे जो
कृस्नभगवान के चरनकमलों विखे मेरी प्रेम
उ प्रेमके सहित भक्ती जो है सो दिन दिन अधिक
हीं वढती चली जावे तब भक्त की यावना अर्थात

९२ मांगनासुनकर तथास्तु कहतीहुई भगवती किस
भ० नकरके ऐसेहीहोगा तदनन्तर होयकर आनंद
७ से अपने धाममेंजाय निवास करतीभई ।२। चौपा
ई । भक्तप्रवर तहं विचरनलागे । कमलचंद्रचरनन
अनुरागे । तवस्वर अस्वर सकल जगसेवी । नृप
प कहंदीनस्वॅन अमदेवी । अवतेंमजड़ मनुजबलि
गई । पायमादिमहि देहुसुहाई । देखिस्वपन अम
भूपप्रवीना । भोरहिंगवन भक्तफिराकीना । जग ७

करजोरि चरन सिरनाये। सेवकवन्हो भक्तिसव
साये। तवतेंजाति मनुजव पहानी। पायसादिव
लिदेहिं भवानी। टीका। देवहू भक्ति प्रभावतें भक्त
सिपुणानुदुराई। करिप्रसन्न जगासनविकंदं न
ववरदिवोकुमाई।२। टीका। भक्तप्रधान जोथे सो
कुलभगवानके चरनकमलोंके प्रेममें उनमत्त
भयेहूये. तहांलौं विहरनेलगे सव देतदेवतांउसो
व मानवषोंकरके सेवनकीहुई भवानी राजाकोसव.

१०३ पनेमै प्रबोधकरकर कहनेलगी किहेप्रजापाल
भ· अवमैंने मानछावलीत्यागकर मेरेकोपायसादिनी
८ रकीवली जोहै सोईदियाकर मैनिसँ आलसकरके पर
प्रसन्न होउंगी ऐसेबचनको देखकर हरषमें म
गनभयाहुआ राजाप्राताकालहोनेही भक्तऋषि
केपासचलाआया और चरनोपरसीस नायकर
हाथजोडकरके भावसे अनेकप्रकारकी श्लाघा
बडाई करकर भक्तीमानभयाहुआ तिनकाहीसि ८

घावनगया नवतेंमानुषश्रवलीकी वडीहानीजानक

र भगवतीको दोयश्रादिसंदर वलीजोहै सो देल ने

गा नाभादासकहतेहैं किहेसंतो देखिये भक्तीकी

कैसी वचित्रमहिमाहै कि जिसके प्रभावमेकल

भगवानके प्यारे भक्त लड्डूदासजीने जगजननी

भवानीको विकायकर श्रौर प्रसन्नकरकर तिस

नगरमे नित्यमानुष्य जानजोहोताथा सोछुडा

यादिया।२। इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथेभगवद्भक्ति

१२ मै. महानमे भाषाटीकायां लङ्कभङ्गचरित वर्णने

५ ने नाम सरगाः ॥ ॥

मीहांसिंह कृत

५

अथ मुरारी भक्तचरितं। दोहा। अब अद्भुत अच
रज ललित भक्ति प्रभाव महान। गावहुं कछुक सा
दर वदन सुनहु संत धर कान। चौपाई। भक्त सु
ष्ठ जगनाम मुरारी। विदित रसिक लोगन अनथा
री। विरचिविनास कल कुंड सुहावन। भक्त संत च
रणोदिक पावन। तहं रात्रि नित दिवस प्रवी
ना। ध्यान सनान भक्ति मन लीना। आन सकल
कृत द्वेष बिसराई। तहिं सन करत भक्त जडवाई।

५५
भं०
१

असउरलभ अतनामनवीना। हृदयभक्ति जनतया
रनकीना। समयपक नहि सदनसुहावा। गुरुक
र आउरुचिर रविआवा। सादिरसंत निमंत्रणकी
ने। आयेसकल हरष मनलीने। एकसंत असहृ
दयविचारी। मैप्रीक्षा अवलेहुं मरारी। नवअसंत
नइक हृदय उमंगा। लावाकपटभाव जनसंगा
तिलकमाल मद्रा पहिरावा। वैस्नव भेष वसे
षवनावा। पैतहि गलन राजरुजदेहा। असस

व आयभक्त वरगेहा। सवकहंकीन प्रणाममना
री। पुनिसिषकहं मखविगराउचारी। करिप्रक्षाल
न संतन चरना। चरणोदिक पावन उखहरना
उारहहुकुंड शेषककुल्याई। सिंचन करहु सीम
ममआई। सिषनदेश गुहवर अमलीने। संतव
रन प्रक्षालनकीने। सोपदवारसाधुसमदाई।
गुरुपे भक्तिप्रीतिजनकल्याई। सीमसवपुष सवसिं
चनकीना। सादिर शेष अंउथपिदीना। मिथ्यासं

५५ नगल नफजजोई। नहितें प्रतिसंकित चितहोई।
भ०
२
दोहा। कौननतास सपर्श सिष मान्यो हृदयगि
लानि। तबप्रसदेखि कृपाल गुरुभनेवदन स
ड्वानि। मालामुद्रा तिलक जहिसो वैस्नव गु
णगास। अस्तुति नजि संदेहसन ल्यावहु प
दजलतास।।१।।टीका। अब और अदभुत बडा सु
दर और आवर्ज भक्तोका महा प्रभावजोहै सोहै
संतजनो आपके आगे गायनकरताहूं इसकोका
२

न ध्यान देकर श्रवण करिये एक मंगरावी नामक
र के बडे रसिक भक्त जगत में लोगों विषे उजाग
र होते भये सो अपने आश्रम में एक बड़ा सुंदर कुं
ड बनवायकर और तिसके बीच संतभक्तों के
चरनों का पवित्र जल राखकर तिसके साथही
तिस भक्ती प्रीतीसे द्वेष रहित और निसकपट
होय करके स्नान पान से लेकर अपनी सब
कृतजो है सो करते रहते थे इसप्रकार भक्त प्र

४४ भ ३ दीनने बडी श्रद्धाभक्तीसें इसदुरलभ उनको हृदयमें
धारन करलिया तब समय पाय करके तिनके घरमें
गुरुके श्राद्धकादिन जोथासो आयगया बडे आदर
सनमानसे संपूर्ण संत भक्त और ब्राह्मणोंको निमं
त्रण अर्थात नेउतादेदिया तब समय जानकर आ
नंद पूर्वक सबसाधुसंत चले आये तिनमें एक संत
हृदयमें ऐसे विचार करकि मैं अब सरागीभक्तकी
लीलाकरूंगा तबवे कपट भावसे एककिसी असंत ३

3

व

पुरषको तिलक मालामुद्रा इत्यादि पहिरायकर औ
र वैस्नँवनायकर नहां अपने साथ लेआवताभया
परंतू वेपुरष राजकुंनजो कुष्टरोगहै तिसकरके
गलितभयाहूआथा इसप्रकार जव संतसमाज
सव घरमे आयगया तव भक्तप्रधान मुरारी जी
नेमनभावसे सवको प्रणाम करकर फिर अपने
शिष्यको वुलायकर कहनेलगे किभाई भक्ती
भावसे संतोके चरन प्रक्षालन करवाय करति

५५ नमहात्माके चरनोका जलजोहै सोसब अंडमे भर
भ दे ह्याना जानापावे और तिसमैमे कुछत्यागक
४ र मेरे सीसपर सिंचिनकरदे अर्थात उंकादे नवसि छि
षने गुरुजीकी आज्ञापायकर तैसेही भक्ती
प्रीतीसें संतोके चरन प्रक्षालन करवाये अर्थात
धुलायदिये और वे संतोके चरनोका जलजोथा
सोत्यागकरके गुरुजीके सीस और शरीरपर सिंचन
करदिया तिसमैमे जो कछबचा सोत्यागकर्के फिरअंडमेही

गरदिया औरौ तिस शिष्यने सब के चरनतो प्रक्षाल
नकिये परंतु वे कुष्टरोगका ग्रसा हूआ कपटी संत
जो था तिसनें अनसे संकित चित होयकर औरह
दयमें ग्लानी मान कर तिसकेसाथ सपर्शमात्र
भी नहींकिया तब दया की निधी गुरु मरारी भ
क्तजी देखकरके बडी कोमल वाणीसें कहनेलगे
कि हे वत्स तिलकमाला मुद्राधारनाकियेहूये जो
है सो सत्य करके वैस्नव रूपहीहै तां नेतं संसय

९९ भं. ५

भ्रमको त्यागकर और रजायकर तिसके चरनभी प्र
क्षालन करना और सोई चरन जल ल्याय करके
मेरे सीसपर भी चढा ॥१॥ चौपाई। यद्यपि गुरु कृपा
ल असवरना। सिषसंदेह नहिं भयो निवरना। बो
लि लीन नव तासु मरारी। भक्तिप्रीति संजुत हि
त भारी। भांति भांति वदन वचन मृदु लालन। की
न्हे तासु चरन प्रक्षालन। ते पद वारि सीस निजधा
रा। पायसपर्श गलित रुजवारा। भयो विमलके ५

वनकाया। विसमय देखि संत समुदाया। भक्तप्रव
र कर वदन वडाई। लागे साधु साधु मुख गाई। अ
स प्रकार द्वादस दिन नाहीं। ऐसो होत भोजन ति
न काहीं। वसहिं संत जहं वीच अरामा। गवनो
तहं भक्त अभिरामा। करत रह्यो इक संत रहा
वा। धूमपान आश्रम हरषावा। आवत भक्त स
हकहूं पाई। धूमयंत्र तिन लीन उठाई। देखि मरा
र सोच अस कीना। इहि निज अधम करम उर

९९ म. ६ चीना। ज्ञारन हृदय तास संदेहू। भक्तकीन कल
कौनकपहू। मिथ्याउदर सत्ल मिमलाई। मांगेणा
भ्रमयंत्र आकुलाई। अमउर गनत साधु उखेता
सा। भ्रमयंत्र निज दीन हुलासा। सादिर भक्त स्र
ष्ट मखलाई। चलेतास संदेह बिहाई। अमजब
कछुकदिवस निकसाने। आनसंत लक्ष्यनवि
घताने। आयसदन वर भक्तमुरारी। तिनहिं दे
खि लक्ष्मन व्रतधारी। बिरविवेग भोजनसनमाना ६

वैठारे सव संत सुजाना। दोहा। लागेपाकरनवि

भक्त तव सुविसिष भक्तसुराति। वैठोइकपंक्

तिरुचिर साधुदंड करधारि। सोभाषत सुरवेश्री

निजन प्रथम पाक कलपइहु। मोरेदंडहिं देत

जन तव पाछे सुहिदेहु। २। टीका। ऐसे गुरू

जीने यद्यपि वहुतनंहीकहा तद्यपि शिष्यका सं

शय नहुत्पनहीं होताभया तवसुरारीजीने ति

स कपटी संतको अपनेपास वुलायलिया ओर

४४ व्रतधारी भक्तने सबसे हितके भरे हुये कोमलव

भ॰ चन उच्चारकर वडी प्रीती भक्ती करके आप अपने

७ हाथोंसे तिसके चरन जो हैं सो प्रक्षालन करवा

यदिये अर्थात भलीप्रकार धुलायदिये और ति

सके चरनोका जल लेकरके वडे सनमानसे अ

पने सीसपर धारन करलिया तब वे राजरोगका

ग्रस्ताहुआ पापी ब्रह्म भक्तप्रधानके हाथका स्

पर्श पायकर तरनहीं झडके बिनवन शरीरसे

७

प्रदोष होजाताभया इस अद्भुत कौतुककोदेखक
र सबसंत अचरजको प्राप्तहोयगये और मुरारी
भक्तकीभक्तीका प्रभाव विचारकर साधु साधु कह
तेहुये नानाप्रकारके भजन और बडाईको गाय
न करने लगे इसप्रकार बारादिनलग तहांतिन
संतोका भोजन होतारहा तबजिसबागकेबीच वे
संत उतरे हूयेथे एकदिन तहां मुरारी भक्तजीच
लेगये तिससमय तिनमे एकसंत अपने आसन ५२

भ॰ ८

बैठाहुआ धूम्रपानकर रहाथा अर्थात तमाकू पीर
हाथा जबतिसने भक्तश्रेष्ठको आवतेदेखा तोति
नके संकोचसें लज्जाकरके अपने धूम्रयंत्र नरिये
लेकोछिपाय लेताभया नवमरारीजीने तिसको
देखकर हृदयमें सोचकिया किइस संतने इसक
र्मको अधमजानकर अपनाधूम्र यंत्र नरियेलाजो
है सोमेरेसें छिपाय लियाहै ऐसे तिसकेभ्रम सं
कोचके निवारण करनेकेलिये भक्तप्रधान के ८

सा कौतुक करने भये कि अपने पेटके हलका व
हानाकरके तिससाधूसे तमाकू पीनेको नरियेला
मांगनेलगे और कहनेलगे किहेसन मैपेटकी पी
डासे बहुत आकुल होयरहाहूं तबसाधूने तिनका
कलेश विचारकर हरषसे तुरत नरियेलादेदिया
भक्त उत्तम सनमान पूर्वक मावसें लगायकर औ
र तिसके हृदयका संकोच संदेह छुडायकर आ
नंदसें अपने घरको चलेआये इसप्रकार जब कु

५५ भ· ५

एक दिन वतीन होयगये नवदलध्याकरके व्याकुलभ
येहूये और संतजोहैं सोतिनके घरमें आय प्रापतभ
ये ऐसेसंतोंको घरमें आयेहूये देखकर भक्तप्रवी
न वडे प्रसन्नभये परंतु संतभूखे जो देखे तो ततका
लंही संदर भोजन बनवाय कर प्रीती सनमानसेति
नको वैठार दिया और भक्तप्रधानका एक वडा चतुर
शिष्यजोथा सो संतोंको भोजन परोसनेलगा तब
पंक्तीकेवीच तहां एक साधु हाथमे दंडधारकर वे ५

ठाहूरप्राणा सो कहनेलगा किभैया नमप्रथमप्रीती
पूर्वक मेरे इस देउकोभोजन देकर पीछेमेरेकोदेना २
चौपाई। मैनदेउ बिन भोजनकरना। असजब संत वे
दननिजबरना। नवसिधदीन पाक सबकाही। सं
तन भक्तिहरषि मनमाही। तेउरखवाद संतकरजा
नी। देउहिं दीन नभोजनपानी। नामकथन जबना
हिंनमाना। कियोसंत नवकोप महाना। तेउछिप
निज पत्रउठाई। फरकिअपरदेग भरजीति चढाई

९९ भक्तमरार सीसमनजाई। हन्यो प्रचंड कोप अजलाई
भ धीरधुरिंद्र भक्तभगवाना। तेम्हरार मानस म्हसका
१० ॥ ना। धन्यभाग मम आज सुहाये। सादिरसीस हगान
104 ॥ निजलाये। धरत उच्छिष्ट पत्रमहिरागा। वहुरि मर
म नहिं एक न लागा। तासहनंतान भयो निजसारा
सिषकर कीन विविध विसकारा। नवनमेढु देउहिं
कसदीना। अस कहि आशु भक्ति मनलीना। दतमा
कराय देउ जनवाहू। भोजनदीन भक्त अनयाहू। ॥

संतविलोकितासु असकरनी। सवन वदन वहु कीरति वरनी। होतविदाय चलेनिज भवना। सोहूं संगलागित तिनगवना। असप्रकारक छु दिवस विहाये। गुरुवर भक्त सहेजेगाये। स्यामानंदनाम अभिरामा। तिनकर रह्यो एक हतिग्रामा। सामलेछ रुपलीन हुआई। नहिंक लेशामानस निजपाई। लेखिपत्र कुलबोलि पठा ये। तिमरार सेवक सवधाये। करिभोजन ज

५९ वसदन प्रवीना। अजहुं वदन शोधन नहिं कीना
भ० हूतपत्र तहि अवसर दीनी। चले नरेन सीस धरि
१२ लीनी। दोहा। गुरुपै आये भक्तवर नौरिकरन गति
दीन। करि प्रणाम पद देउ वन विनय वदन नि
जकीन। कवन काज निज दास तव बोल्यो कृपा
निधान। गुरु कृपाल तहिं वचन सुनि कियो सुतो
तव खान। गुरुमख सुनत हुतांनने पाका खेद स
गारि। चलि आये पुरय मन कहूं वेग भक्त जन धारि १२

।२। टीका। मैं दंडके विना कदाचित भोजन नहीं
पाऊंगा जब इस प्रकार तिस संतने उचारण कि
या तब शिष्यने भक्तीप्रीतीसें आनंद पूर्वक सब
कोभोजन करवाय दिया परंतु तिससाधुका
बेडखाद जानकर दंडको कुछ नहीं दिया ऐसे
जब तिसका कथन नहीं माना तब वे संत महाको
पसे व्याकुल अधर फरकते हूये भृकुटी चढा
य कर और अपने आगेकी जूठी पतरी अर्थात

१५ भ १२ पत्तल उठायकर घुमायकरके मुरारी भक्तके सीस
मै मारताभया इसप्रकार संतका प्रचंडकोप देख
कर धीरज और शान्तीके निधी भगवानके प्रवी
13 नभक्त मुरारी जोथे सो मुखसे मुसकायकर
तिस पत्तलको लेकर वारवार अपने सीसऔ
र नेत्रोंमें लगायकर कहतेहैं किमै आज संसा
रमेधन्यहूं क्यों कि जिन संतोके चरनोंकाजल
सीसपर धारन करने से शरीरके सवपाप न

१३

वृप्त होजाते हैं तिनका न्हूवा भोजन जो है सो मेरे सी
अपराधसे क्यों नहीं अपने भागों की बडाई मान
ऐसे कथन कर कर तिस पतलको सन्मानसे
तहां पृथ्वीपर राखकर फिर तिस साधको भेद
जो है सो पूछने लगे तब तिसने प्रकट करके सब
वृतांत सुनायदिया मुरारीजी सुनकर तिस अप
ने शिष्यका बहुत तिरस्कार करने लगे कि मूढ
तैने दंडको क्यों नहीं भोजन दिया ऐसे कहिकर

५५ भ. १४

14

मुरारीजी भक्तीभावसें तिसतें नमाकरवायकर दं
डके सहित वडीरुची सनमानसे तिसकोआपभो
जनदेतेभये इसप्रकार तिनकीभक्तीप्रीती और
सुंदर करनी देखकर प्रसन्न भयेहूये सबसंत
मुखसें साधु साधु उचारकर अनेक प्रकारकीश
लाघावडाई करनेलगे और फिर आनंदसे विदाय
होयकर भक्तप्रधानके गुणगणगावतेभये अ
पने मारगको चलेगये नव लज्जाकामारा वेदंडया

री संतभी तिनके पीछे पीछे चलपड़ा ऐसे जबकु
छकदिन बतीत होयगये तबमुरारीजीके गुरू
स्यामानंद नामकरके उजागर होथे तिनको स
नातनसें एकगाउं धरमअर्थमे जागीर मिलाहू
आया सो नहोकाम्लेछ राजाजोया तिसदुष्टने
अधर्म करके वेगाउं तिनके अधिकारसे छुडायलि
या इसक्लेशबनाका कलेश मानकरके छुडायलिया
इसबारताका कलेश मानकर गुरूजी पत्रिका

९९
भ॰
१५

15

लिखकर आपने सुखदायक सेवक मुरारी जीको
बुलायभेजतेभये तबईहां घरमै भक्तप्रवीन ने भो
जन पायकर अबीमुख शोधन नहीं कियाथा कि
इतनेमै इनने आयकर वे गुरू जीकी पत्रिकाति
नकोदेदेई तिसकोवाचतेही सीसपर धरकर त
रत चलपडतेभये तब गुरूजीके पास आयकरदी
नभावसे दंड प्रणाम करके हाथजोडकर विनती
करनेलगे किहे कृपानिधान कहिये कौनका १ १५

जकेलिये दासको बुलायाहै तब गुरुकृपाल ग्र
पना हतांतजोहै सो सब सुनाय देतेभये मुरारी
जी सुनतेहीं हृदयमें डरमानकर तुरत तिसव
लेछ राजाके नगर मे चलेआये ।३। चौपाई। रहै
भक्तवर सेवकताहां। भूतआपिकारि यमननर
नाहां। गुरुहिंदेखि मानस अनुरागे। वारवारप
गवंदनलागे। कवनकाज भगवन इतआये।
कृपानाथ अवदेहु सुनाये। कौनकथननतव व

९९ दनमरारी। सुनिबोले सेवकहितकारी। तववनजाहु
भ॰ प्रभुसन मखराजा। हमसब करिहुं नाथ तवका
१९ जा। बोलेजनन हरन संताष। मैजावहुं नृपसन
16 मखआष। अससुनि सेवक चलेसिधारी। तवम
लेहु नृपगिराउचारी। तवजनन आजवेर कनला
वा। भूतन वदन तव विनय अलावा। आयेगुरु ह
मार नरमाई। तवरहभई वेरहमकाहीं। तिनगुरु
करकछु हनीप्रचारी। छीनलीन प्रभुतव अधिकारी १९

सुनि मलेछ नृप तिन करवानी। बोल्यो हृदय हरष
निजमानी। ल्याउ बेग मम सन मुखजाऊ। मैं देखहुं
कछु तास प्रभाऊ। तब तिन लीन नरन गृह बोला
ल्यायकरि अहलद कलदोला। नृप हित भक्त मम
गज चीना। करन विदलन द्वार थिर कीना। आयउ
बेग भवन चढि रागा। चरित चारुजन देखन ला
गा। आये जब हरिभक्त मरारी। अहमन नयन गज
परेउ विकारी। दोलावाह ज्ञाम बसभागे। एकल

स. भ. १८

17

रहे भक्त बडभागे। रह्यो कृस्न हरि वदन सुनाना। न
वसिंधुर आयो मदमाता। सादिर भक्त चरण गत
माता। दियो नंम मसतिक निज राखा। तासु कर
न तव भक्त प्रवीना। अमर मंत्र उपदेसन कीना।
उस्यो ग्रीव ललित वनमाला। धस्यो नाम तहि दा
स गोपाला। देखि भूप मानस विसमायो। साधु सा
धु सब लोग अलायो। निज अनुचित न्रपत माक
राई। वंदि चरन करि विनय बडाई। सो हुति दिन दी

नयनहरा। करिअभिषेक मंदिर सवपुरा। दोहा। ह
रषन कीनविदाय नृप नेम्न चरन सिरनाई। इनग
ज जनगोपाल रत भयो संतसिवकाई। ५। दोहा
टीका। तबतहां तिसराजाके वडेवडे अधिकारी
नौकर चाकर जोथे सोमहाराजीके सेवकरहे गुरू
जीको आयेहूये सुणकर भक्तीभावसे सवचलेआ
ये और वार वार चरनोपर दंडप्रणाम करनेलगे
फिर हाथ जोडकर सव्हने भये किहे कृपानिधान

५५ भ॰ १८

18

दयाकरके कहिये जो आपकौन कारनकेलिये ईहां

आयेहो तबसेवकोंका कथन सुनकर भक्तप्रथा

न आपना प्रयोजनजोथा सोसब सुनायदेतेभये

सुनकरकेवे हितकारी सेवक कहनेलगे कि

नाथ आपराजाके मनमेंखेद नाजाइये हमसभ

तुमारा आपहीं सब कारजकरलेवेंगे तबदीन

सहायक गुरुजी कहनेलगे किभाई मे आपरा

जाके मनमें खेदचलेगा इसप्रकार गुरुजीकेव १८

ऐसें वचन सुनकर वे सेवक राजा के पास चले आये
तब राजा कहने लगा कि आज नगम इतनी देर क्यों ल
गाई है कहो रहे वे सेवक हाथ जोड़कर विनती क
रने लगे कि पृथ्वीनाथ आज संत महात्मा हमारे गु
रुदेवस्वामीजी आये हुये हैं इस कारन तें प्रभु हमा
रे को देर लाग गई है और हे नाथ तिन के गुरुजी का
आप के राज में एक धरम अर्थ गांऊ था सो नाथ तु
मारे अधिकारी कामदार ने छीन लिया है ऐसेति

९९ भ. ९९

न सेवकोंका कथन सुनकर वेमलेछ राजाकह
नेलगा कि जावो तुमशीघ्र अपने तिस गुरुकोभे
रे सनमुख लेआवो मैं तिसका संतप्रभाव जोहै सो
कुछदेखूंगा नव सेवक प्रसन्न होयकर और तन
काल जायकर वडे आदिरसनकारसें गुरुजीको
पालकीपर विठाय करके लेआये ईहांपीछे तिस
अधमराजाने को अनिनर्थ किया कि एक ममह
सनीको भक्तप्रधानके विरवाडलनेकेलिये अप

९९

नेढारे पर स्थितराखा और आप मंद कौतक देखने
केलिये वडेऊंचे अस्थानपर चढकर बैठरहा ज
बभगवानके भक्त मुरारीजी तिसअस्थान पर प
हुंचे तववे महांप्रवल मनहंस तीजोथा सो कोप
से लालनेत्र कियेहूये वडाविकार शवदकर
के तिनके ऊपर झटपडताभया तिससमयदो
लावाहू अर्थात कहारजोथे सोभयके मारे भ
क्तप्रवीनको तहांही छोडकर भागगये तव वे

९९ अकेलेहीं कुसकुसवहतेहूये तहांस्थितरहे मनह
भ. सनीजोथा सोसनमाख आयकर कुसनामको श्रव
२. णकरके कोपसे नष्ट दीनहोयकर चरनोपर सी
सराखदेताभया ऐसेतिसको शरणागत देखक
र प्रसन्न भयेहूये भक्तप्रधानने तिसके कानमेंन
रन अमर मंत्रका उपदेश करदिया और सुंदर त
लसीकीमाला गलेमै पहिरायकर तिसका गोपा
लदास नामजोहै सोराखदिया तब इस अद्भुतको

३.

नकको देखकर राजावडे अचरजको प्रापत हो
यगया और सबलोग साधु साधु शबदको उचार
ण करकर भक्तप्रधानके चरनोपर बार बार सी
सनावनेलगे फिर राजाभी दीनभावसें चरनो
पर सीसधरकर और अपना अपराध छमाक
रवायकर मुखसे अनेक प्रकारका भजन गा
यन करनेलगा तिसतें उपरांत सनमानसे
धनके सहित तिनके गुरूजीका धर्म अर्थ गाउं

५५ भ· २१ जोछीनाहूआथा सोदेकर और वार वार चरनोप
रसीस नायकर आनंदपूर्वक विदायकर देताभ
या और ईहां वेगोपालदास नामकरके हरसती
जोथा सो मुरारीजीकी कृपाके प्रसादसे भक्ती
प्रीतीवाला भयाहूआ रातौदिन संतसेवकाई
मैंही मगण रहनेलगा ।५। चौपाई । वनिवाहन
संतन अनुरागा । भक्तिमान पुर विचरन लागा
भूपकाज सबदीन तयागी । कृस्न कृस्न सुमरत

वडभागी। धावत वनके हद्द पुरजाई। प्रह्लादिक
असलेन उठाई। अनाथ संत कहं देत निहारी। न
गर वनके सवभये उखारी। भक्तमरार सरण
सवआये। तिनहिं दीन निज विश्वासवनाये। भक्त
प्रबोध कीन नवआई। इहकमकीन गृहण उखता
ई। विनमांगे असलेननजोगृ। करहिंतान ग्रपज स
सवलोगृ। हनिगोपालदास गुरुवागा। सोक्त
करम निजदीनत्यागा। इह अंदभत जवसुनो

११ दलीसा। पठोवोलिनव भक्त गनीसा। भ्रतन न वदन
भ ग्रस विनयवखाना। तासग्रगम संतन विनग्राना
२२ नवदिलीपत साधुपठाये। तेग्रनास विनतासल
22 याये। देखत कौन साह सतकारा। यरिभोजन क
लविविधप्रकारा। तासगृहण कछु नाहिनकीना
ग्रसप्रकार वीते दिनतीना। त्वध्यानदेखिसाहउरव
माना। जमनवार इहि देह सनाना। नवनिश्चय
कछु करहिं ग्रहारा। ग्रसदलीस जव वदनउचा २२

साधुअसुद्ध होतननहिकाहीं। न्हायेविमल जमन
जलमाही। तहांसनान भक्ति जनरागा। लागेपाक
रन भक्त वडभागा। वहुरि कुल अनकूल विचा
री। चलिआयो वरभक्त मुरारी। दोहा। सुमरत
कुल कुपायतन सव कर देखततेहु। गयोकुल
कलधामकहं विन अजास तिनिदेहु। सतिदली
स अदभुत चरित भयो चकितमाहीं। लगेप्रसं
सन विविध विधि भक्ति महातमकाहिं। अस मन

९९ प्रकार मथुरा भये विठ्ठल भक्त भगवान । जिन निज भ
भ॰ क्ति प्रभाव बल पायो पद निरवाण । ५ । टीका । और
२२ प्रेम प्रीतीसे संतोका वाहन वनकर नित्य नगरमें हो
23 विचरता रहता था राजाका काज और सिवकाई जो
थी सो हृदयसे सब विसार देई क्रस्न क्रस्न रटता हुआ
नगरमे जिस रह पर चला जाता नहांसे अन्न आटा
इत्यादि उठाय कर ले लेता और अतिथी साधु संत
देखकर तिसको भक्ती प्रीतीसे देदेता ।

तिसके भयके मारे कोई बोल नहीं सकताथा न
व नगरके दुकानदार लोग सब दुखी भयेहुये
मिलकरके मरारीजीके पास आयकर तिसके कले
शकाहेतात प्रकट करके सब सुनायदेते भये
नव भक्त प्रवीन सुनतेही ततकाल तहांचलेआ
ये और गोपालदास नामकरके जो हसनी भक्त
था तिसको कहनेलगे कि भाई इह जेने लोगों
को दुखदेने वाला कैसा अधम करम गृहण

५५
भ॰
२४

किया है मांगे विना अपने आपही किसीका कुछ ले
लेना इह उचित नहीं है इससे भाई लोगों विषे अपज
स होता है और इह भले पुरषोंका काम नहीं है इस प्र
कार गुरुजीके मुखसे शिक्ष्या सुनकर गोपालदा
स तिस अनुचित करमसें नहत्य होयगया अर्थात
वे करम त्यागदिया इस अदभुत कौतकको जबदि
ल्लीके बादसाहने सुना तो तिसने गोपालदास
हसनी भक्तको अपने सनमुख बुलावने की आज्ञा २४

24

देई तब बादसाहके सेवकोने प्रार्थनाकरी किदी
नघालवे तोसंतोकेबिना कदाचित नहीं आवेगा
ऐसे सुनकर दिल्लीपतने तिसकेल्यावनेको न
होसाथही भेजदिये तबवेसाधु यतनके बिना ति
सको सहजही दिल्लीनगरमे लेआये जबगोपाल
दासको बादसाहने देखा तब प्रसन्नभयाहूआ ब
डेसुंदर मिष्टान भोजनोसे तिसका सनमान क
रताभया परंतु गोपालदासने बादसाहकोदिया

५५ भ. २५

25

हुआ भोजन कुछ नहींपाया इसप्रकार तीनदिन
वतीतहोयगये गोपालभक्तको भूखिदेखकर वा
ह्मणने हृदयमै वडाकलेशमाना श्रोर कहाकि
इसको जमनाकेजलमै सनानकरावो तवइह श्र
वश्य कुछ भोजन पायलेवेगा ऐसेजव साहकीश्रा
ज्ञाभई तव साथ गोपालदासको श्रानंदपूर्वक श्री
जमनाजीके निरमलजलविषे ले श्रावनेभये त
हां वडभागी भक्त गोपालदास जोहै सो परमभ २५

की और प्रेमसे स्वरजाकीके जलमें स्नानकर
नेलगा ऐसे भलीप्रकार स्नान करके फिर म
शीजीका सेवक गोपालदास आनंदसे जम
नाके बाहर किनारे पर चलाआया तहांआव
ताही क्लमक्लम समरनाहूआ सबकेदेखते
तरत सहजेही शरीरको त्यागकर क्लमलो
कको चलाजाताभया तबइस प्रदक्षन कोजन
कको सुनकर दिलीपचनजोहै सो परम आच

२९ रजको प्रापतभया हूआ वार वार भक्तीको पा
भ. लाघा वडाई करनेलगा किदेखोइह केवल
२८ भक्तीकाही चमतकार और प्रभावहै इसप्र
76
कार मथुरामे ऐसे बहुत भगवानके उत्तम
भक्त उतपन्नभयेहैं कि जिनोने भक्तीकेवल
और प्रभावसे भगवानका निरवाण पदजोहै
सोप्रापतकरलियाहै। इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथेभगवद
भक्तिमहात्मेश्रीमहासिंहकृतेभाषाटीकायांमथुराचरित
वर्णनेनाम सर्गः २९

अथ मधुस्वामी चरित्रं । दोहा । अब कर वैंहौं संतपत क
छु कथन भक्ति मन ह्लास । जासु सुनत उपजै विमल
कृष्ण भक्ति उरचारु । चौपाई । मधुस्वामी अस नाम सु
हाये । भक्त प्रवर जग लोगन गाये । मथुरा वस हिंदु
न गुण धामा । कृष्ण भजन नतपर अभिरामा । नाम
कथा मथ सुन्यो सुहावन । कृष्णदेव मथुरा मन भाव
न । सदा करन निज रुचिर निवासा । नवस भक्त अ
स कीन अजासा । वण वण कुंज कुंज अनरामा

४९ कालिंदी तट सघन तड़ागा। जहंतहं भ्रमत प्रेममन
भ॰ लीना। अब्रवार खोजत नजिदीना। जगलदिवस अ
१ सनाअविहाया। त्रितियेदिवस निवल अतिकिया।
जमनातीर वंसिवटकांही। चल्योजान चिंतामनमा
हीं। तवमारग मड़स्याम अनूपा। वालगोपाल रु
चिर धनरूपा। नयन नवलकल कंजनसोभा। भृ
कुटी कुटिल रेद्द धनलोभा। अधर अरुण शुकघ्रा
ण सुहावन। कुंडलकरन ललित मनभावन। कुं

चित चिकन स्याम कच चारू। खोर लिलाट पीतपट धारू
हरन मदन मद लावनताई। देखि भक्त छवि भक्त स
हाई। प्रेमाकुल मानस हरखाये। लीन नरन निज अं
क विठाये। नव भगवान प्रेरि निज माया। म्हंत कौ
न मानस हरखाये। लीन नरन निज अंक विठाये। न
व भगवान प्रेरि निज माया। महंत कौन मानस भ्र
म छाया। बोले बदन भक्त सुखदाना। कवन हेत
महि पकरि विठाना। कोकर हृदय उपज भ्रम

९८ तोही। संतन करह्न कथन श्रवमोही। दोहा। नववो
भ० लेमधुस्वामि श्रमजानि कृस्न जियमाहिं। मैपकस्रो
२ पै श्रव लखो गोपवालनव काहीं।।१।। टीका। श्रवश्रो
र संक्षेप करके कृष्णभक्तीका प्रभावजोहै सोकथ
नकरताहूं किजिसके श्रद्धापूर्वक श्रवणकरनेसे
हृदयमे कृस्नभगवानके चरनोकीभक्ती उत्पन्न
होयजातीहै मधुस्वामी नामकरके एकबडे उत्तम
भक्तलोगोंमे उजागरहोतेभये सोज्ञान और गुणों

कीनिधी मथुरामै निवास करके रात्रीदिन भग
वानके भजन स्मरण मैंहीं लीन रहनेथे एक
दिन भक्तस्वरूप कथाकेबीच इहप्रसंग सुणनेभ
ये कि भक्तसहायक और भक्तसुखदायक कृस्न
परमातमाजोहैं सोसदैव मथुराविखेंहीं निवा
स रखतेहैं तिसपरम भक्त प्रवीनने ऐसाश्रमथा
रन करलिया किप्रेमके मदमें मग्नभयाहूआ
मथुरामें वण वण कुंज कुंज गली गली जमुना

९८
भ०
३

3

केकिनारे नदीनलाउ वाटिका इत्यादिमे जहांतहां भ्रम
न करनेलगा और दीनवंधुकोखोजतेने खोजतेने अन्नज
लका खानपान भी सब त्यागदिया इसप्रकार भूखेप्या
सेको दोदिन वतीत होयगये तीसरेदिन शरीरकके
श्रमसे निरवल हृदयमे चिंताकरताहुआ जमनाके
किनारे वंसीवटकोचला जाताथा तव मारगमे गो
पालरूपधारे हुये बडे कोमल स्याम सरीर और
कमलों के समान नेत्रों की शोभा ।

३

इंद्रके धनुषको लज्जादेने वाली वांकी भृकुटी अर्था
त टेढीभवें लाललाल ओठ तोतेकी चुंचवत नासि
का कानोंमे मनोहर कुंडल तैसेही कुंडलोंवाले
वडे सुंदर चिकने स्यामकेश माथेमे चंदन का
तिलक और सजेहूये पीत वस्त्र अपनीछवीसे गो
पाल वालनिस समय कोट कामदेवके मद और
शोभाको भी निदरतेथे ऐसे पापीजनोंका उद्धार
करने वाले भक्तहितकारी गोपालवालको देख

१८ भ॰ ४ कर मधुस्वामी मनमै हरष भरे हुये प्रेमकरके व्याकु
लन रतनहीं लेकरके अंक अर्थात गोदमै बैठायलेते
भये तब भगवान कृपानिधानने अपनीमायाकोप्रे
रकर भक्तप्रधानको मोहित करलिया हृदयमै भ्र
म जोहै सो छायत होयगया फिर दीनानाथ कह
नेलगे कि भाई तुमने कौनकारन मेरेको पकड
कर बिठायलियाहै तेरे हृदयमै किसकाभ्रमरूप
जोहै मेरेको सत्य करके कहो इसप्रकार गोपाल ४

4

की वाणीसुणकर मधुस्वामी कहनेलगे कि भैया
मैंने तेरेको कुष्ण विचारकर पकड़ाथा परंतु अवमैं
नें हीं चमत्कारदेखा कितूंतो किसी गोपका बालक
है मैंऐसेंहीं भ्रमके वशहोयगयाथा ॥ ३ ॥ चौपाई ।
असकहि दीन नरन तजितासा । भयेलुपत अंतभ
वन प्रकासा । आगलचल्यो भक्त हरषाई । खोजनवि
पुन भक्त सुखदाई । नवनिधि समय नाम भगवा
ना । दीन स्वपन अस वचन वखाना । अव खोज

१८ न कानन कसमोही। मैगोपालबाल वनितोही। जो
भं॰ दरसन दीन्योमनहारी। सोऊ सरूप मोरव्रतधारी। न
५ वनिज हृदय राखि अभिरामा। वसहौनाथ भक्त मम
धामा। दोहा। देविस्वपन अमभक्त वरनिज अभिष्ट
फललेत। मथुरानिवसन वशखेतजि गवन्यो कृस्नन
केत।२। टीका। ऐसे कहिकर भक्तस्रष्टने निसबाल
ककोत्यागदिया नवभवनोके प्रकाशकरनेवालेभ
गवान ततकाल नहोंही लपन होयगये जवदोनव ५

को

धूनिसके नेत्रोंसेभिचहूये तवफिरपड़ी सकपडाकि
इहतो साक्षातभगवानह्योंथे ऐसे समझकर व्याकु
लभयाहूआ तिनँखोजता खोजता आगेवणके मा
रगको चलपड़ा तवतिसको व्याकुल देखकर भ
क्तसुखदायक भगवान रात्रीके समय स्वपने मे
कहनेलगे किहेभक्त अव कों वणविखें मेरेको
खोजता फिरताहैं मैंने गोपालवाल वनकर तेरे
को जो दरसनदियाहै तेसोई मेरा सरूप हृदयमे

१८
भं.
६

धारकर और जायकर प्रवेशपूर्वक मेरे धाममें नि
वासकर इसप्रकार सपनेदेखकर मधुस्वामीभ
क्त अपने मनवांछित फलको पायकर मथुरामें
हीं वासकरता करता शरीरको त्यागकर सहजे
ही कृष्णभगवानके धामको चलाँताभया ॥१॥ इ जा
तिश्रीभक्तविनोदग्रन्थे भगवद्भक्तिमहात्मे
सिंहासिंहकृते भाषाटीकायां मधुस्वामीचरित
वर्णनं नाम सर्गः ॥

६

अथचत्रभुजभूपचरित्रं।दोहा।विदितकरो
लीग्रामइकभूपचत्रभुजनाम।भक्तिमहातम
तासकछुकरहुंकथनअभिराम।चौपाई।अत
सेमनोरमकथासुहावन।पावनभक्तिप्रीतिम
नभावन।होतविरक्तभक्तभगवाना।सेवतअति
थिसंतसनमाना।चारिवोरनिजग्रामसुहाये।
नियतकीनभजनवदनासिखाये।आवहिंप्रतथि
संतइतकाहु।तवजननमोरभेटविनुजाहु।जाति

११२ नदेह्रभूपप्रणकीना।असप्रकारभक्तीमनलीना

भ॰ सेजनपतनिहरषउरछाये।पूजतसंतदेवसव

१ पाये।भोजनवसनवितादिसहाई।करहिंनिरं

तरन्तपसिवकाई।नवदिसोंउकरभूपतिकाह्र

सनेपाछ्रवणअसकीरतिनाह्र।पौराणिकसन

वदनउचारा।धरमाधरमविवेकविचारा।पा

उअपात्रनसूकनताहें।जानिनजानतानकछु

ताहें।नवबोलेपांडिनवरतानी।असनउवि १

नभाषणनृपकानी। तेनरेससहहरिभक्तसुहावा। सा
धुदंभगतलोगनगावा। करहिं अनन्यभक्तिभग
वाना। सेवनअनथिसंतसनमाना। पात्रअपात्र
भक्तिपथमाहीं। भक्तजननकहं सुकृतनाहीं
कुलरूपसबजानिअभेवा। करहिंभक्तिरतसं
ततसेवा। तबनरेसनिजमागटकाहीं। श्रीदाले
नभूपढिगनाहीं। पखोवदनसबभांतिसिखा
वा। तहिवैसलबनिजभेषबनावा। मालामुद्र

११३ तिलककलधारा। ग्रावानामसथरणिपतद्वारा। त
भ० वद्वारपन्दपभवननजाई। दीन्योनामसग्रागमनस्र
२ नाई। भूपसहननमहिषीजनतग्रावा। करिसुजन
सनमानसुहावा। दीनग्रनेक वसनधनदाना
वनरभूपतहिमरमलखाना। श्रीद्वाकरनमोर
इहग्रायो। ग्रसविचारिनिजमानसरोया। दोहा
कानवराटिकलेन इक संपुट धरत सुजान।
वेषनकोविन सुवसुभ पाटपटनलपटान। २

कपटिसंतकहंदेतन्टपसादिरकीनविदाय। सो
प्रसन्नमनलेनतहिंआवनिकटनिजराय॥१॥
टीका। कहतेहैं किकरोलीनामा ग्रामविषें च
तरभुजनाम करके एकभगवानके भक्तवडे
उजागरहोतेभये आवतिनकी भक्तीका संदर
महातमनोहै सो संक्षेप करके कुछगायनकर
ताहूं कैसाभी महातमहै कि जिसकी वडीरम
णीक और सुखपरमानमाकी भक्तीके उतप

११२ न करनेवाली अद्भुतगाथाहै सो चतुरभुज भक्त ।
भ० संसारसे विरक्त भयेहुये रात्रीदिन प्रीतीभक्तीसे अ
३ तिथी साधसंतोंका भजन सेवनहीं करते रहतेथे
3
और अपने नगर की चारोंवोर सेवक जोहैं सो भ
लीप्रकार सिखाय समझायकर राखेहुयेथे कि
जोकोई अतिथी अभ्यागत संत ईहां मेरेनगर मे
आय प्रापतहोये सोहममेरी भेटकराये विना क
दाचित जानेनहींदेवो इहमेरापणहै इसप्रकार
३

भक्तीमैलीन भयाहूआ चत्तरभुजराजा राणी
के सहितनित्य वडेप्रेम सनमानसे संतभक्तोंके
सेवन भजनमैंही लीनरहनेलगा और भोजन
वस्त्र धन इत्यादि सिवकाई जोहै सो प्रीतीरुची
सें सवकरकर तिनको संतुष्ट करताथा तवए
कदेसका कोई राजा तिस चत्तरभुजभूपकी व
डीकीर्ती वडाई सुनताभया तो अपने पौराणि
क अर्थात कथावाचने वाले पंडित सों कहने

११२ लगा किजिस पुरषको पात्र अपात्र का विचार औ
भ० र धरमा धर्मकी कुछ ज्ञानसमझ नहीं है तिसकोकी
४ र्ती वडाई और ज्ञानभक्ती किसी अर्थभीनहीं है इ
सप्रकार राजाकाकथन सुनकर पंडित विद्या
नजोथा सो कहनेलगा किहे राजन ऐसीवार
ताको मुखसे कहना योग्यनहीं है क्योंकि वचतर
भुजराजाभगवानका इष्टभक्त और साधूसरलचित
दंभकपटसे रहितसवलोगोंमें प्रसिद्धहै तिसकेहृदयमें
नउठनेरतनभगवानकी ४

अवरिलभक्तीहै किनिसमै कोई विरल नहींहै औ
र भक्तप्रवीन रात्रीदिन अतिथी संतभक्तोंकी सेवा
मैंहीं लीन रहताहै हेराजन तहांभक्तीके मारग
मै भक्तजनोको चारविचार पात्र अपात्र कुछ सू
झतानहीं है वे तोसरव जगतको हरुम रूपजा
नकर भक्तीमै लीनभयेहूये सबका एक समा
न सेवन सतकार करतेहैं ऐसे पौराणक पंडि
तका कथन सुनकर राजाके हृदयका भ्रमसे

११२ देहनहीं मिटनाभया तिस राजाकीश्रीद्धा लेने के लिये
भ० अपने मागद अर्थात भाटको अनेक प्रकार सिखाय
५ सन्नकायकर तहांभजदिया तबवेभाटवडी चतराई
से अपनावैस्नव भेषवनायकर और तिलक मा
लामुद्रा इत्यादि सबसजाय कर तिस चतरभुज रा
जाके द्वारेपरचलाआया तिसको देखकर द्वारपा
लोंने तरत जाय करके राजाको जणाय दिया कि
महाराज द्वारपर कोई वैस्नव संत आयाहुआहै
५

नवराजासन करके रानीके सहित ननकाल वा
हरचला आया आगे वैस्नव संतको द्वारपर स्थित
भये देखकर दीनभावसे चरणोपर प्रणाम कि
या फिर भलीप्रकार भजन सेवन करकर धन
वस्त्रभूषण इत्यादि देकर बहुत आदर सतका
रकिया चतरभुजराजा जो परमंही चतरथे ति
सके कपटको जानगये कि इह हमारी धीक्ता
करनेकेलिये आयाहै नव हृदय मे विचारकर्के

११२ कानवरातिकजो कौडीहै सो लेकरके संपुटमै रा
भ० खदेई और तिसके ऊपर सेंदर पाटकावस्त्र लपे
५ टकर के तिनकीतारसे भलीप्रकार दृढवांध
कर और फिर कपटभेखी संतको देकरके
सनमानसे विदाय करदिया तब वे तिस संपुट
कोलेकर आनंदसे अपने राजाकेपास आयप्रा
पतभया।। चौपाई। भूपवचन रभजनकरसतकारा
भाटवदन निजविविधउचारा। ते संपुट सादिरहरषाई

धरेओ बहु रिसन मख नरराई । भूप चकित मानस
अनरागा । कोलितास जव देखन लागा । कान
वराटिक जवहिं निहारी । पौरागिक सनभन
तउचारी । पटइहि कर कारण अवकाहा । तव
वोल्यो पंडित उतसाहा । सुनहु नरेस तास चत
राई । जो मागद तव दीन पठाई । तास मालमुद्रा
दिसजावा । वैसव भेष वसेष वनावा । वास्तव
वंदि रूप निजकाहीं । उहो भेष वैसव कलमा

११२ भ॰ ८
ह्रीं। अवन्तपतोर जणावनहेतू। कीनयततनअस
हमति नकेतू। संपुटकानवराटिकदीना। त
वपंपठोन रेसप्रवीना। तमविलोकिकछूहृदय
नथान्या। वास्तवकानवराटिकजान्या। उतवैस
वकलभेषडरैया। वास्तववंदिजानन्दपलेया। सा
युभेषसतनकारकराये। परमववनरन्दपकोनवि
द्राये। हनततनरेसपोराणिकवानी। अतिप्रमो
दमानसनिजमानी। भाष्योअवपंडित तमताहं ८

जावहूवसहिं भूपवरजाहीं। तवमनकावकरहिंक
समोई। पंडितवल्योहूरघवसहोई। जवनरेसमन
मुखउजजआवा। तवमनमानविविधविधिपावा।
होतविदायचलनजवलागा। तवअमभन्योवच
नअनुरागा। भूपजुगल शकशारकलोरे। एक
देहुदायाकरिमोरे। तवनरेसहूरषतशकदीना
चल्योलेनउजमरष प्रवीना। दोहा। नपपेमादि
वआयउज नेन्दप शकविनदान। राघ्योमतनसुष

११२ विविधविधिकीन कथनसनमान ।३। टीका। नव
भ० चतुरभुज राजाका सुंदर सेवन सनकारजोथा
८ सोभाटने भूपकेआगे अनेक प्रकारकेरके कथ
नकिया तिसतेउपरांत फिरवे संपट वडेहररषस
नमानसे निकालकर सनमुखधरदिया नवरा
जातिसको देखकर अचरजके वशभयाहुआ
भीतरसें खोलकर नवदेखनेलगा नवतिसके
बीचके वलकानवराटिक अर्थात एक कोडीथ ८

रीहुई देखपडी इस अदभुतकोदेखकर राजा पौ
राणिककोपुछने लगाकि हेपंडित इह कौन
कारणहै ऐसेराजाका अचरजभये देखकरपं
डित प्रवीन कहने लगा किहे प्रजापाल तूं मे
रीवारताको ध्यान देकर श्रवणकर वेचनरथ
न राजाकेसा भी चतुर और गूढ मरमके जा
ननेवालाहै कि तुमने जो आपने मागद आर्थी
न भाटको तहांभेजा सो तिलक मालामुद्रा इ

११२
भ. ५

त्यादि धारन कर कर वैश्नव भेष वशेष करके वना
य लेता भया और तिस संतभेषमें अपने भाटरू
प को छिपायकर तिसके पास चला गया तब वे
राजा इस भाटके कपटको जानकर संतभेषका
भली प्रकार आदर सतकार करता भया अब
हे राजन तेरे जगावनेके लिये तिस मनीप्रवीन
राजाने अभ्यागतन और कौतक किया कि संपु
टमे वराटक जो कौडी है सो राखकर और पा ५

टकेवस्त्रमे कविन की नारके साथ भलीप्रकार
दृढ़ बांधकर तेरे पास पठायदियाहै तैनेराज
न इस भेदको नहीपाया वास्तव करके संपुट
मे कोशीही जानलिया और इहां तिसराजाने
वैस्नव भेषमे छिपेहुये भाटको पहिचानकर
सनमानसे विदाय जो करदिया तोसोई चम
त्कार भ्रमको चतुर राजाने संपुट मे कोशी
कैसीहै कि जैसे मेरी मीताकेलिये वैस्नवमे

११३ षमैंछिपाहूआ तुमाराभाट आयाथा इसप्रकार पं
भः डितकीवाणी सुनकर राजापरम सुख और आनं
१० दको प्रापतहोयगया और फिर तिसको कहने
10 लगा किहे पौराणक अब तुम आपनहां जावो
किजहांवे सुमती प्रवीन राजानिवास करताहै
देखियें तुमारा तहांकेसा सतकार होताहै औ
रराजाकी आज्ञापायकर पंडित आनंदसे त
हांकोचलपड़ताभया जबमारगको तहत्यक १०

रके राजाके सन मुखजाय पहुंचा तब प्रजापालने
देखकर बहुतही आदर सतकार किया और जब
विदाय हो कर चलनेलगा तब बडी हितकी भरी
हुई कोमल वाणीसे कहने लगा किहे नरनाय
क इह तुमारे देशके और शहरका आधीन सैना
तोताजोहैं सो इनमेंसें दयाकरके एक मेरे को दे
देवो तबराजाने तोताजोथा सो हरष सवेक तिस
कोदेदिया ब्रह्मण लेकरके प्रसन्नभयाहुआ त

११२ हांसेचलपड़ा नवराजाकेपास आयकर तिस नरेस
भ. कादियाहूआ तोता और धनजोथा सो सनमुख
॥ रखकर फिर जिसप्रकार आदर सतकारभयाथा
वेसप्रकटकरके सव सुनायदिया।१। चौपाई। शुक
हिं विलोकि भूपअसकाहा। सुनहेसकुन कव
नतमराहा। कीरसुनतमुख वचनवखाना। को
तुमकोहम भूपसुजाना। इहभ्रमयऐसा सकल
जगलेखा। मैनेतोसरव सुसमयदेखा। असवि ॥

चारिमानस निजगाई। भजहैोकस सकल सुखदा
ई। सुनत भूप अवरज मनमाना। धन्य धन्य जगान्त
पगुणखाना। जोंकर अस खग ग्यान प्रवीना। कू
लसरोज चरन रतिलीना। दोहा। असप्रकार छि
तनाथनित शुकमुख वचनविलास। सुनत सुनत
भा अमरवत कटोअगामभवपास।२। टीका। नव
शुकजोतोताहै तिसको देखकर राजाहृकनेलगा
किहेपंदी सत्यकहो तूं कौनहैं ऐसेराजाकावचन

॥१ सुनकरके शुककहनेलगा किहेराजन तूं कौन औ
भ० रमैंकौन इहलोकसंसारी जगतभ्रमने ग्रसाहुआहै
१२ मैंसरव चराचर अर्थात जड चैतन्य सृष्टीको स्व
स्वरूपहीं जानताहूं ऐसे विचारकर हेप्रजापाल
तुमभी सर्वसुखदायक कृष्णभगवानजोहैं नि
नकाही भजनस्मरणकरो और संसारमें अभय
होयकर विचरो इसप्रकार शुकके वचन सुनक
र परमअचरजके वशभयाहुआ राजा हृदयमें ।

कहनेलगा कि अहोधन्य धन्यहै जगतमैवे राजा
कि जिसके ज्ञान विचारमै परम चतुर और हृस्ल
भगवानके चरनकमलोंकी प्रीतीभक्तीवाले म
खसे वचन विलास सुनताहु आ राजा जगत
की महां उरगम फासीको तोरकर तिसचतुरभु
ज राजाके प्रसादते देवताके समान अमररूप
होयजाताभया।२। इतिश्रीभक्तविनोद ग्रंथे भ
गवद्भक्ती महात्मेभाषाटीकायांचतुरभुजभूप

११२ चरितवर्णनं नाम सर्गः ॥
भ·
१३

13

अथरतनावलीचरित्रं । दोहा । अवअंदभजन मनह
रन कल करहुं कथनकछुग्यान । भक्तमनहोत
म श्रमनश्रम कूलचरनरतिदान । चौपाई । मान
सिंहनृपअनुजसहाया । माधोसिंहनामजगगा
या । तासुपतनिरतनावलिनामा । अग्रगन्यपति
व्रतालिलामा । प्रेमसिंहनांकरसुतचाहू । सम
रचंदवीक्रतनथाहू । भक्तजनतेंदयरमरनतेहू
अनिथिमंतसेवनहविजेहू । जननितासरन



१२९ नावलिजोई। अवसर एक भवन निज सोई। निसि
भ० अवसर सिजा पौढानी। सखी चतुर चापत पग पा
१ नी। हे हरि हे प्रभु नंदकिशोरा। राधा कमल भक्त चि
त चोरा। हे यदुपति केशव भगवाना। हे नंदनंद
न कृपा निधाना। मंद मंद अस वदन अलानी। ने
दा मी चापत पग पानी। रानी सुनत नाम अस वा
नी। बोली उर प्रमोद सुख मानी। इह तव वदन ज
वन अस वाहा। भामनि मंद मंद धुनि काहा। कछु

आनंद अहेतक देखो। जनु विलपत कथन नवले।
खो। अभय सत्य निज वदन उचारी। मोसों करहु प्र
कट अवधारी। तेअस वचन सुनत अनुरागी। बो
ली वदन विनय रस पागी। स्वामि नित मङ्ग कवन
असहका। जो महि वार वार मख हका। कानत मरे
मान सहित लोगू। रहहु मगग ण आपन सुख भोगू
तव महिषी पुनि पुनि हरषाई। सकुन लगी प्रीति
सरसाई। मासों हेत कथन नवधारी। करहु वेग

१२१ निजसकुचनिवारी। हासीदेखिकपिरूपविरानी।
भ० बोलीवदन मधुरमृदुवानी। साधुवदनउपदेससु
२ ह्रावन। मैपायोमहिषीजगपावन। राधाकृस्नमें
त्रसुविदाई। हारनहृदय उरनउरनाई। रटहुनि
रेंतरसैमृदुवानी। ज्ञानहेतनकछुनाहिनरानी।
हरषीतासवचनसुनिरागी। श्रवनेंतुम सुनहो
बडभागी। करहुनश्रमसमोरीसिवकाई। तबतो
निरनभक्तिजडराई। अमभाषनमहिषीमनभावा
२

लीनललितउपदेसमसुहावा। राधाकृस्नमेंउरधारी। भईसुभक्तिनिरतन्दपनारी। दोहा। सेवनअतिथीसंतजन कथाकीरतनगान। सादिरधरमसुकर्म कलकरहिंसुविरकविमान।।टीका अवकृस्नभगवानके चरन कमलोंकी प्रीतीके देनेवाला और संशयभ्रमके नासकरनेवाला भक्तीका मनोहर और अदभुतमहातमजोहै सोयथामती कछु कथनकरताहूं मानसिंह

१२३ राजाकाछोटाभाई माधोसिंहजोथा तिसकी रतना
भ० वलीनाम करकेराणी प्रसिद्धहोनीभई सोकैसी
३ किपतीव्रता स्त्रियोंविषे प्रथमगिनतीवाली औ
रधरममें प्रवीनथी तिसका प्रेमसिंह नामकरके
पुत्र भगवानकाभक्त धर्मकर्ममें चतरवडा जैसेइ
किजिसने इंद्रयोंकोजीताहूआथा और रणमेंप्र
धानसूरवीर अतिथी संतोंकी सेवा भक्तीवाला
मानो परमव्रतधारी और धीरजकाधाममहानाभ

३

या एकसमय तिसकीमाता रत्नावली अपनेघ
रमै सुखपूर्वक सेजापरविराजीहुईथी और एक
चतुरदासीजोथी सो मंदमंद पाऊं चापरहीथी
तिससमयवे मुखसें बडीकोमलवाणी करके हे
हरी हेप्रभू हेनंदकिशोर हेभक्तावनचोर हेराधा
कृष्ण हेजदुपति हेकेशवभगवान हेनंदनंद
न कृपानिधान इसप्रकार उचारणकररहीथी
नववाणी तिसके मुखसे औसेमंगलके देनेवा

१२३ लेमनोहर शब्दको सुनकर हृदयमैं परमआनं
भ० दमानकर कहनेलगी किहेभामनी इहतेरेमुख
५ मै मंद मंद कैसीधुनी सुणपड़तीहै कुछ अहेनक
सा आनंदहै किजिसकाकोईकारण नहींजानपड
ता मानोविलत अर्थात बाउलेकेसमानतेराइह
कथनहै अवत हे प्यारी अभय होयकर सत्यसत्य
मेरेसों प्रकटकर किइहतेराकैसा उच्चारणहै इस
प्रकाररतनावलीका कथन सुनकर सखीवडे ५

नेंमवचनोंसे कहनेलगी किहे स्वामिनी तैंनेक्या
ऐसाछुपाहै जोमेरेतें सत्यकरके वारवार पूछती
है क्याकुछतेरे चित्तमेंलोगोंकाहित अर्थात भला
ईहै तेंतोनिज अपनेंही भोगसुखमें मगण रह
तीहैं नवराणी हरषके वशभईहुई प्रीतीसेंवार
वार पूछनेलगी किहेसखी अवतेंविलव और
संकोचको त्यागकर मेरेको इसकाकारण श्री
चरसुनायदे ऐसेराणीकी श्रद्धारुची देखकर

१२२ दासीवडी मधुर श्रीर कोमलवाणीसें कहनेलगी
भ० किहेस्वामिनी मैनेइहसरवजगतको पवित्रकरने
५ वाला श्रीर हृदयके पापरूपमतीको हरनेवाला रा
पाक्षरमंत्रउपदेशजोहै सोसंत महात्माके मुख
से श्रवण कियाहै श्रवसोई सुखमानकर प्रेमभ
क्तीसें रात्रीदिनरटन करतीहूं श्रीर नोकोई कार
णनहींहै इसप्रकार तिसका वचन सुनकरके
राणी परमहरषको प्रापतहोय कर कहनेलगी

किहेबडभागन सखी अवतेनेंतुमेरी सिवकाईको
त्यागदे मैही तेरी सिवकाई करनेकेयोग्यहूं क्यों
कितैने निरंतरकरके जदुनंदनभगवानकी भक्ती
मे लीनहै आजतेरेसमान संसारमे कौनधन्य
औरकौन सुजसकापात्रहै औमेशलाघा बडाई
करकर राणीने त्वरतनिसनेंही पवित्रउपदेश
जोहै सोलेलिया तबराधाकृष्ण मंत्रको हृदयमे
धारणकरके रत्नावली राणी भक्तीके सुखमेंऔर

१२२ भ॰ ६ आनंदमै मगण होयजातीभई और अतिथी संतों ॰
कीसेवा धर्मसुकर्म कथा कीर्तनभजन सुमरण
इत्यादिकचीसें नित्यअधिकतें अधिकहीकरनेलगी ।
चौपाई। वहुरिहृदय अभिलाषनहोई। श्रीमनमद
नमुहनप्रभुजोई। सोतिनकरदरसनमनहारू। क
वदेखिहुंभरिनैननचारू। असउरगुणनशीलमणि
भावा। तासकुसुमनरानि विरचावा। अतिवचित्रकछु
वरनिनजाई। नखसिखललितमनोहरताई। तास ६

दिवसनिसिप्रजनसेवा। लगीकरनजनभक्तिप्र
भेवा। कृस्लसूपउरसंतनजानी। सूजनतकायकरम
मनवानी। समयपककोउसंतमहाना। श्रावासद
ननामसकरिप्याना। सोहरिभवनभक्तिश्रनुरागा
गागघनन्तत्यकरनकललागा। संतविरक्तभक्तभ
गवाना। जन्हिकेविनस्तएकसमाना। नासुदेखि
मन्हिवीहरषाई। श्राईभक्तिप्रीतिसरसाई। यद्यपि
कीननिवारणदासी। नद्यपिमिटीनप्रेमपयासी

११२ भं॰ ८

होतनिगममग भक्तिनिधवारी। विरतविपाकपावन
ब्रतधारी। संतनकहंरतिदीनजिमाये। श्रुतितंबो
ल ललितप्रचवाये। करिप्रणाम श्रुतिभवनसिधा
री। देखिसचिवनहिंसकासहारी। रूपकहंलिखो
पत्र अभिमानी। धरननाथरननावलिरानी। वंस
मयादसकलनिजखोई। साधुसमाजलाजगतहो
ई। करतनृत्यगायन अनंसकी। वरजितमिटहिं
ननिउरकलंकी। भूपदेशविदाकरणारिसकीना ॥ ८

प्रेमसिंहसुनतनामप्रवीना। तोलोआयगयेतनपपासा। ते
पत्रिकदीनेसाकरनासा। वहुरिरेोखमुखवचनउचारे
प्रथमनिआपजसदीनहमारे। वाचिनप्रेमसिंहकरि
गवना। आवावेगहरषिनिजभवना। जननीकहंप
त्रककलत्रोरवी। वीचकथनकरिहरषवसेरवी। दो
हा। मातभक्तिवदेव असजाउपज्योसुरवमोहि।
हरषविवसभासिथलकर लेखि सकहुं किमितो
हि। २। टीका। फिरहृदयमै इह अभिलाषा करतो

१२१ भई किश्रीमदनमोहनभगवानजोहैं मैतिनकाम
भ॰ नोहर दरसन इह आपने नेत्रभरकर कवदेखूंगी।
८ ऐसेकथन करकर वडीसुंदर शोलमणीमंगवाय
कर जिसकीदिव्य मनके मोहनकरनेवाली भग
वानकी मूरतीजोहै सो वनवावतीभई कैसी भी व
चित्र मूरती कि नख सिखसें लेकर अंतनहीं सू
क्षम औार सुंदर किजिसकी शोभा उपमाकाकुछ
पारनहीपायाजानाथ्या राणी भक्तीमनमानसे राजी ८

दिन तिनपतिसका भजनसेवन करनेलगी और संत
भक्तोंकोभी कृष्णरूप जानकर तिनकामन वचन
कायासे नित्यसेवन सतकारकरतीभई एकसमय
तिसके घरमै आपनेशिष्यसमाजके सहित एकसं
तमहात्मा आयप्रापतभये सो आवतेही भक्तीप्री
तीसे भगवानके भवनमै प्रणाम करके सुंदरनृ
त्यगायनजोहै सो करनेलगे औरवे कैसेभी महा
तमा भगवानके चतुरभक्तथे कि जगतसेविरक्त

१११ भ. ५ औरनिसकामकंचिनमाटीजिनकोएकसमानथी
तिनकोदेखकरहरखकेवशभईहूई राणीभक्तीश्री
तीमेंआयकरप्रणामकरतीभई यद्यपिदासीनेनि
वारणभीकरी तद्यपिसोनहींमिटी प्रेमभक्तीके
समुद्रमेमगणभईहूई वडेसुंदरदिव्यभोजन वन
वायकर वडेआदिरसतकारसे विठायकर तिनको
जिमायदेतीभई औरसुखश्रुद्धी के लिये सुंदरपा
नभी अचवाय देतीभई तिसतें उपरांतफिर प्रणाम ५

करके अपने घरको चलीआई नवराणीकी ऐसीसे
न सिवकाईको देखकर मंत्री अर्थात वजीरजोथा
सोमूढ सहारनहींसका अभिमानीनवरनराजा
को पत्रिकालिखभेजताभया कि महाराज रत
वलीराणी अपने वंसकीलज्जा मर्यादाकोत्याग
कर और अभयहोयकर संतसमाजके बीचप्रकट
बैठकरके नृत्य गायनकर्तीहै और कलंककी
खानी। ऐसीनिडर निसंक होयगईहै किवरजने

१२१ सें मिटतीनहींहै तबराजापत्रिकाको बांच करके
भ० कोपसें लालरंग होयगया इतनेमें प्रेमसिंहतिस
१० कापुत्रजोथा सोभी तहां आयगया राजानेवे पत्रि
का तुरततिसकेहाथमेंदेदई और आपकोपकेव
चनोंसें कहनेलगा किदेखो इसअधमनीने हम
कोजगतमें कैसा अपजसदियाहै तबप्रेमसिंह
जोभगवानका प्रवीनभक्तथा तिस पातीकोबा
चकर तुरतअपने घरकोचलाआया औरआवने १०

ही माताको ऐसीपत्रिकालिखी किजिसके वीच आनं
द और हरषके विना दूसरी कोई वारतानहींथी कह
ताहै किहेजननी तेरीपवित्रभक्ती देखकर मेरेश
रीरके रोमरोममैं ऐसाहरष और सुखछायगहो
गयाहै किजिसकेप्रभावसें इहसिथलभयेहूये
मेरेहाथ तेरीभक्तीकी अनंतमहिमाको कुछलिख
नहींसकतेहैं ।२। चौपाई। धन्यधन्यजननीवडभागी
जहिअसतुमचरनलवलागी। इहहरिभक्तिसर

१२३ वस्तखकारी। सोतबलीनमानउरधारी। तांतेतवस
भ॰ मानकौनाहीं। स्वक्रतिरूपग्यानजगमांही। स्वनरुज
॥ ननिकवडूंकिनरराई। तोपंकरहिंकोपअधिकाई। तो
ननजरुआपनवनमाता। लोकअलोकरुचिरस्वखदा
ता। असप्रकारजवपत्रपठावा। मानबाचिनयननउ
रलावा। भाषतआजधन्यइहमाई। जहिअसपुत्रभ
क्तजउराई। असकहिपठेआपत्रसुतनकाही। तातध
न्यतवसंसृतिमाहीं। असउपदेससजासमहिदीना १२

गुरुसमजननहूं कृतार्थकीना। मैननतनहूं सततनिज
व्रतधारा। करहिंजनककिनाकोपतमारा। तम
हिंहोव कल्यानसहाई। असउरदेहिं सुमतिनि
तछाई। राधाकृस्नप्रसादतमारी। होहिंतातनज
गकीरतिभारी। प्रेमसिंह हरिभक्तसुहावा वाचि
तजननिपत्रहरषावा। अतिप्रमोदमंगलकलना
हू। लागेकरनभवनउतसाहू। फैलिगईपुरक
रचहूंबेरा। धुनीमहांननिसाननघोरा। राजसु

१२२ ननग्रस शावदग्रपारा। हृदयचाकितग्रसवचनउचा
भ रा। इहह्यकांडमंगलकहिगेहा। देखहुजायवेगा
१२ भतपहा। तवभतप्रेमसिंहपेंग्राये। इछनकवनहे
नसननराये। महारानिमहिउत्रपठाया। सोउतसाह
कीनमनभावा। भतनग्रानवद्मोक्रुछग्राई। म
हारानिजनम्यासनवाई। प्रेमसिंहउनसवनवकी
ना। मंगलमोदप्रमोदनवीना। न्रपहिंसनतदाक
रिसछैना। पठईनासवधनहितसेना। प्रेमसिंह १२

देवनधरिथीरा। उथ्यानभयोकरनरणवीरा। नव
ग्रसस्वविकस्योसमफाई। पुरवकटोनाकनर
राई। ग्रवष्योणनसनमार्जनदेहो। हथाकलंकलो
कजनिल्लेहो। बोल्योनवनरेमसग्रसवानी। इह्नक
समरहिंसविवग्रवरानी। दोहा। नववोल्योम
वसविवग्रस इह्नग्रगमकुछराय। शारहलइ
हिभवनग्रव प्रेरनदेह्नपठाय। सोभ्यावनसग
राजइतकरहिंमाणहनपङ्ग। विनुग्रजासनरना

१२२ घउरमिटहिंसकलसंदेहू । भूपहनंतस्रानंदउन्नत
भ॰ लागेणावदनवखान । सगामससहजश्हूकरवहुतव
१३ यतनस्हजानप्रधान ।१। टीका । फिरकहताहै कि
धन्यहै तुंधन्यहैं हेवडभागन जननी जिसको ज
डनंदनभगवानके चरनकमलोंमे ऐसीप्रीतील
गीहुईहै हेहणाकरनी सर्वसखोंकेदेनेवाली हा
स्पपरमात्माकी भक्तीजोहैं सोतैने निरंतरकरके
हृदयमे धारनकरीहै तांते तेरेसमान सजसका १३

पात्र और पुत्रवान औरदूसरा संसारमैकोईनहींहै हे
जननीतूं श्रवणकर अबजोराजा तेरेपर अत्यंत को
पभीकरै तोतूंइह लोकपरलोककेसुखदेनेवाला
अपनासुंदर व्रतजोहै सोकदाचित नहींत्यागना ३
सप्रकार जब प्रेमसिंहने माताकोपत्रिका लिखक
रकेभेजी तोजननी तिसकोबाचकर हरषसे गद
गद वाणीभईहुई कि कोईवचनमुखसे निकलता
कोईनहींनिकलता तिसप्रेमकीपत्रिकाकोलेकरके

११
भ.
१४

कवीनेत्रोंमें लगावती और कवीहृदयमें लगावतीहै
और कहतीहै अहोआज इहमाताजगतमें धन्यहै कि
जिसका इहपुत्र जदुनंदनभगवानका ऐसाचतुरभक्त
है इसप्रकार कथनकरकर पुत्रकीवोर बडेहरषसे
मकी पत्रिकालिखी किहेतात तूं जगतमें धन्यहैं कि
जिसने गुरुकेसमान ऐसाउत्तमउपदेशदेकर मेरे
कोकृतार्थ अर्थात सफल करदियाहै पुत्रमें आप
ने इसव्रतको यद्यपि हमारापिताकोपभीकरेगा। १८

14

गल अपने आपको सफल जानकर और जगतके
विकारों से रहित ज्ञानध्यानके सहित होयकर सर्व
चराचर सृष्टीको कुल परमात्मा का रूपही जानने
लगा इसप्रकार बिलमंगलकी भक्तीको एक छंद
गाथा जोहै सोई इसे उक्त कथन कीगई है इसकेसी
भीगाया है कि आनंद और मंगलोंके देनेवाली श्री
र कृष्णभगवानके चरन कमलोंमें प्रीतीप्रेमके अ
धिकर करनेवाली है २५ चौपाई ॥ अब नरहिभक्ति

75

अथ रंकाबंकाचरितं । दोहा । अघमैमल मन हरन
कलकथा श्रवणसुखदान । ज्ञान प्रकाशन कर
हु कछु कथन दलन अभिमान । चौपाई । पुंडरी
कपुर विदित सुहावा । रंका नाम शूद्र इकगावा ।
बंका नाम पतनि मन भाई । सो पतिव्रता विदित स
वगाई । तिनकर सर्व धन्य उदमाना । उपजी हृदय
भक्ति भगवाना । यथालाभ संतुष्ट विचारी । जा
य जंगल कानन व्रतधारी । इंधन सुषकलेन ७

१२ रआई। विक्रय करत भक्ति सरसाई। तांकरमिल
भं॰ हिं अन्न कछु जोई। पावन करि विभक्तजन सोई
१ अस प्रकार व्रत धारण कीना। विठुलदेव रटन म
नलीना। सेवन अतिथि संतगनसेका। रंका अन
गामनिकलवंका। असतिनकर व्रत हविर स
हावा। नामदेवकर मानैसभावा। नसकतजो विक
रन अनुरागे। विनयकीन असभँवन आगे। रंका ग
वंकाजन निजकाहीं। देहु विठुलधन त्रिभुवन १

लाई। नवखपने प्रभुभक्तउबारे। नामदेवकहै वच
नउचारे। जबरहहु प्रीत जाहिं वणकाहीं। मिलिहैं
नहीं इष्ट इनकाहीं। नमकाहु वैस्नवसनजाई।
इनकहुं कबहु विलोकनभाई। दोहा। नामदेवभ
गवानअस सुनिनदेशसुखदाइ। तिनतें सरवज्ञा
यवणरसोसि इमनउराई।१। टीका। अवहृदय
के अभिमानके नास करनेवाली और ज्ञानध्यान
केदेनेवाली श्रवणसुखदायक और सुंदरमनो

१०२ हरगाथाजोहै सोगायनकरताहूं पुंडरीक ग्राम
भ० विखें वंकानामकरकेएकशूद्रहोताभया और
२ वंकानामसें प्रसिद्धवडीसुंदर और पतीव्रताथ
मैमै प्रवीन तिसकी स्त्री होतीभई तिनका पूर्व
लापुन्यजो उदयहूआ तो हृदयमे भगवान कृपा
निधानकी भक्तीजोहै सो आयकरके उतपन्नहो
यगाई आताकाल नित्य वण विखें चलेजाते और
नहांसे सूखीलकडियां लाकर पुरमैवेचनेनव २

तिनका सो कुछ मोल प्रापत होता तिसका अन्नला
यकर भोजन बनाते फिर तिसमैसे यथाशक्ति कुछ
साधब्राह्मणकोभी देकर पीछे भक्तीप्रीतीसे आप
पायलेतेथे तिनका परीश्रम नथा कि जो कुछ प्रापत
होता तिसीमै संतोषधारकर मगन रहते और
रात्रीदिन विठ्ठलभगवानके चरनकमलोंको
भजते और अतिथी साधब्राह्मणका सेवन सत
कार करते रहतेथे बंका जो है सो मनवचन का

१०२ याकरके रात्रीदिन आपने रंकापतीकी सेवाभक्ती
भ॰ मैंही लीन रहतीथी इसप्रकार तिनका सुंदरव्र
३ तनेोथा सो भक्तनामदेवजीके हृदयको आतसे
करके प्यारा लगा तब तिनके प्रेमके वश भये हु
ये भक्तप्रधान वरीनंम्रतासे हाथजोडकर भग
वानकृपानिधानके आगे विनती करनेलगे कि
हेदीन हितकारी हेदीन उरवहारी इह रंकावंका
दोनो आपकेही चरनोकाभरोसा राखनेवालेना
३

पात्रमारे हष्ठभक्तजोहैं सोदीनवंधु दयाकरके इ
नकोधनदीजिये क्योंकि इनको आपके संतभक्तों
श्रोर अतिथीदीनजनोंकी सेवाभक्ती करनेको
अतसेकरके प्रीतीहुवीहै सोदीनानाथ धनकेवि
नानंहो होय सकतीहै इसप्रकार नामदेवजीकी
विनती सुनकर भगवान स्वपनेमें कहनेलगे
किहेभक्तसष जब इहदोनो स्त्रीभरता आताका
ल होते वणको जावेंगे तहांतिनको धनजोहै सो

१२ अवश्य मिल जावेगा तब किसी वैस्नव पुरषके सा
भ. थ जाय कर तहां बण विखें तिनको देखते रहो अ
४ से भक्तपाल भगवानको आज्ञा पाय कर नामदेव
जी प्रातःकाल तिनतें प्रथम ही बण विखें जाय कर
कहीं वृक्षों की ओट में लुपत होय कर के बैठ रहे।१
चौपाई। मिल्यो एक वैस्नव बण काहू। भाख्यो नामदे
व सन ताहू। देखहु तुम सहं भक्त भगवाना। रंक बंक
रहु जगत सजाना। मैं इनकहं चित देवन लागी

आवाईहाँ सदननिजत्यागी। सनमखवेदेन उचित
पैनाहीं। आसविचारि निजमान समाहीं। हमन
मनहव लखन इनठांही। इनहितराखि दखम
गमाहीं। तैनिज करहिं कवन चतुराई। दम्पति
उभय विपिन इतआई। आसकहिराखि इख मग
मोई। वैवैमौन लखत गतिहोई। तवसरव रेका
वनआवा। देखिदखा मानस विसमावा। त्रिण
समान लखि आगाल धावा। कहिविचार पुनि।

१९२ पाछिल आवा। लागे करन अकालिन भूली। तव
सु. वेंकामान सम्पद फूली। आई पतिहिं देखि अनरागी
५ काह करहु अस धक्कन लागी। नव वंकाश्रम वदन
उचारा। ईस्तो विघनवित परसो अपारा। इहि कह देखि
विपुल उखदाई। उपजत हृदय लोभ अधिकाई।
असविचारि मानस निजनेही। करहु अकादिन मे
हनि पही। नववंकाश्रम वदन वखाना। इहितें अव
घसितु पतिमाना। होहिं कवन संसार सहावा।

५

सनिरंका ग्रसम्रकटश्रलावा। कामक्रोधमदलो
भमहाना। इहिविनतैं उपजन फलनाना। पिताउ
त्रपतनी पतिमारै। श्रानश्रानसौंवैरसंभारै। इह
सवकहं संसति उपवदाई। कहिकटिमरहिं क
लह मरताई। भामनिसत्य नहिंनसंदेह। विद
नभक्तिमरा केटिकपद्ध। वंकासनन वेग श्रकु
लानी। पतिकरगहित पानिनिजपानी। चली
सिंहजिमिग्रामसमनायन। करनिविकलवनहो

१९२ भ· ६ ह्निंपलायन । दोहा । तव वैस्नव जन देखि ग्र
स नामदेव विसमाय । वदन प्रसंसत विविध
विधी विप्रन ग्रग्रपथग्राय । सशाकभार ईधन
विरचिधरत पंथलपतेहु । विनश्रम कबहूंकि
लीन इन विपुल महातम एहु । १ । टीका । तव
तहां वनविषे नामदेवको एकवैस्नवजन ग्रा
यमिला ग्रौर कहनेलगा किहे भक्त नामदेव
नेवहो इहवंका वंकादोनो भगवानकी भक्तीमे ६

प्रवीनजोहैं मैतिनको धनदेनेकेलिये अप
नाघर त्यागकर ईहां वणविषें आयाहूं परंतु
हेभक्त सनम्बविहोयकर देनाउचितनहींहै
इसमै इह योगपैहै किइनकेनिमित्त धनमार
ग अर्थात इसतेमै राखकर हमतम लुप
नहोयकर बैठरहैं फिर देखिये इहदोनोसही
भरना वणमै ईहां आयकर अपनीका चत
राईकरतेहैं ऐसे कथन करकर और मार्ग

१०२ मै इच्छा करायन ताखकर आपमौन धारकर्के
भ. न्यारे लपन होयकर वैनरहे नव प्रथम वण
८ विवेरंका चलाआवनाभया सोनहोमार्गमे
धन देखकर वडे अचरनको प्रापन होयगा
या परंतु शिलावत अर्थात घासके तिणके
समान जानकर त्यागकरके आगेकोचला
गया फिर ऐसे विचारकरकि वंकापीछेमें
आवनेवालीहै मत इसधनको देखकर ही ८

स्वभावसे लोभायमान होजावे रंकाभक्त नहीं
आयकर तिसधनको पृथवीमे छिपावनेलगा
इतनेमे नहीं रंकाभी आयगई ओर पतीकोदे
खकर हरषसें पूछनेलगी किप्राणनाथ ई
हां क्याकरतेहो नवरंकाकहनेलगा किप्यारी
ईश्वरमारगमै वहुत साधनपडाहूआहै ओर उ
हकैसा उखदायकहै किजिसको देखकरहृ
दयमे लोभ मोह मद इत्यादि विकारोंकाप्रभा

१०२ वषयिकहोजाताहै ऐसेविचार करहेहितनकारनी
भ० मै इसकलेशकेकारण को पृथ्वी मैदबायरहा
८ हूं नववंकाकहनेलगी किप्राणनाथ इसथन
की वडी अपारमहिमाहै कहिये कि इसतें संसा
रमै कौनअर्थ सिद्धहोतेहैं पत्नीका वचनसुन
कर रंकाकहनेलगा किइसथनतें सोई अर्थसि
द्धहोताहै किजोमैने तेरेको पहिले कथन कर
दियाहै अर्थात काम क्रोध लोभ मोह मद धो ८

क इत्यादि नानाप्रकारके कलेशोंके उत्पन्नकर
नेवालाहै और इहमंद पिताधुत्र स्त्री भरता भ्राता
भ्राताका परस्पर वैर विरोधकरवायकरवायकर
कटवाय कटवायकर मरवायदेताहै हेप्यारी
इसमै कुछसंशय नहीहै इहधन भक्तीके मार
गमै प्रकट दुखकेदेनेवाले विकट कांटेहैं ऐसे
पतीका कथन सुनकर वंकाजोहै सो व्याकुल
होयकर अपने हाथसे पतीकाहाथ पकडकर

१०२ अैसेलेचलतीभई किजैसे सिंहकाभय मानक
भ. र व्याकुलभईहुई हरननी वणकोभागजाती
५ है इसप्रकारतिन रंकावंकाको धनके लालच
सें विरक्तदेखकर वैसवके महितनामदेवजो
थे सोपरम अचरजको प्रापतहोयगये ओरति
नकीभक्तीको अनेक प्रकार शलाघावडाई कर
कर फिरदोनो आगेहीं वणके मारगमेचलेआ
ये तहांसूखी सूखी लकडियोंके दोभार वनाय

कर और तिनके मारगमें धरकर आपत्तपनहो
य करके वैठरहे और परस्पर कहनेलगे कि
जो कदाचित इनरंकावंका भगवानके प्यारे भ
क्तोंने इहलकड़ियोंकेभार श्रमकेविनांही ले
लिये तोहमको इसका ग्रंनंनहीं महानम हो
वेगा।२। चौपाई। जवरंका वंका तहांआये। परे
भार इंधन मगपाये। काहूजनन जत संचित
कीना। पतिश्रम हृदय गुनत नंहीलीना। आ

१०२ पनलेन चलेउरधाई। स्तमरत हृदय जगलन
भ० उराई। नामदेव वैस्नव नवनीके। करिकविवि
१० धुल सोचनिजनीके। विनवर वस्त वसन गृह
10 माहीं। सादिर आयदेन तिनकाहीं। वंकादेखि
क्रोधभरि नयना। बोली वदन कठिन असवय
ना। लेहुउठाय वसन तिनकाहीं। इहकसधसो
सदन ममम़ाहीं। नतर अबहिं डरवाद उचारी
करहुं आन कछु दसानमारी। लगेसहनंस क १०

रन मनुहारा। नवबंका निजपतिहिं उबारा। दी
नाइनहूं नाथ जुरवि श्राई। हमहू चलब श्रब सद
नविहाई। श्रसकहि पतिहिं लेत रिसपागी। श्राई
सदन बहिर बड़ भागी। नामदेव जुतजननन श्र
पारा। राखिकारि श्रनेक मनुहारा। तिनकर दे
खि विविध हठकीना। रंकाएक श्रलप पटलीं
ना। श्रानवसन बिनदीनसि फेरी। नामदेव श्रस
श्रद्भुतहेरी। तिनकर भक्ति श्रलौकिकरागा।

१०२ भ० ॥ बारबार सुखेबरणनलागा। ललितरूपवर बेस
बधारी। कृपासिंधु प्रभुभक्तउधारी। देखिभक्तनि
जभक्ति सुहाई। भयेप्रसन्नभक्त सुखदाई। सोरभ
क्तकर लच्छणएहू। भनत बदन असदीन सने
हू। असप्रकार इह चरित सुहावा। रंकबंकदं
पति मनभावा। जबलगरहे जियत संसारा। रहे
भक्तबर बिगतबिकारा। सोरठा। अनतजन नि
जकाय। सुमरत बिठुल देवप्रभु। लीनपरमप ॥

दणाय। भक्तिप्रसाद अजामाविन्न॥३॥ टीका। जवरे
कावंका नहां आये नवमारगमे सुकीलकडियोंके
पडेहूये देखभारणाये हृदयमे विचारकिया किइह
किसीने यतन और श्रमकरकर लकडियोंकेभा
र वनाय करके रखेहूयेहैं हमारा इनसे क्या प
योंजनहै ऐसे विचारकर आपने लकडियोंके भा
र आपवनायेंर और सीसपर उठायकर हुल
हुलसटतेहूये नगरकोचले आये नवनामदेव

क

१२ औरवे वैस्नव परस्पर विचार कर कर धनवस्त्र इ
भ॰ त्यादि लेकर रंकावंका तिनकोधनवस्त्रोंके सहि
१२ त घरमै आयेहूये देखकर कोपसे लालनेत्र कर
कर वडीकठोरवाणीसे कहनेलगी किइन आप
ने धनवस्त्रोंको उठायलेवो मेरेघरमै कोंलायधरा
रिवैहूं नहींतोमै अवीउरवचनोसें तमारी असीउर
दशाकरूंगी किनमजानोगे तव नामदेव और वै
स्नवदोनो वडीकोमल वाणीसे तिसकी अनेकप्रका

र खुसामद करनेलगे परंतु वेकवमाननीथी पती
को कहनेलगी किनाथ इनोंनेहमको अत्यंतकले
शादियाहै अवघरको त्यागकर किसी और अस्था
नको चलेचलो इन्हहमको ईहांरहने नहींदेतेहैं
ऐसेकहतीहुई पतीकोलेकर बडेकोपसें घरके
वाहर निकलआई तवनामदेवजीने अनेकप्रका
र नंम्रताके वचनोंसें खुसामद करकर तिनको
घरमेंराखा फिर रंकाने तिनका हठदेखकर कि

१०२ इनोने वहुतही यतन और कथन कियाहै एक ।
भ० छोटासा वस्त्रलेकरके और धनवस्त्रजोथे सोसब
१३ फेरदिये तवऐसी अदभुतनिसकामनाको देखक
र नामदेव तिनकी अलौकिकभक्तीकी वारवार
शलाघावडाई करनेलगे औरसुंदर वैस्नव रूपधा
रेहुये क्रपाके समुद्रभगवान भक्तसुखदानजोथे
सोभी अपनेभक्तोंकी अत्यंतभक्ती देखकर परमप्र
सन्नभयेहुये दीनमनेहूी कहनेलगे कि मेरेमन
१३

करके दृढभक्तजोहोतेहैं तिनके ग्रहीलक्षणहोते
हैं इसप्रकार इह रंकावंकाका मनोहरचरित्र मै
ने कुछगायन करदियाहै वेभक्तउत्तम जवल
गजगतमै जीवतेरहे तवलग सवविषयविका
रोंसे निर्लेपहीरहे ओर जवपरलोककोजानेकी
इछाभई तोविठ्ठलभगवानको स्मरतेहुये य
त्नकेविना सहजेही कायाको त्यागकर भक्ती
के प्रसादसे परमपदजोहै तिसको जाय प्रापत।

१२ भयै ।३। इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवद्भक्ति
भ० महात्मे मिह्रांसिंहकृतं भाषाटीकायां वंका
१४ वंका चरित वरणनं नाम सरगः ॥

74

१४

अथसंतनामचरितं। दोहा। संतनाम इकविदन
जगतत्रिगुणभक्तभगवान। जहिंसंतन सेवन
सदाह्रदयकृविरहविमान। चौपाई। भिक्षाटि
नकर्धरमसहावा। करहिंतोष संतन मनभा
वा। जोंकेअस कविकविर सनेहा। जाहिंसंतज
निलक्षनगेहा। अवसरएकग्रामवडभागी। कि
योगवन भिक्षाटनलागी। पाछिलदक्षनतवि
यतसरीरा। आवासदनसंतमतिधीरा। तहिंमा

१०४ मनिकहूं छबनलागा। तवबोलेकहांभक्तवरभा
भं० गा। सोसठनिपरम कोपवसहोई। निठुरवचनभ
१ नतजनवोई। तयोचलैलक्षमसभक्तनसारा। असप्र
कार जवभाम उचारा। चितउदविराग न वचनअस
तासा। चलेपासठनन फिरिसंन निरासा। आवतमि
लेपातासतियनाहा। देखिसंतत्वध्यानमगनामाहा।
करिप्रणामअसविनयउचारा। चलहुसदन क
रुणायअगारा। यथाउचितमोपेंवनआई। करहुं

संतसादिरसिवकाई। सुनतसंत असवदनवखाना
सवनहिउचित सदनतवजाना। नियत्नमारकटु
वचनअलाई। चुल्हमरमसवदीनसुनाई। कारति
कलहु करकसाभारी। संतरामतवगिराउचारी
नांकरकथनसमसवसाधु। नमहिंमयोकछु हृट
यममाहू। चुल्हसिद्धिकर संननकारण। मेरुहकी
नविपुलश्रमधारण। तांतेचलहुसंतनममेरा।
ननहैहृदयसकलसंदेहा। असकाविकविसव

१४ विविधबाखाना। लागोअकमदनमनमाना। य
भं० थाग्रचित ज्ञतसीनसुहावा। खानपानमनमान
२ कराबा। वियत्नतकरिशपामसुखपाये। बहुरिसं
तबरकीनविदाये। दोहा। नवतैंसंतनकृपातैं
संतरामसुभदाम। भयोनदय श्रज्ञादिकहुयति
समानअभिराम। ५ टीका। एकसंतराम नाम
करके जगतमैं प्रसिद्धभगवानके वडेचतुरभ
क्तहोतेभये कैसेभी महातमा किजिनकी राग्रीदि

ननित्य संतोकेही सेवन पूजनकरनेमे प्रीती रुचीलगी
रहतीथी सदाभिक्षाटिन परमकररकर संतोंकोभो
जन जिमावने और प्रसन्नकरनेथे हृदयमेपहीव
नथारनकियाहूआथा किसेरेघरसे संतजनकवी
भूखेनाजावें एकसमय सोवडभागी संतरामजी
आपनेनियमअनुसार आसांतरमे भिक्षाटिनकरने
केलिये नोगाये नोसीक्षेभूखेसे व्याकुलभयेहूये
एकसंतमहात्मा चरमे आयप्राप्तभयेहूये एक

१०४ संतमहात्मा स्वर्गमैं प्राप्त आपनभये और भक्तकी स्त्री
भ० से पूछनेलगे कि हे सुशीले तेरापती संतरामभक्त
३ सोहै सोकहांगयाहै ऐसे संतका वचन सुनकरके भा
मनी परमकोपकेवश होयकर बड़ेकठोरवचनोंसे
रोयकर कहनेलगी कि मेरेसे क्या पूछताहैं वेतमा
राभक्त चुल्हमैंगयाहै जब इसप्रकार भामनी कथ ने
न किया तब तिसका कठोर वचन सुनकर हृदय
मैं बड़ीहानी गिलानी मानकर उदासीन और निरास

विनभयेहूये संतमहात्मा तरनपिछलेपाउंहीं फि
रकर तिसके घरमेवाहिर निकलआये और आप
ने मारगको चलपड़े तरजातेजाते अकस्मातरस्ते
मै आवतेहूये संतरामिलपड़े सो संतमहात्माको
भूखे देखकर प्रणामकरके विनतीकरनेलगे कि
हे कृपानिधान घरमेचलिये तहांजैसीवनपड़ेगी
नाथ आपकीसेवाभक्तीकरंगा तरदरशनकरके
संतकहनेलगे किभाई अवतमारे घरमेजाना

१०८ भ० ८

योग्यनहींहै क्योंकि तुमारीस्त्रीको हमनेहरलाथा ।
किसहशीले तुमारापती भगवानकाभक्तकहांगया
है वेनाकवद्यायकर कहनेलगी किमैंकयाजानती
हूं भक्तगयाहै छलमें ऐसे तिसका वचन सुनकर
मैंनेजानलिया किइहतोकोई वडीभारीकरकसाहै
और कलहा जोलड़ाई तिसकामूलहै तवसंतनाम
जीकहनेलगे किहे महात्मा तिसका कथनतोस
व सत्यहै तुमको हूकनहींपडा मेइहभिदाटिनका ८

श्रम जो धारन किया है सो हे महात्मा केवल तुम्हरि
ही के कारण ही किया हुआ है तो तेनम हृदय का
सोच संदेह त्याग कर मेरे साथ घर मैं चलो इस प्रका
र कथन कर कर फिर सनमान पूर्वक तिस संत
महात्मा को अपने घर मैं ले आये तहां प्रीती भक्ती
सें जैसा योग पथा- तैसा ही सब खान पान करवाय
दिया तिससें उपरांत फिर स्त्री के सहित वारवा
र प्रणाम कर के तिस महात्मा को विदाय कर दि

१०४
भ०
५

या नाभादासकहतेहैं किहेसंतो नवते संतराम
के घरमें संतोंकीसेवा भक्तीके प्रसादतें अन्न
धनकी कवीटोटनहीं आवतीभई धनीकेसमा
न सदैव भंडारभराहीरह्या ।। १ ।। इतिश्रीभक्तवि
नोदग्रंथे भगवद्भक्तिमहात्मे भाषाटीका
यां संतराम चरित वरणनं नाम सरगा: मीहांसिंहकृत

५

ग्रथत्रिलोचनचरितं दोहा। रामचरन रति देन सभ
संसयतिमरविनासि। करहुं महानम कथनसुव
निजमतियथाप्रकासि। चौपाई। स्रवनकार इकवि
दतमहाना। नामत्रिनयन भक्तभगवाना। व्रट
नपीतिजनभूखणभाये। तैसेहिं लेतवेननापाये।
करतसंतमजनसिरकाई। भोजनादिसवदेहिंजि
माई। संतसरोजनचरननितनेहु। विषयविरक्तभ
जवरनेहु। समयपकतहिपरकरवाक। भयोव

९५ भ· १ चननिजसुतनाविवाहू। छटनआभरनहेतनसुहावा। ख
णिकारचैनमनबुलावा। प्राउमरगोकरननसुवि ना। देतनासुन्दपवदन वखाना।
शीघ्रछटहु भूषणशभभाई। लेतसदननिजचल्या
सिधाई। सोमंत्रुषधरतउनसाहा। आपुसंतसेवन
रनराहा। छटनआभरनहृदयभुलाना। जगलदि
वसजव शोषरहाना। तवनरेसतनहि बोलिपठावा।
जानिअकाजत्रासवसआवा। देहुआभरनभूपउवा
रा। तववितनयन करिहृदयविचारा। भाख्योरहन

शेषकलुराई। त्रतिथेन्नाम देहुसवल्पाई। ग्रमकहि
सदनभीन वसग्रावा। गुननकाजन्नगादिवसनक्का
वा। इहकसवनहिंग्राभर्ननीके। कविकविसोव
भक्तनिजजीके। परिहरिसदन विपुनमधजाई।
रहेग्रामसवसवपुषडराई। सुमरत हृदयभक्तभ
यहारे। कृपानकेतजननरखवारे। सोचविसोच
न मोचवसेखी। दीनानाथभक्तनिजलेखी। स्वणी
कावजननहूपधराये। न्पकहूंदेनग्राभर्णग्राये। म

१५
भ०
२

णिगणज्ञविभूषणनाना। धरेभूपसनमसुखसन

माना। टीका। अलंकार इत्यादिविरूप अदभुतन

वलप्रकाश। जनवदनलागेपा वदन भननभूप

मनहारा।२। टीका। एक और श्रीरामचंद्रभगवा

नके चरनकमलोंकी प्रीतीकेदेनेवाला और सं

शयरूपी अंधेरेकेनासकरनेवाला भक्तीकासुं

दरमहातमजोहै सो यथामतीकछुगायनकर

ताहूं एकअलंकार अर्थात् सनारजानी चिला

२

चननाम करके प्रसिद्ध भगवानका बडा प्याराभ
क्त होताभया सोपीतीमें बडे सुंदर शोभावाले भू
षण बनावता और तैसेही अपनी चतुराईके का
मशअनुसार बेलनाका मंजरीलेलेताथा और सं
तभक्तोंकी सेवाकरता बडीभक्तीभावसे घरमे
लायकर भोजनजिमायदेताथा प्रयोजन इह
कि तिसको संतनसिवकाइसे अत्यंतहींप्रेमथा औ
र जगतके विकारोंसेंभी विरक्तथा एकसमय

१०५ भ० ३ तिसप्रकारराजाजोथासोअपनी कन्याकाविवाहर
चावनाभया तवराजकुमारीके भूषणवनानेकेलि
ये त्रिलोचन भक्तकोही बुलायभेजनाभया सोराजा
की आज्ञापायकर तुरतचलाआया तवप्रजापा
लने तिसको नानारतन और कंचिनदेकर भ
लीप्रकार समझायदिया किइनकंचनमणि
योंके भूषणोंका वडीउतावलसे त्यारकरके भ
रेपासलेआवो विलंबनहीकरना औसे ।

३

राजाकावचन सुनकर त्रिलोचन तिनकेचिनरतनो
कोलेकर प्रणाम करके अपने घरकोचलाआया
तहांआवनेही कंचिनकेसहित तिनरतनसमाग्रीयों
को एकसंदोषमें डालकर आप निरभयहोय कर
के संतोंकीसेवाभक्तीमें लीनरहनेलगा वेभूषणों
कावनायकरलेजाना राजाकाकामजोथा सोहृदय
सेविसारदिया जबकार्जकेबीचदोदिनबाकी रहि
गये तबराजानेतिसको बुलायभेजा त्रिलोचन

१५
भ॰
५

हृदयमै अकाजजानकर भयसे थरथर कांप
ताहूआ बलाआया नबराजाकहनेलगे कि भैया
लावे भूषण देवो त्रिलोचन उरताहूआ हाथजो
डकर विनतीकरनेलगा कि महाराजकछ थोड
साकाम बाकीरहताहै तीसरेपहरकोसबलेआ
ऊंगा राजानेकहा किजावो विलंबमतकरो ती
सरे पहरको सबभूषणलेआवो नवतोभयके
वशभयाहूआ त्रिलोचन घरकोचलाआया हृद ५

यमे विचारकरताहै किहेदेव अवकावनके वी
च सबदोदिनहींबाकीवहेहैं मेरेसें इहमृषणकि
सप्रकारबनेगी ग्रैसेसोच करकर भक्तप्रवीनअ
नेको डरताहुआ घरकोत्यागकर कहींवणवि
खे जायकर शरीरकोछिपायकरके वैठरहाग्रौ
रराजाके भयसें कांपताहुआ स्वासस्वास भग
वान कृपानिधानको सुमरनेलगा किहे भक्त
भयहारी हेदीन हितकारी प्रभुअवइस समय

१५ मेरेतमहीसहायकहो नवसंसारीशोकोंके नाश
भ० करनेवाले भगवान अपनेत्रिलोचन भक्तकामे
५ च कलेशदेख करके तत्काल त्रिलोचनकारूप
धारकर राजाकोभूषणदेनेकेलिये चलेआये न
ह्रो आवमेंही मणियों करके जडे हूये नानाप्रका
रकेभूषणजोहैं सोमनमानसें राजाकेआगेराखदिये
नवमिनअरभुतनवीनसीं प्रकारकेमनोहर भूषणों
कोदेखकरके प्रसन्नभयाहूआ राजातिनकेचरणेकेओर

जउनेकी अनेक प्रकार श्लाघा करनेलगा ।१। चौपा
ई। बारबार अस भूप सिराई। करि तोषक ललीन मं
गाई। देत विनय रूपक रमांही। कीन विदाय रूप राषि
नरनांही। दियो इक सकल छिति पन जोई। आये ले न
भक्त गृह सोई। साधू अतिथि दीन जन जाती। विरचि
पाक व्यंजन बहु भांती। सादर सब कहं दीन जिमाई
रह्यो भक्त गृह जन सब छाई। नव जाने जिद्ध भक्त उ
वारी। सो भक्तवर लख्यन भारी। जा सहेतन स

१५ बकैनककीन्ना। ग्रसगुलिचलेहबनडखरीना। स्ना
भ॰ पुरूपयरिकाननयाये। नास्त्कपानृतवकूलपाला
६ ये। नवकसईह्नलपवजननाहा। सदननमारकवि
वडनसाहा। नेवनसाधसंतसमुदाई। मोदयमोद
कहिनकछुनाई। मैकूलीनभोजनकछुपहा। हे
नविभक्त हविरलबगेहा। नमनध्यानमैहिजानि
पराये। नांनेलेहभक्तककुपाये। वहूविनायनिज
मदनसहावन। देखिलेहुडतसबमनभावन। अस ६

सनिलेतपाक हृदयघाई। पावकसमबरनसिरनाई।
उरपत बहुरि मदन निजआवा। देखिललित ऋतु
उत सब बिसमावा। सक्रोमिनभामदिसेंपहा।
भयोकवनकलमंगलगेहा। त्रियेसनतमानसवि
समानी। वे[illegible]ीवदन अरपदीवानी। कामसनिअत
पद्यामबैरानो। जोपतिहृदयभ्रांति भ्रमठानो।
नृपतैंपगिनेपभवलावा। आपुबैविसबपाकर
वावा। आनिघि संतरुजजाँजिमायो। देविनवमन

ति

१५
भ०
८

हेतनमजनगणियो। नवविनयननिजमानमजाना।३
हृस्मवहृमुपाकीनभगवाना। टीका। नववैतैदिनदिन
अधिकनित हमलकमलपदनेहु। लगेपाकरनह
छभक्तिजनपविहृविहृदयसंदेहु। देखहूदीनन
घालप्रभकानकरहिंसंभार। भक्तहेतलीनोकवि
रस्वरनकारवपुधार।२। टीका। ऐसेप्रजापालजो
है सोवारवार नमस्कार करै करकर फिर धन
वस्त्रइत्यादिअनामदेकरके तिस कौनकोसहनार ८

कोविदायकरदेताभया तवबेवानाकाहव्य पायक
रभगवान आपने त्रिलोचन भक्तके घरमे तैसेही
रूपसेचलेआवतेभये तहांआयकर आतिथीदीन
जनोको वुलाकरवेधनजोथा सोवाटदिया और
अन्नकेसमान वडेदिव्य भोजनवनवायकर सं
त सजन औरजातीकेलोग प्रीतीसे विठायकर
सबजिमायदिये दीनवंधूने जिसप्रकार आपने
भक्तका हितजाना तैसेही सबकारजकिया

१५ उत्सव और मंगल जो है सो त्रिलोचन के घर में प
म॰ रिपूर्ण होय रहा था तब भक्त हितकारी भगवान
८ ने अपने हृदय में जाना कि यह जो मेरा भक्त त्रिलोच
न कि जिनके न मित्र भैने इह कौतुक किया है व
णविते वधा से अत्यंत व्याकुल होय रहा होगा
ऐसे विचार कर दीनों के दुःख हरने वाले प्रभु तुरत
साधु रूप धार कर भक्त के पास तहां वणा विवेच
ले आये और कहने लगे कि भाई तू इहां कौन का

रणक्षिपकर वैठाहैं तेरेघरमै नोवडामंगल उतसा
हहोयरहाहै साधसंत अतियोदीनब्राह्मणइत्यादि
सवभोजन पायपायकर प्रशंसायचलेजातेहैं तहांके
आनंद उतसाहकी कोई महिमानहींकरीजातीहै
इहदेखिनिस यत्नतें मैभीकुछ भोजनलेआयाहूं
हेभक्ततं मेरेको भूखिंहेंडापडताहैं तोतेसंकोच
कोत्यागकर कुछभोजन पायले औरफिर आप
ने सभघरमै जायकर सेदेह मंगल और उतसव

१५ जोहैं सोदेखे ऐसेस्तवनकरि विलोचनने शोभनचलेलि
भ० या ऐसे मनमें कल्पनाकरिके चरणोंकोप्रणाम
८ करके माथलिया फिरउसकोहृदयमा चरणकोलगाक
रकरमें चलाआया नहींवशमें आवें दर्शनसब देखक
रके परम अचरजकोप्राप्त होयगया तबपत्नी
स्त्रीसे पूछनेलगा किहेप्यारी कहो इसघरमेंकैसा
मंगलआनंदहै ऐसे पतीका वचनसुनकरके भा
मनी अचरजकेवश होयकर कहनेलगी किहे ८

पतीनेगीवडी क्याकुछ पूपह्मामकरके वावमीहो
यगईहै जोतमकोहृदयमे श्रेमाभ्रमछायनहोय
गया देखोप्यापही तमनायकरके राजासेधनला
ये और आपही वैवकरके मवकारजकिया ज
हांलन अतिथीसायश्रालखण और दीन जनथेम
वको रुचीमनमानसें देजन जिमाया और जग
तमेंवसराजमलियाहै अअमेरेसे कैसे धार्मिक
छतिहोयकर रहुतांहैं विचरामे कौनअंगल

१०५
भ०
१०

है नवतें त्रिलोचनने जानलिया कि इहसबकौतक
भगवान कृपानिधानने आपहींकियाहै ओरमे
रेको अपनीकृपाकरके जगतमें सजसकापात्रव
नायदियाहै नवतें त्रिलोचन भक्त हृदयके सबसं
शय त्यागकर दिनदिन दृढभक्तीसें अधिकतें
मा अधिकही कृसपरंत्माके चरनकमलोंविखें प्रे
मप्रीतीकरनेलगा नाभादासजीकहतेहैं किहे
संतो भगवानकृपानिधान संसारमें क्यानहीं।

10

१०

१७ करतेहैं देखिये कि भक्तकी भक्तीके वशहोय
भ॰ कर दीनबंधुने स्वरनकारसोनारहै तिसका
॥ शरीरधारणकरलिया और जगतमें भक्तका
कारज सफलकिया ॥१॥ इतिश्रीहृदयकिगोट
ग्रंथे भगवद्भक्तिमहात्मे शिवंशिल्हकृत
भाषाटीकायां त्रिलोचन चरित्रवर्णनं नाम
सरगाः ॥

॥

अथगोविंदचरितं । दोहा । जासुसुनतउरखेदोख
सबनासहिंसकलविकार । सोअसभक्ति प्रभाव
कछुकरहुंकथनसविस्तार । चौपाई । श्रीमथुराह
रिभवनपुनामी । तासुइचसभभक्तसुखरासी । जन
निजनकमानसअभिलाषा । जेविं[illegible]विव
नहिराखा । छिनसुपननैंतिनविनसनआई । देस
देवभवनसिवकाई । हरिसु[illegible]निसउसंजसुहाई ।
वालनसमनहिमानसभाई । आनवालसमनहि

८९ मनक्रीडा । वाह्नलकरनवालगनबीड़ा । सोकिमि
भ॰ करहिं भक्तसुखदाई । सैकालकविनवरूतलभा
१ ई । तिनमनतें ध्रुनरगानवच्छाये । सनातनरूव औ
वनसुहाये । जातिबालरूपतिभगवाना । हा...
लासकरनकविमाना । ...मसप्रकाररूहविमूरतिसं
गा । लेललनरूतबालमनुअंगा । सोयकलुकज
वादिवसविहाई । तेमूरतिबालकसुखदाई । लगी
करनक्रीडामनहरनी । बालकसंगमोदमनभानी
१

देखेहिं एक बालक कलनाहू। पबहिं नट षिग्रानट का
काहू। एक दिवस बालक कहू रघुराई। ताको निकट भ
वन हरि आई। बालकेलि करि विमान सगाता। प्रभु क
हूं बहरि खेलावन ल... कवन सभ गवान कृपा
ला। आगे खल पक हाथ धरि बाला। ... रकबचाहि
रसाला। लगे बन नक्षीडा कल बाला। ... आहू
परस्पर गाकी। भेके केलि वन ... समाकी। हरि
गुविंद कहं गोविंद बाला। जीति गयो कल के लिर

१०८ माला। अजय अजय जहि विदलवखाना। कवि
म० को विदवुथवेदवुखाना। बालभक्तनिजभक्तिप्रभा
२ ॐ। सोजीतेवरअवरनराॐ। हरनाकसलंकापति
केसा। खवहारवणाविसरादिविधसा। आनप्रवावि
समरवलवाना। जीतेअजितनासभगवाना। सो
असदेनअवलविभीते। विनभक्तन जगकाइन
जीते। दंडरवंडनवलेनपगाद्ये। कुंजविहारिभवननि
जआये। पाछिलबालगहनअभुलागी। आवाया
२

यथीरजनत्यागी। नवसूजकंजनलीननिवारा। बाफ
भयोबालकमरुद्वारा। दोहा। कहिरोदन महकत
वदनलागेपा गतिमदान। कवहुंनतनिकसेगे व
हिर नवदेखहुं नवचाण॥२॥ टीका। श्रवजिसके
श्रवणकरनेतें शरीरके देखवदृख श्रैरविकारम
व नासकोप्राप्तभोत गेहैं ऐसेसर्वदुःखोंके
नार भक्तोंके प्रेमाधीनहैं ईश्वरव्यासमनीकद्ध
गायनकरतहैं श्रीमद्रागजीमें भगवानकेभ

१९
भ०
२

वनका पुजारी जो था तिसका शव वंसी वालेभ

गारीका भक्त होता था [illegible] माने वही रुची

अभिलाषा से [illegible] ईश्वर तो आया

सो वालक वालपन ही से पिताके साथ भवनमें

जायकर भगवान दीक्ष वालदानकी सेवाम

की ओ होती रहती थी सो देव ताररहमाया सोभ

गवानकी मनोहर वडी कोमलमूरती तिसको

वालकोंके समान ही भावनीथी ॥ ॥

३

और ध्यानसे करके प्यारी लगनीथी नववेतिसम्हरनी
केसाथ और बालकोंकेसमान क्रीडाविलासकरने
चहताथा परंतुवेभक्त सुखदायक कों करकर
नीथी बालक रात्रीदिन मोहनभयाहुआ जिसीके
प्रेमसेमगला निजभगवानके भवनमें ही रहता
था दीनबंधुकी नरहीजोतह रूपज्ञानकर जिस
केसाथ खेलेंन आवकामीत्रसकरनेको व
हुत अभिलाषा करतीहुईप्रणाम इसप्रकार से

१९ बालक आपही भगवानकी मूरतीके साथ खेल
भ· नायकरता सब कितनेक दिन बतीत होय गये तब
४ वे बालँस खेलायक कृपासिंधुकी मूरती वशीकृ
क· ही और आनंदसे बालकोंके साथ क्रीडा विलास
करने लग पडी अर्थात खेलने लग जाती भई परं
तु तिसको कोई बालक देखता या औरोंकी दृष्टीमें
नहीं आवती थी एकदिन वे पुजारी का बालक
गोविंद नामा खेलने की रुची मानकर भगवान

केभवनके पास आयकरके स्थितहोयगया औरमधु
रमधुर स्वरसे भगवानको वाहर आवनेकेलिये बु
लावनेलगा तबभक्तसनेही कृपानिधान तिसको
स्वरपहिचानकर तवनन्दकोलासाबालक रूपधारक
र हाथमें गेंद औरखंडींलियेहुये आयकरके ति
सगोविंद बालकके साथ खेलने लगपरे औरवद
उअरूवाला किनेहारजावे तिसपरचढकरके
सवारीलेनी तबखेलमें खेलने खेलने सर्वहट

१९ चटकीजाननेवाले गोविंदभगवानकोवे पुजारी
भ० कापुत्र गोविंद बालकजोथा सोजीनगाया नाभा
५ दासकहतेहैं किहेसंतो जिसभगवान कृपानि
धानको कवि पंडित विद्वान औरवेद पुराण
सव अजय अजय करके प्रकट गायन क
रतेहैं किकिसीसें कवीजीतेनहीं जाते देखिये
अवसो चराचरसृष्टीके पालकभगवान वा
लभक्तने अपनी भक्ती के प्रभाव सें ॥

५

सहजे हीं जीतलिये हैं और हरनाकस लंकापतीरा
वण राजा कंस खरदूषण और त्रिसरादिक बडेभा
रीदैत्य इननैंभिन्न औरभी अनेक महावलमानजो
थे जिस अजीतभगवाननें जीतलिये सो ऐसेअव
ल शत्रुओंकोभयदायक भगवान जगतमें भक्तों
केविना और किसीने नहींजीतेहैं तव अपनीगै
ट औरखंडीलेकर हारेहुये कुंजविहारीभगवा
न धायकरके तरत अपने भवनमैंचलेआवतेभये

और तैसेही गोविंद बालक भी शीघ्रनको त्यागो हु
ये तिनके पकडनेकेलिये पीछे पीछेही धावता
चला आया और बालभगवानको पुकारने लगा
नवमजकोंने जिसको निवारण करदिया तिनका
वरजित किया हुआ गोविंद जोहै सो भवनके द्वा
रपर स्थितहोयरहा और मनवसे समकता हुआ
रोदनकर कर गारीदेनेलगजाता भया और
कहनेलगा कि कबहूं तो बाहर निकसोहीगे तव

मैं तुमारा बाल आपहीं देखलेउंगा ।।५।। चौपाई । मे
टनि खेवन तरो खेव महोई । गयो न सदन बालवर
सोई । तब जननी इव करन अपारा । गई लेन निज
रुचिर अगारा । कविसमएं बालक रिस सोई । क
रत न पाक विघन विन होई । यद्यपि तन तेन विविध
सम काना । तदपि न दीन न फल जल पाना । तब भ
गवान निज भजक काही । कियो प्रबोध स्वपन नि
सिमांही । इह गोविंद वाल वर मोरा । सत्वा महा

१९ भं॰ ८

दमनजनहितमोरा। मोरहेषनिजमानमतमाना। त
वहुं नकीनयत्न जलपाना। नहिकालेसकरमैहुं
नपावा। ईहांभवननैवेदसुहावा। यवतेंनमहूं भक्त
हरषाई। मोरनदेसतविरहितपाई। इहिवालक
कहूं प्रथमजिमावहू। कहिपाछिलनैवेदलगा
वहू। देखिस्वपनसुजनकहरषावा। उठ्योप्रातभो
जनविरचावा। सिसुहिंजिमायप्रथमसनमाना
हरिहिंवहुरिनैवेदलगाना। तवभगवानभक्त

हितकारी। सोऊ सरूप बाल निज धारी। बालके
लि रतनकमल निधाना। लगे बिलास करन भगवा
ना। एक दिवस तनि भवन प्रवीना। बालक गावन
बहिरभर कीना। पाछे बाल रूप भगवाना। लीने
श्रवक हृद फल पाना। गोविंद कहे प्रभनाउ न ला
गे। कृपासनेह हरखे रस पागे। सोऊ ले तन फल
श्रवक सहावन। लागे प्रभु कहे करन चलाव
न। दोहा। श्रवप्रकार सेवक प्रभू बारबार सम

१९८
भ०
८
वार। करनअरकफल परस्पर खेलन जगालय
हार।३। टीका। ऐसेकथन करकर गोविंदबाल
क कोपकेवशभयाहूआ पाऊंकेनखसे पृथवी
को खुनमरहाहै औरघरकोनहीगया नवनि
सकीमाता आयकर वडे हठ यतनसेपकडक
रके घरकोलेगई परंतुवे अपने कोपकोसम
रकर व्याकुलचित भयाहूआ कुछअन्नजल
खानपान नहींकरताभया यद्यपि माताने व

८

इतनहीं समझाया तद्यपि वे कुछ नहीं खाता भया
तव दीनबंधु भगवान तिसकी दशा देखकर अ
पने पुजारी को रात्री के समय स्वपने मै प्रबोध
करने लगे अर्थात समझावने लगे कि हे भाई
इह गोविंद नामा तेरा पुत्र जो है सो मेरा अत्यंत भ
क्तप्यारा और सज्जन हितकारी है तिसने हृदय
मै मेरा द्वेष माना है तिसीतें अन्न जल इत्यादि खा
न पान कुछ नहीं किया और इहां तिसके कलेश

१०९ अ. ९ सैंभवनविखे मैंनेभी नैवेद्यादिकछु भोजन न
हीं पायाहै तातेंहू इनिके आवनेतक वडेहित
और सुखकेदेनेवाली मेरी आज्ञापायकर इस
गोविंदवालकको प्रथमहीभोजनजिमायदिया
करो तिसतें उपरांत फिरमेरेको नैवेदलगाया
करो औसेस्वपनको देखकर इजकजोहै सोह
रषसेउठखडाभया औरआनाकालहोनेही भोज
न वनवायकर पहिलेश्रीनी सनमानसैंवालकोजिमाय
कर ९

फिर आयकर प्रेमभक्तीसें भगवान कृपानिधान
को नैवेद्यलगाया तवभक्तहितकारी भगवान
अपना सोईबालकरूपधारकर आयकरकेबाल
कोंकेसाथ अनेक[illegible]रके हासविलास करक
रखेलने लगजातेभ[illegible] एकदिन पुजारीका बा
लकअपने घरसेंनिकलकर नगरकेबाहरच
लाआया तवतिसके पीछेंही बालरूप भग
वानभी भवनसे निकलकर दौरे दौरे चले

१९ भ. १०

आये और आवतेही अरकजोआकहै तिसकेफल
तोडकर औरलेकर तिस गोविंदबालकको बडे
हरषसनेहसेमारने लगजातेभये औरसबेबालक
भीतैसेही तिन आकके फलोंको लेकर आपनेहा
थोंसे बालभगवान की ओर चलावनेलगा इस
प्रकार दोनो सेवक और प्रभु बारबार बडे हरष
उतसाहसे तिन अरक फलोंके परस्परवार कर
कर खेलमैमगणभयेहये बालविलासका आनं १०

दस्तखनोर्है मोलेरहेय्ये ।२। चौपाई । जवजननीगो
विंदसहाई । पकविलेननिजसदनसिधाई । उगाय
पानभोजनसवरखाई । लखीमातजनन प्रीतिजिमाई ।
भोजनजेवन गोविंदकाहीं । सोवतसमएभयोमन
नमाहीं । जबप्रभुग्रकहतफलमाको । मैसव
पाजलदीनविनाको । प्रवविनुमोवचत्रमैपावा
दीनजननिकहंकथाखचावा । इहप्रस्वर्थ सुनत
महतारी । कहिनसकतकछु वदनउचारी । सिव

१९
भ॰
॥

हिंसौच जलदेतकराये। बहुरिप्रीतिसुत पाकजि
माये। हसरदिवसप्रातसुनभावा। रविशजकनै
वेदसहावा। नावन्योजन्व हरिभवनलगावन। त
बकीन्हो बालक मगछावन। महिसुरव गैवेद
जिमाई। पाछेपभहिं लगावहुजाई। जोसुरवश
भपायसिधरहीं। तोमोरेवोजनवण परहीं।
एकलजात दयानिधिभागी। अवसेरत ना
हिन ममलागी। सुनिसुजक सिस ॥

॥

काहिंनिवारा। तेनतरवरनंकरअसदारा। अंतहाति
सनकजननजाई। ताहजननकमनकथ्याहनाई। अव
तेंहमनजावहहरिभवनां। इहहुमारवालकमगग
वना। सवबहींनैवेद्यलाये। मंगातविनभगवंत
दिखाये। हनिअनचितअसवालअवारा। जनक
बुलाय~~बुलाय~~कीनविसकारा। तवसिसअभयजन
कसनवानी। वोलेवावदनकदनकरूवानी। इहहु
रवभोननअसपाई। चलेनातममसंगविहाई। ष

१९ निरखोजेपथमिलननसोई। मोरेभ्रमनकबिपुलडरव
भ० होई। जनकसुतन असगिता ग्रुलाई। अवननाहिंतो
१२ हिसुवनविहाई। वहिरभवनअववैठिसुरावन।
तवनिजकरहपाकसुतपावन। दोहा। रुचिरभव
न भगवाननिजलेहिं सुभोमंलगाय। तदनन्तर
तव मंदिरमँविचरहुजिनकहिविजाय॥३। टीका।
न तवखोजनी खोजनी गोविंदकी माता आयकर
तिसको पकड़ करके नवलघरकोलेगई तहांजा

१२

यकरवशीभीतीसे दुगधभात इत्यादि खानपानक

रावनेलगी तवगोविंदको हृदयमै स्मरणभ

या कि अहैमैनेबादिसा किराहृआथा परंतुजब

भगवानने मेरेकोवृक्षाककेफलमारे औरउपरसे

मैनेभीमारे तवमेरेको जलकेसाथ सोचकरने

का कुछभी स्मरणनहींरहा अर्थात सोमेरेकोभ

लहींगया अवमैने सोचके विनाही भोजनपा

यलिया इसप्रकार रहगाया गोविंद अपनीमा

१०८
भ०
१३

ताकोखवावताभयो तवजननी स्तनकरके अवर
नकेवशभईहुई कुछवेलतंईमकी पर्यंतबालक
कोनलसे भलीप्रकारसेोच करायकर फिर प्रीती
से विठायकरके भोजन जिमायदेतीभई जबदूस
रेदिन तिनकासेवक पुजारी प्रातःकालही प्रीती
भक्तीसे नैवेद्यचायकर और सनमानपूर्वक था
लमेराखकर भगवानके भवनकोलेचला तववा
लकने आयकर मारगजोरसन्मामेहै सोरोकलिया

१३

कि प्रथम इसनै देव मेरे को जिमायकर फिर पीछे जा
यकर भगवान को भोग लगाके क्योंकि जो भगवान
पहिले भोजन पाय लेते हैं तो मेरे को उजीकते भी
नहीं अकेले ही भागकर वण को चले जाते हैं पीछे मे
खोजता खोजता व्याकुल होता हूं तब पुजारी ने ह
नकर बालक के कथन को वकवास सही जानकर
तिसको निवारण करता भया अर्थात हारता भया
परंतु वे तिसका हारा टरता हटता नहीं है अंत को

१८
भ०
५

हारकर पुजारी आयकरके तिसके पिताको सब वृत्तां
त सुनायकर कहने लगा कि अबसे आगे तुम सुनातो
मैंतो भगवानके भवनमे कदाचित नहीं जाऊंगा क्यों
कि इहतमाशावर मेरेको अहूनसुनाता है भगवान
को नैवेद लगानेमे पहिलेही इह खानेको मांगता
है और मारगरोककर आगे भवनको जानै नहीं देता है
इस प्रकार बालक का अनुचित श्रा।
चार सुण कर ॥

पितानेपासबुलाय करके तिसकावहुत विसका
रकिया नवबालक अभयहोयकर औरसबखेसेरोय
कर पिताको कहनेलगा किपिता इहभगवानजोहैं
सोकथाकहतेहैं कि आपप्रथमही भोजनपायकर
और मेरासंगविहायकर हमा मेरेको अकेलाछोड
कर धायकरके वणकोचलेजातेहैं फिर जबमेरेको
जानेलगताहै तो दीनदयालमेरेको कहींमिलतेन
हींहैं इसतेमैं भ्रमताभ्रमता व्याकुलहोयजाताहै

१०८ ऐसे बालक की बाणी सुनकर पिता प्रसन्न भया हु
भ॰ आ कहने लगा कि हे पुत्र अब भगवान कृपानि
११ धान तेरे को छोड़ कर नहीं जावेंगे तूं भवन के बा
हर बैठकर आनंद से भोजन पा और तैसे ही भव
न के भीतर इहदीनबंधु भी सुख से भोग लगा
य लेते हैं तिस ते उपरांत फिर प्रसन्नता पूर्वक
कहा तुमारे मन की रुची हो तहां जायकर के वि
चरो और आनंद सुख लेवो ।३। चौपाई । यद्यपि १४

जनक बिबिध मनुकाबा। तदपि बाल पाकनहिं पा
वा। एकलजात मोहित जिण्ह। उपज बाल असह्
दय संदेह्। मै भोजन अवनाहि नपावहूं। इनमन
बाल केलिहित मावहूं। समकहि बाल बेग उविधा
वा। जनक देखि मान नसविसमावा। लखि उनमन
बाल निज काही। उपजसी चिंता मन माहीं। तव
भगवान स्वपन निसि दीना। तसहिं कथन सब वैम
कीना। इहि बालक कहं प्रथम जिमावहु। पुनि मा

९९ भ॰ १८

16

रैनैवैदलगावहू। देवसबापनपूजिकसुसपाई। सिख
कहूंसबथमसपाकहरखाई। लगेदेन संजनतखुनरागा।
श्रुहगोविंदभक्तवडभागा। बालरूपतेंहृदिप्रयंता
रहोसिभक्तिनिरतभगवंता। गृहस्थयरमसेवत
सनमाना। करतसप्रीति यजनभगवाना। भोगत
अखिल कामसंसारू। भक्तिप्रसादभक्तब्रतधारू
दोहा। सुमरतकमलकृपायतन अंत तजन निजका
य। सुनिसुरडरलभ ललितगतिलीन यतनविन १८

पा॰ ।४। टीका। ऐसे यद्यपि पिताने बहुतनहीं समझाया

तद्यपि बालकने भोजननहींपाया कहताहै कि हे भ

गवान मेरेको छोड़कर आप अकेलेहीं चलेजातेहैं

इसलिये मे भोजननहीं पावताहूं इनकेसाथ खेल

ने कोजाऊंगा ऐसे कथन करताही बालक ततकाल

वणके मारगको धायचला तवपिता देखकर वडे

अचरजको प्रापतहोयगया और बालकको उन

मनमा विचारकर हृदयमे वडी चिंता करनेलगा

१९ भ० १८ तवदीनवंधु भगवान स्वपनेमै कहनेलगे किमै
ने तमको प्रथमही समझायदाथोहै जोइसवाल
कको पहिलेभोजन जिमायकर पीछे मेरेको नैव
दलगाया करो इसप्रकार स्वपनेमै दीनानाथकी
आज्ञापायकर तवतै हृदयका सवसंदेह त्यागक
र वालकको हरषपूर्वक भगवान कृपानिधानने
प्रथमही भोजनजिमावतेरहे प्रेमसेगोविंद वाल
कजोथा सो अपने वालपनसे लेकर हजीप्रयंत १८

इस परमात्माकी भक्तीमेंही लीनरहा और गृह
स्थधरममैंरचकर रात्रीदिनप्रीती सनमानसे भ
गवानका भजन सेवन करता और सरवमनो
र्थोंकेसहित अनेकभोग सुखोंकोभोगता इस
भगवानको समरताहूआ अंतकालशरीरको
त्यागकर भक्तीकेप्रसादतें मुनिजोगीजनो औ
र देवताउंको दुरलभजोगती है सोयतनकेवि
ना सहजेंही प्राप्तनकरलैंया ॥ ५ ॥ इतिश्रीभक्तिवि

ताम

५९
भ०
१८

नोदग्रंथे भगवदभक्ती महात्मे सिंहासिंहकृ
ते भाषाटीकायां गोविंद चरित वरणनं नाम
सरगः ॥

18

अथ गुंजामालीचरितं। दोहा। गुंजालीभक्तइकप
रमदेसरहाय। विदतलहाउरग्रामकल उपजेसं
स्तनिश्राय। चौपाई। अतिथनअरतथरमप्रवीना।
हसमरोजचरनमनलीना। सतडमतासपक
हितकारी। अकस्मातमरतलीनउपारी। पुत्रशोक
दाहणउरमानी। मिथ्यामदनदारविनमानी। भ
योविरक्तभक्तिअनुरागा। कीनसकलसंपतिज
गभागा। एकभागनिजवियकरकीना। हूसरप

१८
भ०
२

प्रतिपत्तनिकस्ष्टीना। भाषेणाइच्छतवलेह्मसजाना।
मैमयुनानिजकरहुंपपाना। प्रतिपत्तनि नववच
नउचाग। इहवितजनकदेनतुखभागा। चाछतवि
विपभोगाग्रभिरामा। तोकरमहिनतानकछुका
मा। प्राणनाथविनुभूलिसमाना। मोरेहोतजनक
पनभाना। असविचारिसुखसकलविभंगा। च
लहुंनातमयुगानववसंगा। सेवहूंह्मजानिपित
नोही। इहनअनवितनातकछुमोही। असस्तनि

तियहिं सकलबिनदीना। छत्रपतनिजनभक्तप्रवी
ना। सानकुलमपुरागुरिध्यावा। देवभवनइकदेखि
सुहावा। तहिंसामीपबिरचनकुटीरा। लगेपानिवा
सकरनमतिधीरा। तासभवनसभमूरतिजोई।
इजनलखेभक्तिजनसोई। सुमतिसुनखोनासव
उभागी। पितसमान सेवनअनुरागी। ब्रह्मचर्यप
रपरमप्रवीना। मूरतिदेवयजनमनलीना। जव
जवप्रभहिंभवनसभजाई। सादिरसुविवेवेदल

१०८ गाई। होहिंबहिरकलदेतनकवाउन। जानवहुरीन
भ० बभवननिहारन। नवनैवेद न्यूनकछुदेखहिं
२ प्रमप्रकार कौनकनिनलेखहिं। दोहा। देवे
हुभक्तिप्रभाव इहतिनकर भोजनदान। पाव
नतित निजभवन प्रभकृपासिंधु भगवान। १
टीका। पश्चमदेसमे लहाउरनामा ग्रामविषै
एक गंगामाली नामकरके भक्तजगत मे
प्रसिद्धहोतेभये सो कैसे कि बडे धनमान २

औरधरमकी मूरती रात्रीदिन कृष्णभगवानके चर
नकमलोंकी भक्तीसेवामेलीनरहतेथे तिनकेघर
मै वृद्धरूपी एकवडाहितकारी पुत्रहोताभया सो
दैवभावीसे मृत्युमोकालहै तिसनेपकडकर ज
हांसेंउखाडदिया तवपुत्रवियोगका महांकलेश
उरवमानकर सव घरवार धनस्त्रीपरिवारकोमि
थ्याजानकर विरक्तभयाहुआ भक्तउत्तमजोहै सो
अपने संपूर्णधनके दोभागकरदेताभया एकभा

१०८ गतो आपनी स्त्रीको देदिया और हमरा भारा पुत्र
म॰ कीविधवा स्त्रीकोदेदेताभया और कहनेलगा कि
३ तुम इसधनकोलेवो और सखपूर्वक अपनेघर
मेवासकरो मै श्रीमथुराजीमे जायकर हासप
रमात्माकी शरणागतको प्राप्तहोताहूं ऐसे
तिसका वचनसुनकर सो पुत्रकी पतनी हा
थजोडकर कहनेलगी किहेपिता इहधनजो
है सो बडेभारी कलेशोंके देनेवालाहै मैंइनि
३

वीनहींभोगभोगनेचहताहै तातेइसकीमेरेको कु
छअभिलाषानहींहै हेप्राणनाथकेविना मेरेको
माटीकेसमानभासताहै ऐसेविचारकर हेपिता
घरकेसवपदार्थोंका चित्तसेअभावकरके अर्थात
त्यागकरके श्रीमथुराजीको तुमारेसाथहीं चल
चलपड़तीहूं नाथतुमको हृदयज्ञानकरमे सेवाक
रूंगी इहमेरेकोकुछ अयोगनहींहै ऐसेनिम
कन्याका वचन सुनकर प्रसन्नभयाहूआ भक्तसं

१०८ म० ५

सुयोधन अपनी स्त्रीकोदेकर फिरतिस पुत्रीकेस
हित घरको त्यागकर कुसलकुसल स्मरताहुआ
आनंदसे मथुरापुरीमैचलाआया यहांभगवान
का एकपुरानासा मंदरदेखकर और तिसके
पासकुटिया बनायकर रुचीसें निवास करने
लगा तिसभवनके बीचभगवान कृपानिधान
की सुंदरमूरतीजोथी तिसकाआठोदिन प्रीतीभ
क्तीसे भजन करनेलगा औरवे सुमती बडभाग

नकन्या तिसहहको वडीप्रीतीप्रेमसें पितकेस
मानसेवनेलगी और ब्रह्मचर्यमे लीनभईहुई प्र
वीने नित्य भगवानके पूजनसेवन मे प्रीतीभक्ती
वालीहोतीभई। जब जब भगवानके भवनमै
जायकर भक्तीसनमानसें नैवेदलगाती और
फिर भवनकेकवाड देकरबाहरआती तिसतें
उपरांत थोडीदेरकेपीछे जब जायकरके देख
नी तब नैवेद तिसकोकुछ थोडादेखपडताथा

१०७ इसप्रकारवे नित्य ऐसाही प्रदभुत कौतकदेख
भ० नीरहतीथी नाभादासकहतेहैं किहेसंतो देखि
५ ये भक्तीकाप्रभाव किगुंजामाली और तिसकी
कन्याकादियाहुआ भोजन भक्त हितकारी भग
वान आनंदपूर्वक नित्यप्रापने भवनमेपावतेथे १
चौपाई। एकदिवस सिसु निकरसुहाये। तहां
बालक्रीडाहितआये। खेलतसकल परस्परागे
भरिभरिधूलिउडावनलागे। प्रभुमूरतिप्राका ५

दिनहोई। भ्रमरदेविहगनश्रियसोई। किंयोन्दभत
सनवालनतासा। भागेबालमानिउरत्रासा। तव
नैवेदलायभगवाना। ठाफीग्रायवहिरमतिमाना।
वहरिभवनदेखनजवधाये। तेप्रसादपरिभूरएा
पाये। तवगंजासनजानग्रलावा। ग्राजभोगभग
वननहिंपावा। तासनतचिंताजियकीन्हा। तव
नैवेदवहरिधरिदीन्हा। सोनहिंपावजवहिंभगवा
ना। तवगंजाग्रसतासवखाना। पत्रीलेहपाकन

१०८ भं. ६ नपाई मैंअब करहुं यतन दृढपाई। इहपावहिं क
रुणानिधिआसू। हारनहृदयभक्तसंतापू। तेसु
शील सुनिवचनअलापा। तबतनपाव भगवान
नपावा। पितुमैंअधमलेहुंकसपाई। असप्रकार
दृष्यतनिमिखाई। सोलैवेदब्रह्माप्रभुआगे। तब
भगवानभक्तअनुरागे। तिनकर दीन स्वपन
निसिमाहीं। तबखेलत बालक जनकाहीं।
कालि करत त्रिसकार निवारे। सोबालकन्हहि ६

6

भावनग्यारे। नेनकरहिं जवलगइतग्राई। भवनमे

र निजकेलिसुहाई। तोलोमैनपाक कछुकरना।

अससकारजवभगावनवरना। गंजाउठोपरमहू

रषाई। मातिरभवनदैवनिजग्राई। नेनवदनअस

विनयउचारी। ग्रातकालइतभक्तउवारी। ग्रायक

रहिं प्रभुमानसभाई। धूलिकेलानिजरुचिरसुहाई

अवहलेहूपाकप्रभुपाई। हवनधूलिभक्तसव

दाई। भक्तविनय असमननरसाला। दीनवंधुप्र

मुदीनकृपाला। यथानित्यनिजभोगसुहावा। कृपा
सिंधुरुचिलीनसिपावा। दोहा। हरषेदेखत भक्त
जगनिजभगवनअसनेहु। लागेनिरखनलरटन
मावप्रभुगुणगणगुणगेहु।२। टीका। नवएक
दिन सुंदर बालकजोथे सो मिलकरके खेलनेके
लिये तहांभगवानके भवनमेचलेआये औरआवते
ही परस्परवडे उमंगसे सुखीभए औरकर धूतीउठावनेल
गे सोतिनकीउठाईहुईधूतीसे भगवानकृपानिधानकीमूर्ती

आछादिन होयगाई अर्थात पृथीमे सब भयगाई तब
वे कन्या कृपासिंधुपर पृथी पडी हुई देखकर तिन
बालकोंका बडा विसकार करती भई और वे भय
के मारे भागकर सब अपने अपने घरको चले
आये तब कन्या भगवानको नैवेद लगाकर वा
हिर चली आई जब थोडी बेरके पीछे नियम अनु
सार जायकरके देखने लगी तब दीनबंधूके आ
गे नैवेद न्योंकान्यों वैसेही धराहुआ है दीनदयाल

१०८ भ० ८ नेकुछभीनहींपाया इस प्रकारिलको देखकरवे
बालकी गुंजामाली सें जायकर कहनेलगी
कि पिताजी आजभगवानने भोजननहींपाया
है तब गुंजामाली सुनकरके चिंताकेवशभया
हुआ जायकर भगवानके आगे फिर नैवेद्य
रदेताभया जबकृपानिधानने फिरभी नहींपा
या तब गुंजाभक्त कन्याकोकहनेलगा कि पुत्री
तें भोजनपायले मैं इसबारताका यत्ननकरता ८

हे इष्ट भक्तोंके हृदयका संतापहरकरनेवाले भग
वान कृपानिधान आपहीं भोजन न पावेंगे तबवे स
खीले स्तनकरके कहनेलगी किहेपिता नातो भोज
न तुमनेपाया औरनाभगवानने पाया मै अकेली
अभागन कैसेपायलेऊं इस प्रकार तिनको भूखे
प्यासेही रात्रपडगई औरवे नैवेदभगवानके आगे
ज्योंकात्योंहीधरारहा तब भक्तोंकी रक्षाकरनेवाले
प्रभु रात्रीके समय तिनको स्वपनेमे कथनकरने

१८ लगे कितमने काल मेरे भवनमे खेलने हुये वाल
भ कोंको ग्रत्येन त्रिसप्रकार करकार निकालदियाहै और
४ खवालक मेरेको ग्रनसे करके प्राणोंसेभी प्यारे हैं
जवलगवे वालक मेरे भवनमे ग्रायकर ग्रापना
हासविलास वाललीला ग्रौर वालचरित्र नहीं
करेंगे नवलग मैं कदाचित भोजन नहीं पाऊंगा इ
सप्रकार जव कृपासिंधुने कथनकिया तब हरष
मे ग्रत्यागाहहुग्रा गुंजामाली वडीप्रीतीसनमानसे ४

भगवानके भवन मै आयकर हाथजोड़कर नंम्रवा
णीसें विनतीकरनेलगा किहे भक्तसहायक हेदी
नसुखदायक प्रभू अवधातकालहोते ईहांतुमा
देभवनमै बालकमोहैं सो आयकरके अवधपथ
रीउठाय उठायकर आनंदरूवीमे खेलविलासकरै
गे दीनानाथ अवनम कृपाकरके इहधृडीमें हुव
नभयाहूआ भोजनजोहै सो पायलेवो ऐसेभक्त
का कथन सुनकर दीनवंधू और दीनहितकारी

१०७ भगवान जैसें श्रीजीकवीसे [illegible] नित नैवेद पावते
भ० थे तैसेंही पायले तेभये इसप्रकार राणाने प्रभूकीकृ
१० पा और मनेरथ लेकर रवच प्रेममें मगण भये हृदये
10 ते भक्त वत्सल करतार भगवान कृपानिधानके
गुणगणोंमैं सो अनेकप्रकार सुखसे गायनक
रनेलगे ।१२॥ इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवत्प्रे
मी मसानमें भाषाटीकायां गुंजामाली चरित
मीहांसिंहकृत वरणने नाम सरगः । १०

अथ गणेश देवी चरित्रं। दोहा। अब गणेश देवी
विदित भक्त भूप इक रानी। तासु भक्ति सतन धरम
कछु कहूं कथन सुभवानि। चौपाई। देवि वंस
नै वैष्णव सनमाना। सेवत जानि भक्त भगवाना
एक दिवस उठ छात न काहू। कपट भेष वैष्णव ध
रि नाहू। आय नगर तनहि भक्त महाना। वर्णन
काहू मरम न तउ जाना। भये भूप सनमुख सन
मानी। संतन्ह करत कपट नहिं जानी। साधु मत

१८ ललवितन्नमगुणगाम्ह । नहिपर करतअयोविका
भ. म्ह । नवग्रोवेम संतागुरद्दीन्ना । भक्तिश्रोतिमहिषी
१ मनलीना । लागीकननकविरसिवकाई । रतिप्रती
नदिनदिनमरसाई । एकदिवम महिषीकरगे
ह्ना । कियोगवनधरनमगनेह्ना । रह्योभवनतिं प ज
कलिरानी । अधमनीकउरअवसरजानी । छुटि
कालेन श्रुरवनजाई । दियोविदाप्ति जंचतित्य
राई । कर्होकरत चित भूषण तोरे ॥ ॐ ॥

देह्रदिखायवेग जफमोरे। नवध्यनि रुथरजंवन्दप
रानी। चल्योप्रवाहजायजिमिपानी। देखिमंदद्यासि
नडुतभागा। अवनवचहृथीरनउरत्यागा। नवमहि
षीमत्तालनकीना। चाउमयमनवायिपटदीना। नो
लोआयमूपवउभागे। मिजाहफहोनजवलागे।
श्रोणनदेखि उपजसंदेह। मकनहेनकवनप्रिय
एह्र। स्तमनिप्रवीनथरणपनिरानी। भमनवचन
प्रस मरमउरानी। पनिवरमकाकेशिमहिजानी

१९८ करहस्पर्शप्राजजननिपानी। भूपसुनत असवलोमसि
भं० धारी। चलेवृदिवस मदनवशभारी। आवासदनता
२ सस्रवमानी। जंघजाउवशपीडतवानी नासहेदेषि
असमृक्षछतनाई। नवमहिषीअसकथासुनाई। सोप
तिमहंभागवतसंता। इतविलोकिमुहिसदनइकं
ता। छुरिकाहनन जाउ असकीना। चल्योभागिजव
श्रोणनवीना। कसनभन्योनवभूपतिकाह्रा। सव
हिंदेतपरिपावकदाह्रा। दोहा। सोपुजानितहिया २

एपतिमेरहंउनवचीन। तस्मोदीनउखलीनवग्र
महिषिकछन अमकीन। मनतमुपयअसभक्तिज
त ववनदयारमपाग। साधुमाधुभनिवदननिज
विविधमराहनलाग। जेनरअनहितदेखिअस
करहिंकविरहितआय। तेसंस्वतनिनरधन्यातिन
धन्यजनमजगपाय। असतिमकंटिकराजनिज
भोगनदेपतिदोय। भरतवनभक्तिप्रमादतें जिय
नमकुजगहोय॥१॥ टीका। अवगणेस देवीनाम

१८ करके एकराजा भक्तकी राणीजो प्रसिद्धथी तिसकी
भ॰ भक्तीकी मनोहर गाथाजोहै सो कछ्क संक्षेप कर
३ के गायन करताहूं सो राणी अपने नगरमे अति
थी संतवैस्नव आये हूये देखकर और भगवान
के भक्तजानकर वडीभक्ती मनमानसे तिनका
पूजन सेवन करतीरहतीथी तवएक समय को
ईदुष्ट आत्मा वैस्नव संतका कपट भेषधारेहूये त
होराणीजीके नगरमे आय प्रापत भया ।

तिसमंदके कपट भेषको कोईभी जान नहींसका
महांभक्तबनाहुआ सबसेपूजन सेवन करवावने
लगा होतेहोतेराजाके आगेभी तिसकीमान प्र
तिष्ठावढ़जातीभई प्रजापालवडेसूधे सुभाववा
ले सरल और साधुचित्तथे तिसकी कपटकीभ
रीहुई वाणीकोकुछ्नहीं जानतेभये भगवान
भक्त जानकर तिसपर भलीप्रकार विश्वासक
रलिया और प्रथमको अंतःपुर अर्थात भीतर

१८ भवनोमे जानेकी आज्ञाभीदेदेई जवतिसका भी
म तरप्रवेशहोयगया तवराणीजोथी सो प्रीतीभक्ती
४ से प्रणामकरकर तिसकी हृदविश्वाससे दिन
दिन अधिकतें अधिकहीं सिवकाई करनेलगी
तव एकदिनवे पापकीखानी धूरतराणीके ऊ
परजोगया तहांतिसको अकेली देखकर औ
रसमयपायकर छुरीनिकाल करके शास्त्रकेस
मानकोपसे मारकर राणीकीजंघकोघायल ४

करदेताभया और नैसेही क्रूरवचनोंसे कहनेलगा
किकहो जफ्फनेराधन और भूषणसब कहांहैं मेरे
को देगावताय दे नहींतोतेरेको अवीजानसेमारडा
लूंगा इतनेमैंराणीकी जंघेसे रुधर जोछूटपड़ाता
ऐसे प्रतीत हुयाकि जैसे जलकाप्रवाह छूटाव
लाजाताहै तिसकोदेखकर प्रथमभयके वशथर
थर कांपनेलगा कि अवनहीं बचताहूं ऐसेधी
रजसेरहित व्याकुलभयाहूआ तहांसे तरतभा

१८ गाकरखलायाया नखपीके राणीने तिस जंघकेघाउ
भ० को भलीप्रकार धोयकर पट्टीसे दृढकरकेबांध
५ दिया इतनेमें नखरोंवरभागी राजाभीआयगये औ
र सेनापरविराजनेलगे नखरूपधरजोदेखपड़ाति
सतें भ्रमकेवश होयकर पूछनेलगे किहेप्यारी
इसकौनकारणहै औसेराजाकावचन सुनकर
वे परमचतुर राणीजोथी सो भेदको छिपायक
र कोमलवाणीसें कहनेलगी किहेप्राणनाथ ५

मैं आज पुष्पवती अर्थात रितवंती होय रही हूं इस
ने आपके साथ स्पर्श मतकरियै नवराजा स्नान
करके पीछेही फिरकर बाहरको चलागया वो
थेदिन फिर विहारकी इच्छासें हृदयमें आनंदमा
नकर राणीके घरमें चला आया तहांसंचके थोडे
से राणीको उदासीदेखकर पूछनेलगा कि प्यारी
इसको नकारन है नवराणीने प्रकट करके स
बहाल सुनायदिया कि हे प्राणपती सो मस्रा

१८ नमोभगवानका संतभक्तजोथा तिसने आवतेही
भ० ईश्वरसे मेरेको अकेली देखकर धनभूषणोंके
६ लालचसे ततकालही छुरीमार करके मेरीजेठ
को इहयाउजोहै सो करदिया और जब इसने ह
धरकाप्रवार हूलाहुआदेखा तबभयसे आकुल
होयकरके भागताहुआ घरकोत्यागकरकहीं
बाहरकोचलागया असे राणीकावचन सुनकर
राजाकहनेलगा कि अरेपापी मैनेतिससमयमे

वैको कौं नहीं खबरकरी किसै प्रथमकोप कउ
कर अगनीमै दगाय करायदेना राणीकहनेल
गी किसअणनाथ आपसनमकरके प्रेमासीदंडदे
वे इसीनें मैं तिसको साधुजानकर और तमारा
औरदंड विचारकर कुछ नहीकहा त्यागदिया
और अपनेंही शरीरपर इहउ विकलेशजोहै सो
सहारलियाहै इसप्रकार दयारसके भीगेहुये
राणीके वचन सुनकर और तिसकी सतभक्ती

१८ भ० विचारकर साधुसाधु उच्चारकर्कें राजावीरवाहुशाला
त्या वडाईकरनें लगजाताभया औरफिरकहताहै कि
जो किसीका अनहतदेखकर तिसकेसाथ हितक
रताहै वेपुरष संसारमैधन्यहै औरतिसकाजनम
जगतमै शलाघाके योग्यहै इसप्रकारराजा औरव
राणीदोनो अपनातिस कंटिकराजभोगतेहुये भ
गवानकी भक्तीके प्रसादतें संसारमै जीवनमुक्तपद
जोहै तिसकोप्राप्तहोयगये।।। इतिगणेशदेवीचरित्रे

अथनरवाहनचरितं।दोहा।अवनरवाहन भक्तक
र भक्तिमहातमचाह।मैकरहौं संक्षिपतकछु भन
नवदनमनहाह।चौपाई।ग्रंनरवैथिललितमनभा
वा।देसविदतजेलोगनगावा।तहांकविरंमयइक
राहा।भूमीनामग्राम ग्रुसकाहा।तामधवसहिंभक्त
इकचाह।कमलचरन पंकजउरथाह।अतिथिसंत
सेवन अनुरागी।विषयविकार मारमदत्यागी।
वनकमसिरवबिठलथनवारा।हरिमहाजकरतव्या

१९
भ
पाता। एक समय लंठिक बलवाना। कोपित धाय
नाम्हजल नाना। धन बसन्त परि मूरन मसारी। लूट
लियो रिपु वदन प्रचारी। नरवाहन कर चरन वंधाई
व्हेलोलेत सब लंठिकराई। निजगति देखि अमलवड
भागा। हलकल मचव समरण लागा। तहां वि
यत लछत असतामा। गयो जगल नव दिवस वि
तामा। तब लंठिक रकदा भिरहागा। तास हृदय उ
पजी आनि दाया। धन न दैन हित लपन महाई। तहि

यैं मानि सकुच उर आई। मातु देखि मंजुल अस बा
नी। नाह कृपा करि वदन वखानी। इहलें विक
सेवक हित काहू। मोहिं संत नहरि वंस उराहू। तो
ते तव दीरघ स्वर संगा। श्रीराधावल्लभ ङ्क खभंगा
वारवार अस रट्हु सनाई। मोइ हक्कैहिं कवन
तव माई। अवत समनहु निउर करन्नाई। मैसेव
क हरि देसगुसाई। तेहि निकवहिं विविध कृत
काना। दैहिं तमाव गृहित धनमाना। तवनर

१०९ भ० २ वाहन समय विचारी। रह्यो भवन दासी हितकारी
स्वन तनास सख्यो अनुराई। दियो शिषा हरि वंस
सनाई। तरतनास चरनन सिरनावा। निज अनु
चित सब तन माकरावा। सुख्यत भक्ति सो निज नना
मा। सोवित दीन विविध मन माना। प्रकट न कर
हु काहू सन जाई। बारबार अस विनय अलाई।
नवन रव वाहन विविध प्रकारा। तासु प्रबोध हृदय न
उरचारा। करि करि महा भागवत कीना। उरम

निहरत समति सभदीना। हाेत विदा पचले निज
धामा। अस नरवाहन भक्त अकामा। दोहा। पर
हित मेचत संतजन लेग कादिज गनार। समरत कृ
स कृपायतन भयोजलधभवपार।। १ टीका। अ
व नरवाहन भक्त की भक्ती का सुंदर महात्म जो है
सो संक्षेप करके कुछ गायन करता है अंतरवेधी
देस जो लोगों मे प्रसिद्ध है तहां भूमी नामा बडे रम
णीक ग्राम विषे एक हल भगवान के चरन कम

१९ लोंकी भक्तीवाला और अन्यथी साधसंतोका सेवक
भ० कामक्रोध मोहमद इत्यादि विकारोंसे वरजित न
३ रवाहन नामकरके जातीका वैस भक्त उजागर
होताभया कैसा भी धन संपतीवाला था कि सदा
जहाजों मे ही व्यापार करता था एक समय तिस
के ऐसे धनके भरे हूये जहाजको एक महाबल
वान लौकिक अर्थात लूटेरा आयकरके जोरावरी
से लूटकर लेगया और नरवाहनके भी हाथपांउं ३

बांधेहुये वैरीकरके साथही लेचला तब अपनी
ऐसी दुरदशादेखकर भक्तसहनेजोथा सोहृदयमै
कृष्णभगवानका स्मरण करनेलगा जबभूख
प्यासेतिसभक्तको तहां दोदिनवतीतहोयगये
तब लुंठिककी एकदासीजोथी तिसके हृदयमै
दयाने आयप्रवेशकिया सो कुछसकुचती डरती
हुई लुपतहोयकरके नरवाहन भक्तको अन्न
देनेकेलिये चलीआई तब साधूजानकरके कृपा

१९ म ४

बनीवनी कोमल वाणीसे कहने लगी किहे भक्त
रहलं टिके जो है सो मनवचन कायाकरके हरवं
सजीका शिष्य है सो जगतमे बडे संतमहात्मा औ
र ज्ञानध्यानकी मूरती प्रसिद्ध हैं तौ ते अवतं व
डीदीरघका लंबी ऊंची स्वरके साथ सर्वकले
शोंके हरनेवाले श्रीराधाकृष्णके पवित्र नामको
मुखसे वारवार उच्चारणकर ऐसें तेरेमुखसे
श्रीराधावल्लभजीके नामको सुनकर सो अब

४

प्रपंच कैसा कि हे भाई तूं कौन है तब तूने अभय
होय कर कहि देना कि मैं हरिवंस गुसांई जी का शि
ष्य हूं इस प्रकार सुनने से ही वे तुमारा अंत से कर के
आदर सतकार करेगा और लूटा हुआ धन भी स
ब फेर कर के तुम को दे देवेगा ऐसे निसदासी को
बडी हिमत की भरी हुई सुभवाणी सुन कर के न
रवाहन भक्त ने तैसे ही उसी स्वर से राधावल्लभ
राधावल्लभ शब्द को उच्चारण किया और जब

१०४ तिसनेपूछा तबसेनानायकिया किसै हरिवंसगुसा
सं० ईंजीकाशिष्यहुं इसप्रकार सुननेही तिसलेविक
५ ने आपकरहीनभाबसे चरनोपर सैनानायकके
आपना अपराधजोथा सो छमाकरवाया तिसते
उपरांत फिर भलीप्रकार सब बृतांत पूछकरवे
धन असबाबजो लुटाहूआथा सो सनमान पू
र्वक प्रणामकरके सबफेरदिया और नंम्रबाणी
से बारंबार एही प्रार्थनाकरी कि महाराज ।

इह्मेवा अपराधकसीसे प्रकटनहीं करना तवन
र वाहनभक्त अत्यंत प्रसन्नहोयगाये ततकालंही
हृदयकी दुरमती और दुष्टताई के नासकरनेवा
ला संदर उपदेशकरकर तिसको उत्तम तत्वध्या
न और समनीके सहित परम भक्तजोहै सोवना
यदिया तिसतें उपसंतविराग होकर आनंदसे
अपने घरकोचले आये औसे नरवाहन भक्त प
रहितमे प्रवीन और संतजनों की सेवाभक्तीवा

१९ भ. ६

ले जगतमें लंकिकादि महां पापियोंको तारकर आपभीकृतस परमात्मा को भजनेहूये इसमहां विशाल संसारसमुद्रको तरकर यतनके विना सहजेहीं पारहोजातेभये ।।१।। इतिभक्तविनोदग्रंथे भगवद्भक्ति महात्मे भाषाटीकायां नरवाहन चरित वरणनं नाम सरगाः ८ ।

मीहांसिंहकृत

६

अथगोपालचरित्रं । दोहा । जोवनेरपुरविदत इकभ
क्तदासगोपाल । तासभक्तिसंतनकछु वरनहुंवद
नरसाल । चौपाई । ग्रहस्थधरमरत सदगुणलीना
पैविरक्तवनभक्तसधीरा । सर्वनामसंबसवरकोई ।
काननक्तसभजनरवरहोई । विचरनलगयोभक्तिम
नलीना । नवग्रमविपुनग्रवणनहिकीना । वंस
मोरगोपालसहावा । काहुविरक्तभक्तउपजावा
श्रीदाकरनहेतग्रनुरागा । ग्रावाद्वारनामसवउभा

११॰ भ॰ १ गा। निजवंशअरुगोपालनजाना। कछुमामानकी
नसनमाना। भन्योवडोविवदनव्रतधारी। चल
हौसदनमोर हितकारी। दोवैडुंतिय नवदनव्र
नमोरे। चलहौंभक्तसदनकसतोरे। नवगोपाल
भन्योकरजोरे। वियसवरोहिलपतइकवोरे। अ
सकहितासुसदननिजलावा। अकस्माततियद
रसनपावा। भामतिवदनदेविजवलीना। दासत
कोपतासउरकीना। दासतकोपतासउरकीना।

व

धरनचपेटँदनतहिमारा । मूफ्कीनवनभंगाहू

मारा । नवगोपालहरषउरमानी । वोल्योवदन

मनोहरवानी । इहिकपोलकरभागमहाना । जो

प्रवकरहुसफलप्रभुआना । तोतववदासनतहिंन

संदेहू । हेहिकृतावद्यमंस्वानिपहू । जहितिय

प्रभुकहंवृवनदिखाना । तासदेंउप्रवदेहुमहाना

अलनिवंदभवबनलविनमता । वहउसंततनिजहृ

दयकलमात्रबोल्योतियाकहूंदंउनजोगू । प्रभन

१९० भ० २

सकरहिं सज्जन सबलोगू। दोहा। तुमहुं अदोष
नदोष कछुमैं श्रवणनजसकीन। तुमदेख्योतुम
रेविदत कुसल चरनरतिलीन। मैंश्रावप्रीता कर
न मिट्योसकलसंदेहु। जहिमारोमदमदनम
न जीतिलियेजगतेहु। इहभक्तीमारगाविघन
जिमिकंटकडरबदाई। असभाषत सबसीस
नवावले परस्परनाई।।१।। टीका। जोबनेरनामा
नगरमें एक गोपालदास नामकरके भक्त

जागरहोतेभये अव तिनकीभक्तीकी मनोहरगा
था जोहै सोसंक्षेप करके कुछ गायन करताहूं
कैसे श्री गोपाल भक्त कि गृहस्थ धरममैं प्रवीन
गुणोंके समुद्र संपूर्ण विषयविकारोंसे विरक्त
ज्ञानध्यान की निधीहोतेभये तिनकेवंसमैं पूर्व
एकभगवानके भक्त उतपन्नहूये सोकुलपर
मात्माके भजन स्मरणके निमित्त विरक्तभये
हूये वणमैंहीं विचरते रहतेथे एकदिनतिनोंने

११. भ. २ श्रवणकिया अर्थात सुनाकि हमारे वंसमैएक
गोपालनामकरके भगवानके बडे दृढभक्तउ
त्पन्नभयेहैं तवमीवालेनेकी इछासे वडेदृढ
प्रेममै मगणभयेहूये वेसंत गोपाल भक्तजीके
द्वारपर आय प्रापतभये गोपालजीने तिनको
नहीं पहिचाना और नाअपने बांधवजाना तिन
काकुछ मामानहीं आदर सतकारकिया फिरक
हनेलगे किहेसंतो कृपाकरिये भीतर घरमे चलिये २

तब वे भक्त कहने भये कि हम तो स्त्री का मुख नहीं
देखते हमारे घर में स्त्रियों के बीच किस प्रकार
जाय सकेंगे तब गोपालजी हाथ जोड़ कर कह
ने लगे कि महाराज स्त्री सब एक पास में लपट
होय कर बैठी हैं आप आनंद पूर्वक चलिये घ
र में कथम कर कर तिनको घर मैं जो ले आये
तो अकस्मात नहीं एक स्त्री सन्मुख आय गई
तिसका मुख देखने ही से संत महात्मा को पाप में

११ लालनेत्र किये हृये गोपाल भक्तके गालपर जोर
भ॰ से चपेट मारकर कहनेलगे कि अरे असत्यका
५ दी मूढ तैने हमारा व्रत भंग करदिया है तब गो
पालजी प्रसन्न होयकर बडी सुंदर वाणीसे क
हनेलगे कि हे कृपानिधान इस मेरे कपोलके
बडे उदयभाग पहुंचे हैं कि जिसपर प्रभु तुमारे हाथ
का सपर्श भया है अब कदाचित जो कृपाकरके
मेरे दूसरे कपोलको भी सफल कीजिये अर्थात
५

तैसेहीं इसपर भी चपेटमारिये तोहीनानाथ संसा
रमै मेरेकृतार्थ होनेमे कौनसंदेहहै प्रभुमे सर्व
प्रकारकरके सफलहोयगयाहूं औरहेदयानि
धी जिसलीने सनमुख होयकर आपको मस्तकि
लगायाहै जिसको प्रभु आपने हाथसे दंडदीजियेऔ
रे गोपालजीका निरदंभ वचन सुनकर किजि
सको दंभकपट किंचितभी नहीहै संतमहात्मा
परम प्रसन्न होयगये और कहनेलगे किभक्त

११० स्त्रीको दंड देना योग्य नहीं है इससे लोगोंमें बडा अ
भ० पजश और निंदा होती है हे भक्त मैंने भली प्रका
५ र जान लिया है जो तुमारे में कछुदोष नहीं है औ
र मैंने जैसे तुमको सुनायाथा जैसेही इस भ
गवानके चरनकमलोंकी भक्तीमें सावधान
देखलिया है मैंने तो केवल तुमारी प्रीक्षा करनेके
लिये आयाथा परंतु अब तुमारा दरसन करने कर
के हृदयका संसय भ्रम सब मिट गया है हे भक्त
५

कृष्णचरणकी वासनानहींहै जिनमहात्माउरष
ने कामक्रोध मोह मद इत्यादि विषयविकारोंको
जिनने मारदियाहै तिनने सत्यकरके इसंसार
को जीतलियाहै इहविषय विकारजोहैं सो भक्ती
के मारगमें वडे दुखदायक कांटेहैं इसप्रकारवा
र्ता आलापकरकर फिर परस्पर वार वार वंद
ना प्रणामकरके हस्स हस्स भजनेहुये वे संत
वणके मारगको चलेगये और गोपाल भक्त

११ भ. ६

जी अपने आश्रममें बैठकर भगवान कृपानिधा
नका भजन स्मरण करनेलगे ।। १ ।। इतिश्रीभ
क्तिविनोदग्रंथे भगवद भक्ति महातमे भाषा
टीकायां गोपाल चरित वरणनं नाम सर
गः ।।

मीहांसिंहकृत

६

अथ लालाभक्तचरित्रं । दोहा । लालाभक्त प्रसिद्ध
इक मरु देस सुभगाय । तां कर कथा पुनीत मै
करहु कथन सुखदाय । चौपाई । भिक्षाटन करि
संतन सेवा । करत रहत जत भक्ति अभेवा । अस
प्रकार बनत तास धरावा । तब इक भिल काल न गछा
वा । सदन अन्न कछु जब न रहाई । सो संतन कंह
दीन जिमाई । आगाल भिक्षा मिलहिं न काहू । अ
स प्रकार चिंताकुल ताहू । तिय सन भाषत बद

१११
भ॰
१

नउचारी। अवअन निर्वाहिं कवन विधि प्यारी। भा
मति स्वनहु मोर प्रणप्रहा। छुछे नाहिं संत जव
गेहा। नहि दिन देत अनल निज धामा। सबहू
दीवजारि जतन लिलामा। भा मति भयो स्वनहु
पतिमाना। मैं निज रुद्रय पहुं प्रण ठाना। थोंच
लहौं निज देस विहाई। जा रवन नतव सदन वहु
आई। अस प्रकार चिंतन जव कीना। तव भगवान
स्वपन निमि दीना। तवन करहु चिंता मन माहीं।

परम नमार शाखवेकाहीं । ग्रामाधीस प्रातन
वगेहा । आवहिंभक्त विगन संदेहा । महिषी
एक प्रसन सहावा । पंचाशतमण अन्नसहा
वा । तमहिंदेवमानसहरषाई । सोतवभक्तस
ह ग्रामपाई । शाखिसयनन कोष्कलदेना । ले
कुग्रधोमसव जव जव लेना । पैश्रनलन कंकु
तोलनकरना । लेकुग्रधोमसव जव जव लेना
पैश्रनलन कंकु तोलनकरना । महिषीउग

॥ घलेनमहभरना। तिहिमन प्रतिपिमंतनसमुदाई। न
भं० वसाहिंबजनलेहजिमाई। इहुतउभिलदेद्विजनिदर
२ है। सनविवारमनसुजनंकरहो। दोहा। भक्तप्र
नयस सपन निज नियसनहीन सनाय। आवाग्र न
माधवतवलिये लोक समुदाय। महिषी संजत
दीननही अन्नभक्तिसरसाय। सोटंपति निजस
दनसभ राख्योननतनउराय।।१। टीका। मारवा
उदेसविखे एकलाषानाम करके वेश्पासिडम

२

ना होते भये अब तिनको पवित्र और सुखदायक
गाथा जो है सो यथामती कुछ गायन करता हूं
लाखा भक्तजीने कैसा व्रत धारन किया हू आथा।
कि नित्य भिक्षा टिन कर कर बडी प्रीति भक्ती से
अतिथी संत भक्तोंका पूजन सेवन करते थे तब
समय पायकर दैव इच्छा से जगत मे उरभिक्षका
ल अर्थात मंद समय जो था सो आयकर के व्याप
न होय गया तब मे जो अन्न था सो सब अतिथी सं

व

भ० ३ तभक्तों को खवायदिया और आगे तिसमंदसमय
के प्रभावकरके मिलाकही आपननहीं होतीभई ति
सतें चिंताकेवश होयकर लागाभक्त अपनी स्त्री
सों कहनेलगा किहेप्यारी अब हमाराजन किस
प्रकारनिभेगा सुशील मेरातो इहप्रणहै कि जि
सदिन मेरे घरसें संतमहात्मा निरासहोय कर
भूखे चले जावेंगे तिसदिनमें अपने घरको आग
लगायकर वीचहीं जलमरुंगा तब स्त्री कहने

३

लगी कि प्राण नाथ मेरा भी पहीप्रण है अब ईहांनि
रबाह होना बडा कठिन है उचित है कि घरबार को
त्यागकर किसी और देसको चले चलो नहीं तो ई
हां घरके सहित शरीरोंको अवश्य दगाध करना
पडेगा इसप्रकार जब तिनोने हृदेमे चिंतन कि
या तबदीन हितकारी भगवान तिनके कलेश
को जानकर रात्रीके समय स्वपने मे कहने ल
गे कि हे मेरे भक्त तुम अपने हृदय मे कुछ विं

भ· ॥१॥ ४

तामतकरो तमाराधरम और प्रणराखनेकेलिये मेरी इच्छासे ग्रामाधीस अर्थात ईहांकाहाकमसो ताकाल होनेही तमारे घरमे आयप्रापतहोवे गा एकसईहईमेहैस और पांचसौमण अन्न इह त्याग करके वडेहरष उतसाहसे तवको देदवे गा सोभक्त तम सनमानसे लेकर अपनी कोठी मे यतनसे पायराखना और जव जव तमको तिस अन्नके लेनेकी इच्छाहो तव तव कोठीकेतो

बैमेनिकालकर लेलेना ऊपरके रसतेमतलेना औ
र भक्त अतलनहींलेना कुछतोलतनहीलेना कु
छतोलनन फिर तैसेही मेहमकाहयलेकर तिस
ग्रन्न और हथके साथ वरमें आये हुये अतिथी संत
भक्तोंको भलीप्रकार जिमाय कर त्रिपत करते रहना
समरस उर भिन्नकालको देखकर कदाचित नहीं
डरना और नाश्रपनेचितमे कुछ मरणेका वि
चारकरना इसप्रकार रात्रीके समय स्वपन दे

॥ भ० ५

देखकर भक्त प्रधानने प्राताकाल होतेही इस्तीको
प्रकट करके सबसुनायदिया इनने सैव ग्रामाधी
शजोथा सोलोगोंको साथलियेहुये सबसमाजकेस
हितवहांचलाआया और भक्त उत्तमको देखकर प्र
सन्नभयाहुआवे सैस और अन्नजोथा सो बडे आ
दरसनमानसे सब तिनको देदेताभया लाखोभक्त
जी तिसअन्नकोलेकर कृष्णपरमात्माको समर्प
करके यतन से अपनी कोठीमे पायराखतेभये

चौपाई। यथाप्रबोध कीन भगवाना। तथा भक्त सं
तन सनमाना। कमलसरोज चरन मनलाई। ला
ग्योकरन संत सिवकाई। अस प्रकार उरसमय
बिहान्यो। तब श्री जगननाथ दरसान्यो। चल्यो
करन अष्टांग प्रणामा। संजुत पत्नि भक्त अभि
रामा। अष्टादस बरनाल सुहावन। भक्त प्रवीन
कीन तहँ आवन। तब भगवान सनकजनका
ही। कीन कथन सपने निसिमाही। कमलभ

१११ कपटबेस मोर सहाना। मंजन तरु बिरपनि निजधावा।
भ॰ करि यह कौतुक सिव का सब लाई। बेग लाऊहु मम मन
ह मावजाई। नवरंजिक सादिर हूरबाप। करि सत
कार भवन नहु गिलाये। भक्त देखि बिदर मन भगवा
ना। दंड प्रणाम करत सब माना। जानि सफल
निज जनम सभागा। तहां निवास करन निज ला
गा। पाले सदन भक्त ब्रतधारी। रहीं ललित सुड
सील कुमारी। भई सपानि गृह एक संजोगू। कर ह

हिंदेखिप्रपंचसमसबलोगू।नवकृपालप्रभुभक्तसहै
या।निसिकंहंस्वपनस्वजनकनदैया।लाखोभक्तमो
हियप्रतिप्यारा।मोरकोसमसंपतिधनसारा।इहिक
हुंदेहुबिलमनतजिप्राजू।होहैंसिद्धभक्तसबकाजू
प्रभुसासनस्वजनकअसपावा।लगेनास्वपनदेनस
हावा।लाखोभक्तनंस्वअसकाहा।महिलालस
दरसनप्रभुराहा।नहिंनबिनादिमोरमनकामा
असहरिदरसपायअभिरामा।तेननजहिंहठदै

॥ भं॰ ८ वधुजारी। चलेभक्तनवलगतनहारी। नृपक
हूंदीनस्वपनभगवाना। तोकलियेतनवभक्तसुजा
ना। संजतप्रीतिदेनधनलागा। सोकिमिलेहिंभ
क्तवउभागा। वारवारजनवभूपवखाना। तवहासे
हरिभक्तसमाना। देखिराजुहठविविधप्रकारा।
कीनशृहणकछुभक्तउदारा। प्रावासदनवेगाउत
साहू। प्रथमदीननिजसुताविवाहू। पाछेरसुराज
वनधनगेहा। दावनप्रतिथिसंतजननेहा। लवणे ८

विभक्तकरनहूरषाई। भोजनादिसनमानजिमा
ई। असप्रकारसभसंतनसेवा। करतकरतनहिं वि
भक्तचभेवा। दोहा। भयोहउतवसदिन नकिवि
नु अज्ञासतनिकाय। सभरतनकसकृपायतन
लीन परमपदपाय। २। टीका। तवजिसप्रकार
भगवान कृपानिधाननें प्रबोध कर कर स्वप
नेमें समझायाथा तैसेंही भक्तप्रधान वडी श्री
नीसनमानमें कृतपरमात्माके चरन कमलों

॥ सेवितजोड़कर प्रातिथी संत महात्माकी सेवाभ
भ॰ क्तीजोहै सो करनेलगा इसप्रकार भगवानकी
८ कृपासें वे दुर्भिक्षकाल वतीत होयगया सब
हृदय मै बड़ीरुची अभिलाषारापकर स्त्रीके
सहित भक्तउत्तम श्रीजगननाथ स्वामीकेदर
सन करनेको अष्टांगप्रणाम करताहुआ च
लपड़ा और श्रमसे मारगको काटकर जग
त मै बड़ी शोभावाला और परम स्रष्ट अष्ठा ८

दमनालजोहै तहांआय प्रापतभया तव भक्तहि
तकारी भगवान रात्रीके समय स्वपनेमे अपने
पुजकों को कहतेभये के भाई एक परमव्रतधा
री कुलभक्त अपनी स्त्री के सहित ईहांमेरे न
गरमे आय प्रापतभयाहे तुमप्रातःकाल जाय
कर और तिसको सिवकानो पालकीहे तिसप
र विठायकर प्रीतीसनमानसें ईहां मेरे सनमु
खलेआवो औसे भगवानकी आज्ञापायकर

१११ भं. ५ पूजकजोहैं सो प्रातकालहोतेही जायकर भक्त
प्रधानको स्त्रीके सहित पालकीपर बिठायकर
बडे आदर सतकारसे दीनबंधुके भवनमें लेआ
ये तब भक्तसुजान भगवान कृपानिधानकादि
व्य दरसन पायकर दोनोहाथजोडेहूये दीन भा
वसे दंडवत प्रणामकरताभया और अपनेजन्म
को सफलजानकर आनंदसुखमें मगणभयाहू
आ तहांही निवासकरनेलगा और पीछेभक्तयवीनकेघर
मेंएक ५

कन्याथी तिस शीलताकी निधीको कुमारी हीं क्षो
इकरचलेआयेथे सो समय पायकर वर प्रापती
के योग्य होयरहीथी तिसते लोग सब चरचाकर
कर बडा अपजस करनेथे नवभक्त सनेही भग
वान अपने भक्तका ऐसा अपजसजोथा सो स
हारन हीसके रात्रीके समय एक कोको स्वपनेमे
कहनेलगे कि भाई इहलाखाभक्तजोहै सो मेरेको
अतिहे करके प्याराहै और पीछे इसके घरमे क

॥ भ० १०

न्याकुमारीथी सो अववर प्रापनहोयरहीहै तिसतें
तममेरेकोशमें धन संपतीजोहै सो सब इसको
देदेवो तबधनके प्रसादसे भक्तका सबकारजसि
द्धहोजावेगा इसप्रकार कृपासिंधुकी आज्ञापाय
कर माताकालहोनेही राजकजोथे सोधन ल्या
य करके लाखोभक्तको सनमानसे देनेलगे त
वभक्तउत्तम तिसधनको देखकर नम्रहोयकर
वडीदीनवाणीसे कहनेलगा किहेभक्तो मेताके

वल भगवान कृपानिधानके दरसन करने के
लिये आयाहूं मेरेकोधन संपतीकी कोई अभि
लाषा नहीहै ऐसाअनलतथन भगवानका द
रसन पाये करूंसै इसलिये मेरा धनको का
कहेंगा ऐसे यद्यपि लाषाभक्तने वहुतहीक
हा तद्यपि इनक अपनाहठनहीं छोडतेभये
तवभक्त प्रधान अंनको हारकर प्रणामकरते
हीं लुपनहोय करके चलेगये इसप्रकार ला

१११ खोजीका जानादेखकर भक्त पाल भगवान ख
भ॰ पने मे राजाको वितायदेते भये नवराजाकृपा
११ निधान की आज्ञापायकर जायकरके भक्तसु
खको त्वरतरोकलेताभया फिरभीतो मनमान
से घरमै लायकर नानाप्रकारका धनजोहै
सोदेनेलगा तोभीभ क्त प्रधान नंहीलेते भये
नवराजाने वारवार विनती कर कर वहुतंही
हठकिया तव अंतको हारकरके भक्तउनमेसे ११

कुलयोगसमाधन गृहणकरलिया फिर मनमानस
र्वकविदा होयकर वडे आनंद उतसाहसे अपनेघ
रमै चलेआये तहांआवनेही प्रथम विधी अनुसार
कन्याका विवाहकरादिया तिसतें उपरांत पीछेघ
रमै जोधनरहा सो अतिथी संत भक्तोंको देखकर
सववांटदिया और प्रीतीभक्तीसें सुंदरभोजनजोहैं
सो जिमायदिये इसप्रकार संतभक्तोंकी सेवाभ।
क्तीकरतेकरते जव लाखाभक्तजी वृद्धहोयगाये

॥। नवग्रंनको सुभदिन विचारकर् कुसल कुसल सु
भ० मरतेहूये यतन के विना सहजेंही शरीर को
१२ त्यागकर भक्तीके प्रसादसे परमपदको प्रा
पत हो जातेभये।२। इतिश्रीभक्तविनोद ग्रंथे
भगवदभक्ति महातमे भाषाटीकायां लाघव
वित वर्णनं नाम सरगः

मीहांसिंहकृत

१२

अथ अंगदचरितं । दोहा । अंगदनाम सुभक्त भे रा
ग जनगर जसमान । तिनकर कथा वचित्र कछु कर
हुं कथन सावधान । चौपाई । नहिं सब कछु
नाहिं न जाना । भगवत भक्ति प्रभाव महाना । प
न नित राम गुरु सेवन राती । संतन कुल भक्ति म
दमाती । एकदिवस गुरुवर अभिरामा । आये
हरषि हविरत नहिं धामा । बैठि परस्पर ज्ञान अ
लापा । लागे करन हरन संतापा । नव आवास

रखपतितासा। लखिइकोंनसुनि वचनविलासा
परमकोपनिजमानसठाना। भसोहेष कटुवच
नवखाना। इहआवाकहिकारणगेहा। होतग्या
न कछु हृदय संदेहा। गुरुअसमननतासउर
वानी। गवनेउरदाहणडुखमानी। नेमशील
व्याकुलमनमारे। वैठीजायभवननिजन्यारे। न
वमध्यानकालपतिधामा। आवाकरन हेतवि
स्रामा। तासहरेविहगाइरविनमलीना। परमप्रीति

जत सखनकीना। उपजेोकवनशोकतोहियारी। क
रहुप्रकटनिजवदनउचारी। मैंशत्तिकार करहुनहि
भामा। जहितेमिटहिंखेदनवरामा। तवमामनिम
लवदनउचारा। गुरुग्रपमानकीनतवभारा। पि
तसमान महिमोगुरदेवा। मनवचकरम करहुं
नितसेवा। तमकीन्योलोक चपविवाह। रहेसबसं
तसरलचितसाधू। तिनकरजानि विपुल असम
ह्यानी। मैनिजपत्नी मरणकविठानी। असप्रिया

११२ वचन सुनत तउ खिसमाना । बारबार मानस पछताना ।
भ०
२ कहूननकरहू शोक कुछ प्यारी । गुरुकृपालजि
मिहोहिं सखारी । अबतें करहुं यतन मैं सोई । स
व कर सदा रुचिर हितहोई । तब भामनि मान
स हरषाई । पतिहिं वदन निज वचन अलाई ।
इहजोतव सुत वितमनलावा । पतीजनम निज
वृथा गवावा । तेनहोहिं परलोक सहाई । तोतेले
हु शरण जडराई । लोकपलोक सुजस सुखदैया
२

कठिन काल मम होहिं सहैया। आपति मोरत्री
निरुवितोरे। तोअव वेगबोलि गुरुमोरे। कुल
मंत्र पावन जगजोई। गुरुमुख करहु श्रवणअ
वसोई। कैविरक्त तव भक्त समाना। विचरहु
अभय भूमि पतिमाना। हितजन वचन सुनत
निजबाला। उठोजाग अंगद ततकाला। दोहा।
गुरुकहं सादरबोलिनिज भवन भक्ति सतकाय
भयोकृतारथ रूपजग कुल मंत्र सुभपाय।२।

॥२ भ० ३ टीका। एक अंगद नाम करके राजनगरविषैं भक्त
उजागर होतेभये अब तिनकी सुंदर और सुख
दायक गाथा जोहै सो गायन करताहूं तिसभक्त
को पहिले भगवानकी भक्तीके प्रभावका कुछभी
ज्ञान नहींथा और तिसकी स्त्री जोथी सो अपने गु
रूजीकी सेवामे भली प्रकारलीन और कुसभग
वानकी भक्तीके मदमै रात्रीदिन उनमत्त भई रहती
थी एकदिन तिसके गुरूस्वामीजी बडे आनंदउत्साहसेतहां

तिसके घरमै चले आये तब सेवकनी और गृह
होनो इकांत बैठकर भ्रमभयके हरनेवालीप
रमार ज्ञानविचारकी चरचा जोहै सो करनेल
गे इतनेमै तिसभामनीका महांमूरखपती
जोथा सो आयगया और तिनको इकांत बै
चर ठेहूये परस्परँचा वारता करते देखकर कोप
से लालरंग हो जाताभया और अनहितकेभ
रेहूये बडेरूखे उरवचनोंसे कहनेलगा किइ

११२ हसाधु कौनकारन मेरे घरमें आयाहै इसनें मेरे
भ॰ को कुछ औरही संसयभ्रम होताहै इसप्रकार
४ तिसमूढकी वडीकटुका कडवीवानी सुनकर
गुरुजी हृदय में परम कलेश मानकर तहांसे
उठकरके चलेगये और वेसभी लेभी परम
चिंताके वशभईहुई मनमारेहुये घरमें कहीं
न्यारी जायकर बैठरही जवसमध्यानकालभया
तवतिसदेवीकापती विश्राम करनेकेलिये

घरमैंआया आगे स्त्रीको वडीउदासी और मलीनचि
तदेखकर प्रेमप्रीतीसें कहनेलगा कि हे प्यारी
तेरे चित्तमें ऐसाकौन सोच शोक उतपन्नभया
किजिससेंतूं महादीन और मलीनहुई न्यारीवै
ठरहीहै अपने हृदयकी सत्य सत्य विथा जो है
सो प्रकटकर मै तिसकाअवी उपाय करताहूं
किजिससें तेरे चित्तका क्षोभसव मिटजावे औ
र भी सवका हितभलाई होवे तव भामनीक्षण

११२ करके परम प्रसन्न होयगई और आनंदसे पतीको
भ० कहनेलगी कि हे प्राणनाथ इह तुमने जो धनसे
५ पुत्र इत्यादीकामोह कियाहुआ है और इन्होमेंही
5 मनलगायाहुआ है सो तो पती अपना जनमही ह
थागवाय दियाहै क्योंकि वे परलोकमें सहायक
होनेवाले नहींहैं तिसके विरुद्ध नानाक्लेशोंके
देनेवालेहैं ताते अब भी समयहै दीनोंके दुखह
र करनेवाले जदुनंदन भगवानजो हैं तिनकेचर ५

जोकी शरणको प्राप्तहो तिनकी शरणजोहै सोलो
कपरलोकमै सरवसुखके देनेवाली और कठिन
कालमै सहायता करनेवालीहै अवहे प्राणपतीजो
कदाचित तेरेचित्तमै मेरीप्रीतीहै तोशीघ्रमेरेगु
रुजीको बुलायकर तिनके मुखसे सर्व जगतको
पवित्र करनेवाला हलमंत्रजोहै सो श्रद्धापूर्वक
श्रवणकर और फिर भक्तजनोके समान विरक्त
भयाहुआ जगतमै अभयहोय कर विचर इस

११२
भ०
६

प्रकारहित कीभरीहुई स्त्रीकी वाणीसुनकर अंगद
मानो अज्ञान निद्रामें सोयाहुआ सोया सो ततका
ल जागउठा और भक्ति सनमानसे गुरुजीको उ
रमें बुलायकर तिनतें श्रद्धापूर्वक राममंत्रको
श्रवणकरके जगतमें कृतार्थ रूपहो जाताभया
चौपाई। प्रियप्रसाद सब उरमति खोई। विचरनल
गोभक्ति रतहोई। नामएकआनाबलमाना। सो
नोसबविभूषगणखाना। समयएकरिपुजीतन

हेतू। सुदिन सोधि तजि बलेगेन केत। अंगद कहं
निज संग प्रबीना। गयो लेलत मन हरष प्रलीना।
अरि बिलोकि सेना अति भारी। चले जाम बस स
दन बिसारी। तिनकर नगर लूटि समुदाई। न
पं मचिव हरष जुत आई। अंगद कहं नहि ल
ह मकारा। मिल्यो एक आभरण अपारा। खचत
हेम मणि दिव्य सुहावन। बीच अमोल बज्र म
रसावन। देखि भक्त निश्चय कबिलीना। जग

११२
भ
८

ननाथ अरपण इहकीना। कंचनरतनअनथ
नजेहा। अंगदल्याय लूटिनिजगेहा। तेविभक्त
सेतनकरिदीना। हरिअभनेराखिइकलीना।
नवडरजनन्छितपनिमनजाई। तासमरम स
वदीनजणाई। नाथअमोल अभनेभावा। नहि
राख्योनिज सदन दुरावा। मांगणभूप सुननव
हुवारा। पैनकीन अंगद सुईकारा। जगनना
थ प्रभु अरपण कीना। तांतेसकहूं नछितपन

८

दीना। नवतहिआन सविव सनराई। भाषोनम
हूंयननजनभाई। इहभूषणदेहौमहिआनी।
सववसननर नायकवानी। कौन्पायघपियनन
अपारा। नदपिननाम कीन सुईकारा। दोहा।
नव नरेस नहिभगानिकरं देवित लोभ अलाय
करिमूछित विषदेननहि देहु आभनेलाय। २
टीका। अंगदजोहे सो स्त्रीके प्रमादसे उरमती
आदि हृदयसें सव विकार खोय करके भक्ती

११२ मैं लीनभयाहुआ संसारमैं आनंदपूर्वक विचर
भ. नेलगा तब तिसका एक बड़ा चतुर बलवान
८ औरगुणप्रधान भ्राताजोथा सो राजाकामंत्री
थावे समय पाय करके राजाकी आज्ञा अनुसा
र सुभदिन देखकर और घरको त्यागकरसे
ना समाज सब साथलियेहुये शत्रुके जीतने
को चलपड़ताभया और अंगद भक्त अपनेभ्रा
ताको भी आनंदसे साथहीं लेजाताभया तब
८

आगे शत्रुजो था सो बड़ी प्रबल सेना को आवती
देखकर भयसे थर थर कांपता हुआ घर को
त्यागकर अपने भाई बांधवों के सब समाज के
सहित भागकर किसी दिसा को चला गया न
हाराजा का मंत्री तिनके नगर को भलीप्रकार
लूटकर फिर हरष पूर्वक सब सेना समाज के
सहित अपने राजा के पास चला आया आय
तेही प्रणाम करके शत्रु के भाग जाने और न

॥२ भं. ५

गरमै लूट करनेका हुक्म जो था सो प्रकट कर

के सब सुनायदिया राजा सुनकरके बहुत प्रस

न्न भया तब अंगदको तिस लूटमैसे वस्त्रधन और

कंचन मणियों करके खचित कि जिसके बीच वस्त्र

विशाल और सुंदर दिव्य शीतल गरम होता था एक भूष

ण प्राप्त होता भया तिसको देखकरके भक्त प्रवीन

ने हृदयमै निश्चय कर लिया कि इह भूषण तो मैने ज

गन्नाथस्वामीको अर्पण किया तिसते अनंतर जो धन लायाहै

सो सब अतिथी संत भक्तोंको बांट दिया केवल
वे एकही भूषण भगवानके निमित्तका जो था
सो राखलिया नवइरजन अर्थात उष्ट्रजी लो
ग द्वेषसे जाय करके राजाको कहनेलगे कि
हे प्रजापाल देखिये मंत्रीका भ्राता अंगदजो
है सो कैसा कपटी है किजिसने एक प्रेमा अमो
लभूषण लूटमें प्राप्त किया और छिपायक
रके घरमें राखलिया प्रभू तुमारे मनभावन

११२ त्यागा इस प्रकारसेतिन ग्रंथमोंका कथन सुनक
भ० र राजाने वेभूषण अंगदसे मांगभेजा परंतु ति
१० सनेनहींदिया राजाने यद्यपि वार वार तिसके
लेनेका वहुतसी हठकिया तद्यपि भक्तप्रधान
ने एकनहीं माना कहिभेजा कि राजन इहमै
ने जगन्नाथ स्वामीके अरपण करदियाहूआ
है अव तेरेकोकैसेदेसकताहूं तवराजाहारक
रके अपने मंत्रीको कहनेलगा किहेप्रधान
१०

नेरेभ्राताकेपासवे अमोल भूषणजोहै सो जिस
यतनसे होायसके मेरेको अवश्यलायदे ऐसे
राजाका वचन सुनकर मंत्री ततकाल अपने
अंगदनामाभ्राताके पास जायकर तिस भूष
णकेलेनेको अनेकही यतनकरनाभया परं
तू अंगदने नहींदिया अंतको सो भी हारकर
जा चलाआया तवरांतिस अंगदभक्त की भगनी
अर्थात वहिनको बुलाय कर और धनका

१११ लालच देकर कहने लगा कि हे हितकारनी तै
भ० ऐसे जिस प्रकार होय सके तैसे ही इस अंगदको
११ विष देकर और मूर्छा कर कर तिसके पास वे
अमोल भूषण जो है सो हरकरके मेरे को ल्या
य दे और अपने मनवांछित धनको तू पाय ।
ले ।२। चौपाई । एक त्रिय अति जड मतिहीना
हूंस रभूपलोभवित दीना । अथ मपाय धनला
लच सोई । वाधन उदिनको रनिजहोई । कर विस
११

स्त भोजन विषल्याये। जवलागी निजवीरजिमा
ये। तहिंश्रवव वनहरिहिं सहावा। प्रथमरुचिर
नैवेद्लगावा। पाछेलरपोश्रापुजवपावन। तव
निजभागनीय मनभावन। वोलनलगपो हर
षसरस्ताई। रहीसुनिरत के लिलरकाई। भन्ना
कुमति करि कपट सनेहा। पावहुवीर पाकत
वपहा। गईहर वालनसनवाला। तवश्रंगद
कह वचनरसाला। भगनीमोर रुचिर प्रगप

११२ हा। तहिसन करहु पाक निज गेहा। स्वनत तामसविं।
भ०
१२ ताउर मन्या। इहिसन करहिं पाक विवेकन्या। अस
विचारि रोदन करि लागी। नव बोल्यो अंगद वड भा
गी। तव भगनी रोदन क सठाना। कुमति वदन
नव वचन वखाना। भूप उक्त विन लाल सपाई। सु
हि ते भयो पाप वड भाई। तव भोजन मिष्ट न विष
कीना। सो न करहु अव पाक प्रवीना। अंगद स
नत कीन त्रिसकारा। कियो कपट अस वचन उ

१२

वाना। मैंनैवेद लायभगवाना। जोनहिंपाऊंहोत
अपमाना। असकहिलीनभक्तवरपाया। अभैनैवे
दजानिसुखदाया। हरिप्रसादविषविकटमहाना
भयोसुखदतहिसुधासमाना। अंगअंगाकलकां
तिसुहाई। ताकरजननकूं अचरजविषआई। इहसुने
नक्षितपतसुनिपायो। तुरतसबलभ्यतदीनपठा
यो। तहिसंजन आभर्न अनासा। ल्यावहूपकारि
वेगममपासा। भृतसासन नरनाइकपाये। पक

॥२ रनहेतभक्तहरिआये। दोहा। तबअंगदआभरनज
भ॰ नचल्योल्लपतनजिरोहु। पाछिललागेजातभ्रतव
१३ रणचिन्हलखितेहु।३। टीका। नाभादास कहतेहैं
13 किहेसंतो एकतोमहां जड बुद्धीकीहीन सी हम
रा राजाने धनका लालच देदिया सो अधम ऐसेद्र
व्यके लालचसे तुरत अपने भ्राताके वधकरनेको
अर्थात मारनेको त्यार होयगई तब भोजन मैवि
षमिलायकर आहारकरनेकेलिये अपनेभ्राताअंगदके

आगे ल्याय राखती भई तब अंगद भक्तने प्रथम
भगवान कृपानिधानको नैवेद लगाया औ रापित
पीछे आनंदसे जब आप जेंवने लगा तब तिसब हि
नकी कन्या भानजी जो थी तिसको भोजन खवा
वनेके लिये वडी प्रीती रुचीसे बुलावता भया सो
कन्या बालकोंके साथ कहीं खेलमें परची हुईथी
नहीं आई तब वे पापकी खानी कपटसे कहने
लगी कि हे वीर ते भोजन पायले कन्या क्याजाने

११२ बालकोंके साथ खेलनेको कितनीदूर चलीगईहै
भ. ऐसे तिसका वचन सुनकर अंगद कहनेलगा
१४ किहे भगनी मेरा प्रेमसमणाहै जोमै तिसबालकोंके
14 साथही भोजन पावताहूं तब वे सुणकरके परम
चिंताके वश होयगई और मनमै विचारकरने
लगी कि अब कौन यतन करूं कन्या इसके साथ
हीं विखपान करेगी ऐसे सोचकर मंदमती प
रम कलेशसे रोदन करनेलगी तब देखकरके

अंगदभक्त कहनेलगा किहे भगवती तूं क्यों रो
दन करतीहैं तेरेको कौन ऐसा कलेश प्राप्
त भयाहै इसप्रकार भ्राताकावचन सुनकर मं
दमती कहनेलगी किहेवीर मेरेतें वडा घोर
पाप होय गयाहै क्यों कि राजाने मेरेको धन
का लालच दियाथा मैं तिसकेवश मोहितहो
यगई और महामंद धनजोहै तिसके लोभमें
भ्राताके संबंधको हृदयसे विसारदिया इस

११२ भोजनके बीचबीरनेरेको खवानेके लिये विषमा
भ. य करके ले आईहूं तोते इह मेरा अत्यंत अपराध
१५ है हे आत्मा तू मेरेको अज्ञान मूढमती जानक
र क्षमाकर और इस भोजनको भी अहारमत
कर तब अंगार स्नान करके तिसका बहुत वि
सकार करताभया कि अरे मंदभैने इह कैसा
कपट और अनर्थ कियाहै फिर कहनेलगा
किमैनेतो अब भगवानको नैवेद लगायदिया १५

है और अबजो आपनहीं पावताहै तो अपमान
प्रतीतहोताहै ऐसे कथन करकर भक्तप्रवीनने
भोजनजोथा सो भगवान कृपानिधानका नैवे
द जानकरके रुचीसें पायलिया तबभगवान
की कृपा प्रसादतें महां कठिन और दुखदायक
विषजोथा सो अमृतके समान सहजेंही सुख
दायक होयगया और तिसको विषके आहा
र करतेही अंग अंगमें बडी मनोहरकांती ।

११२ आभाजोहै सो उदय होयजातीभई इहद्भुतोंने अ
भ० वराजाने समणपाद्या नरतही कोपसें अपने से
१९ वक नहांपठाय दिये और तिनकोइह आज्ञादे
ई कि तुमजाय करके शीघ्र तिस भूषणके
सहित अंगदको पकडकरके मेरे सनमुख
लेआवो ऐसेराजाकी आज्ञा पायकर वेसेवक
भक्तप्रधानके पकडनेको धावतेहुये चलेआ
ये तव अंगदभक्त तिनराजाके सेवकोंकोआ १९

वना स्नानकर तुरत तिसभूषणको लेकर और
घरकोत्यागकर लुपत होयकरके निकलचल
ताभया जब राजाके सेवकोंने तहां आयकरके
सुनाकि अगट ईहांसे भागगया तब वेभी तिस
के पकडनेकेलिये चरन चिन्ह देखने अर्थात
खोज लगाते हुये पीछे पीछे हीं लागे चलेआये २
चौपाई। रहे भूपभरन वाजि सवारा। तिनहूंदेखि
अस वदनउचारा। औरमूढ आभने सुहावा। दे

॥२ भं. १८ हुवेगछितपतिमनभावा। ननरहोहिं सवमरण
तमारा। नवअंगदसुनि ववनउचारा। इहतउ
राजे सुनमुखतेमोरे। देहुसनानकरन इतमोरे
पाछेलेहु आभनैभाई। असकहिवारिसुरोवर
जाई। करिसनानमुखकमलउवरना। लीन्होव
हुरिकरन आभरना। प्रकटवदन असववन
सुलावा। इहभूषण भगवान सुहावा। असक
हिवारितउगमकारा। देखनसवनदीनतहि १८

डागा। नव भ्रन भूप लोग समदाई। लगे नाम सग अन्वे
षणआई। आवा भूप सहननननतकाला। डाहलोग्र
नक यतन जतनजाला। यद्यपि सलिल सशोष
णकीना। तद्यपि सोन आभनवीना। नवनिमि
दीनस्वपनभगवाना। नवकस कीन यतनन्दय
नाना। भक्तकीनइहू आरपणमोरे। होहिं भूप
कसपापततोरे। पवपवहृयामरहूकतताई।
कसनजाहू निज भवन पराई। देखि स्वपन अस

११२ भूपसुजाना। उद्योस्नातमानसहरषाना। लिखेसु
भ॰ माजसकलनिजगवना। आवासुमरिकुसनिज
१८ भवना। वोलिसचिवनिजभाषणलागा। तोलोय
18 न्नवारमैनागा। जोलोअंगदभक्तुपवीना। ईहांभवन
आगमननकीना। सचवसुननतयसदीनपठाये। अनुच
रवहरभक्तहितल्याये। तिनहुंजायसंजननसनमाना
कविकारिविनयनेमसुखनाना। अभयदेनहिततपन
पेंल्याये। उठिप्रणामकीनोनरराये। निजअनुचितसवक्षमा
कराई। १८

वन्योतासमेवकसिषराई। दोहा। असप्रकार अंगा
द्भये निर्गुणभक्तभगवान। जासभक्तिहटफेटे
विश्रसरीके कृपानिधान।४। टीका। तवराजाके
सेवकजोथे सो चोउर्येपरसवारथे तिनोनेवेगसें
जाय करके अंगादभक्तको मारगमैरोकलिया
औरकहाकि अरेमूढवे राजाकेमनकोभावता
तेरेपासमुंदर भूषणजोहै सो पीछादेहमकोदे
दे नहीतो मंदतूमारा जावेंगा और तेरीउदरसो

११२ होवेगी। ऐसे तिनका वचन सुनकर अंगद कहने
भ॰ लगा कि भाई सत्य वचन है परंतु इह तुमारे सन
१५ मुख तलाउ जो देख पडता है इसके वीच मेरे को स
नान कर लेने देवो तिसतें उपरांत तुम भूषण जो है
सो लेलेवो ऐसे कथन कर कर तिस सरोवर मै
जाय कर और सनान कर कर् ज्युं ज्युं सुमर
ता हूया तिस भूषण को हाथ मै लेलेता भया औ
र फिर वडी ऊंची स्वर से प्रकट करके कहने लगा १५

किदेखोभाई इन्द्रभूषण तो भगवान जगननाथस्वा
मीकाहै ऐसे सुनायकरके भूषणसबके देखते
तिसतलाउके जलमै डारदिया इसप्रकार देखक
रके राजाकेसेवक और सबलोग आयकरके ति
स भूषणको तलाउमे खोजनेलगे तवइसवार
ताको सुनकरके राजाभी तहांचलाआया और
लोगोंसेजालडलवायकर तिसके निकालने
का बहुतेही यतन हठकिया यद्यपि सरोवरका

११२ जलमी स्वकाया नयपि सो भूषण प्रापत नहीं होता
भ० भया। नवरात्रीके समय भगवान स्वपने मे कहने
२० लगे कि हे राजन तूनेकों इतना यतन किया है
इह भूषण तो अंगदभक्तने मेरे अरपण किया
है अर्थात मेरेको देदिया है अब राजन तेरेकोके
से प्रापत होय सकता है कों वृथाही पच पच मर
ता हैं इससे निरास होयकर अपने घरको कों न
हीं चला जाता इस प्रकार स्वपन देखकर राजाजो
२०

है सो जागड़दा और प्रातःकाल होतेही अपनासमाज साथ लेकर क्रम क्रम स्मरताहुआहर्षपूर्वक घरको चलाआया तहां आवतेही मंत्री अर्थात वजीर को बुलाय कर कहनेलगा कि हे प्रधान मै तबलग अन्नजल कुछभी खानपान नहीं करूगा किजबलग ईहां मेरे घरमै भगवानकाप्यारा भक्त अंगद नहीं आवेगा तब राजाकाहठ सुनकरके मंत्रीजोहै सो भक्त

११२ प्रधानके बुलावनेकेलिये बडे चतुर सेवकोंकोस
भ० म्रुकाय करकेततकाल भेजदेताभया तवसेवक
२१ प्रवीन मंत्रीकी आज्ञा अनुसार अंगदभक्तके पा
सचलेगये और प्रणामकरतेही बडीनेम्र वा
णीसे अनेक प्रकार बिनती बडाई करकर प्री
तीभक्तीसे सनमान पूर्वक साथ करके लेआ
ये जवराजाने अंगदभक्तजीको आवतेदेखात
बउठ करके दीनभावसे कमलसकुं कर आस

२१

नपरविठायलिये फिरहाथ जोड़कर और दीनभा
वसे सनमुख स्थितहोयकर अपना अपराधजो
था सो छमाकरवावताभया तिसतें उपरांत आज्ञा
पूर्वक तिनकाही सेवकवनगया नाभादासक
हतेहैं किहेसंतो इसप्रकार अंगदजी भगवा
नकृपानिधानके परम चतुर भक्त होतेभये
किजिनकी प्रेमीभक्ती और दृढ़ निश्चयदे
खकर कृपासिंधुरीझ करके जगतमे उजा

११२ गर कर देतेभये ।४ ॥ इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे
भ० भगवद्भक्ति महात्मे भाषाटीकायां अंगद
२२ चरितवरणनं नाम सरगः ॥

मीहांसिंहकृत